

ગાગરી લિપિ પત્રા

૧૦

૮. ગુજરાત ૭૫
૨૦૧૬
પણા કુલાંક

૧૩૮
૦૮૮૫-૨૬૦૯-
૧૨-૭



સંપાદક
ડૉ. શેખ સુહુયારો
ડૉ. શેખ મોહસીન




Principal
Shri Asarani Bhambhaniya Kr. Commerce & Science
College, Begam L. Up., Kandivali West, Mumbai - 400 085

अनुक्रमांक

	पृष्ठ.	(15)
1.	देवनागरी लिपि व्यावहारिकता व वैज्ञानिकता डॉ. मधुजैन	19
2.	हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का मानकीकरण डॉ. के संगीता	28
3.	आदर्श लिपि को कसीटी पर देवनागरी लिपि का मूल्यांकन डॉ. हण्डाराव पाटील	31
4.	राष्ट्र लिपि के रूप में देवनागरी लिपि डॉ. सुकून्या मेरी जे.	36
5.	राष्ट्रीय लिपि के रूप में देवनागरी लिपि का महत्व सरिता सुरज थान यादव	46
6.	देवनागरी लिपि : स्थिति और सभावनाएँ डॉ. सुमुगार घंडारे	50
7.	विश्व की प्रमुख लिपि : देवनागरी डॉ. शाहबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख	54
8.	उत्तर पूर्वी राज्यों में लिपि विहिन वैशियों तथा 'पाषाणों' के लिए नामों लिपि सर्वोत्तम हैं- डॉ. जनिता ठक्कर	57
9.	नामों लिपि : बर्तमान परिदृश्य डॉ. अलका गडकी	62
10.	देवनागरी लिपि का महत्व एवं उपयोग डॉ. वंदन याधूराव याधूर	66
11.	उच्चारण लेखन और लिपि का अन्योन्यश्वित संबंध डॉ. शेख सेवाशिरीन	69
12.	देवनागरी लिपि उत्थापिता और विकास प्रा. अर्वना सोनवणे	72
13.	देवनागरी लिपि का इतिहास और महत्वता डॉ. शेख रजिया शहेनाज़	76
14.	देवनागरी लिपि एक आदर्श लिपि प्रा. राजन सुदारकस मूल्या	85
15.	नामों लिपि की वैज्ञानिकता प्रा. डॉ. ऐतुर शब्दीर शेख	89
16.	देवनागरी लिपि : स्थिति एवं गति प्रा. डॉ. जंगले डेट.एम.	94
17.	देवनागरी लिपि : ऐतिहासिक परिवेष्क में प्रा.डॉ. विठ्ठल वर्जीर	99
18.	देवनागरी लिपि का विकासक्रम प्रा. पवार एस.पी.	101
19.	देवनागरी लिपि : विशेषताएँ और मानकीकरण डॉ. संतोष रामचंद्र जड्हे	108
20.	व्राडी लिपि से देवनागरी लिपि का क्रमिक विकास प्रा. डॉ. रमा दुष्पांडे	114
21.	आदर्श लिपि की कसीटी पर देवनागरी लिपि का मूल्यांकन डॉ. शेख अफरोज फातेमा शेखहबीब	123
22.	देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता एवं महत्व प्रा. अदिनाय शाकड	134
23.	वैज्ञानिक लिपि : देवनागरी डॉ. अश्विनीकुमार विंचोलीकर	140
24.	देवनागरी लिपि : विकास एवं विशेषताएँ डॉ. सुभाष इंगले	144
25.	देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता डॉ. चंसत माली	149
26.	गाढ़ीय एकात्मकता और देवनागरी लिपि प्रा.डॉ. नंदगुरवाले	152
27.	देवनागरी लिपि का उद्धरण और विकास प्रा. मुंडकर माधव राजप्पा	156
28.	देवनागरी लिपि का इतिहास डॉ. परमेश्वर निजाराव काकडे	160
29.	देवनागरी लिपि का विकास एवं सुधार की आवश्यकता प्रा. प्रताप भिसाळ	165

मूल्य : छह सौ पचास रुपये मात्र

पुस्तक	:	नागरी लिपि विमर्श
सम्पादक	:	डॉ. शेख मुखल्यार, डॉ. शेख मोहम्मदीन
प्रकाशक	:	पराग प्रकाशन
संस्करण	:	311 सी. विश्व बैंक चर्चा, कानपुर- 208027
आवरण-संज्ञा	:	प्रथम, 2016 ई.
शब्द-संज्ञा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मुद्रक	:	अर्थव्य ग्राफिक्स, जवाहर नगर, कानपुर
मूल्य	:	तीक्ष्ण आफसेट कानपुर
ISBN	:	978-93-82409-19-9

የዚህ ማረጋገጫ ከ ተስፋይ ተስፋይ ተስፋይ ተስፋይ ተስፋይ ተስፋይ ተስፋይ ተስፋይ
ከተማሪያ የዚህ ማረጋገጫ ከ ተስፋይ ተስፋይ ተስፋይ ተስፋይ ተስፋይ ተስፋይ ተስፋይ ተስፋይ

וְעַל-מִזְבֵּחַ תְּמִימָה תְּמִימָה תְּמִימָה
וְעַל-מִזְבֵּחַ תְּמִימָה תְּמִימָה תְּמִימָה

19. מִתְּבָאֵת שֶׁל מִלְּבָדָה בַּת
בַּת בַּת בַּת שֶׁל מִלְּבָדָה בַּת בַּת
בַּת בַּת בַּת בַּת בַּת בַּת בַּת בַּת בַּת

13
בְּנֵי יִשְׂרָאֵל וְבְנֵי יִהוָה אֱלֹהֵינוּ כִּי תַּעֲשֶׂה
בְּנֵי יִשְׂרָאֵל כִּי תַּעֲשֶׂה בְּנֵי יִהוָה אֱלֹהֵינוּ
בְּנֵי יִשְׂרָאֵל כִּי תַּעֲשֶׂה בְּנֵי יִהוָה אֱלֹהֵינוּ

卷之三

- 51 -

ԱՆԳԼԻԱՐԵ ԼԳ ԽՈՎՅ ԸՆԴՀԱՆ

भाषाओं के लिए भी इतका प्रयोग होने लगा।

कुछ विद्वानों का मत है कि यह गुजरात के नागर ब्राह्मणों की लिपि थी। इसके अक्षर तांत्रिक चिन्ह देवनागर के अनुलूप चौकोर हैं। इसलिए इसे देवनागरी कहा जाता है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार मुख्यतः यह नगरों में प्रचलित थी। अतः नागरी कही गई। यह लिपि देवनागर (काशी) में बहुत प्रचलित होने के कारण यह देवनागरी कही गई। नागरी लिपि के अधिकांश अक्षर मध्यमुग्नी स्थापत्य कला की नागर शैली से मिलते-जुलते हैं। अतः इस लिपि को नागरी कहा गया। कुछ विद्वानों का मत है की पाटलिपुत्र को नागर और चंद्रगुप्त द्वितीय को देव कहते हैं। उन्हीं के नाम पर देवनागरी कही गई।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता :

भारत दर्प की प्रथम लिपि होने के कारण देवनागरी को राजलिपि होने का स्तर तंत्रिधान ने प्रदान किया है। महाप्रडित सांकृत्यायन के शब्दों 'देवनागरी उनिया की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है' गांधीजी देवनागरी को राष्ट्रीय की दृष्टि से व्यापक बनाना चाहते थे। महात्मा गांधीजी के विचार भी यहाँ आदरणीय हैं हिंदुस्तान में सर्वमान्य हो सकने वाली अगर कोई लिपि है, तो वह देवनागरी है यदि राष्ट्रीय एकता को तुष्टुक करना है तो वह देवनागरी ही है यदि राष्ट्रीय एकता को तुष्टुक करना है तो पहले देवनागरी लिपि को समृद्ध करना होगा, क्योंकि देवनागरी में ही एकता की क्षमता है।

वास्तव में देवनागरी लिपि राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है। विश्व के अधिकांश भाषावैज्ञानिकों की यह मान्यता है कि देवनागरी संसार की लमस्त वर्तमान लिपियों में अधिक वैज्ञानिक है। प्रशिद्ध भाषाशास्त्री भेनियर विलियम्स का अभिपत्र है कि ज्ञात लिपियों में देवनागरी अत्यधिक पूर्ण विस्तृत और दर्शन से पूर्ण लिपि है।

देवनागरी लिपि सभी लिपियों में श्रेष्ठ है। वास्तव में सभी लिपियों की तुलना में देवनागरी लिपि का महत्व सबसे अधिक है। देवनागरी लिपि संसार की सभी लिपियों में सर्वाधिक वैज्ञानिक एवं आदर्श लिपि के रूप में परिचित है। देवनागरी अंतरराष्ट्रीय लिपि का त्वरण ग्रहण करने में पूर्णतया सक्षम है। देवनागरी में वर्णभाला की वैज्ञानिकता, अक्षरों का सुव्यवस्थित क्रम, क्रम अक्षरों का प्रयोग आदि विशेषताओं से संबंध होने के कारण अंतरराष्ट्रीय लिपि होने का गुन्त विद्यमान।

भारत एवं विश्व की अनेक भाषा को नागरी लिपि में सहजता से लिखा और पढ़ा जा सकता है। वास्तव में अध्ययन-अध्यापन के लिए नागरी बहुत आसान एवं सरल लिपि है।

विनोदाजी ने कहा, 'यदि हम तारे देश के लिए देवनागरी को अपनाऊं तो हमारा देश बहुत मजबूत हो जाएगा। फिर तो देवनागरी ऐसी रक्षा कब्जा सिद्ध हो सकती है जैसी कोई भी नहीं हो सकती है।' देवनागरी लिपि के प्रथार-प्रतार करने वालों में महार्षि

के नाम ब्राह्मणों की लिपि थी। इसके हैं। इसलिए इसे देवनागरी कहा जाता

ह नगरों में प्रचलित थी। अतः नागरी प्रचलित होने के कारण यह देवनागरी युगोन स्थापत्य कला की नाम शीली से हा गया। कुछ विद्वानों का मत है की । कहते थे। उन्हों के नाम पर देवनागरी

ग देवनागरी को राजलिपि होने का स्तर प्राचन के शब्दों 'देवनागरी दुनिया की को राष्ट्रीय की दृष्टि से व्यापक बनाना आदरणीय है हिंदुस्तान में सर्वमान्य हो । है यदि राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करना सुदृढ़ करना है तो पहले देवनागरी लिपि एकता की क्षमता है।¹

ज्ञान की दृष्टि से सर्वथेष्ठ है। विश्व के ह देवनागरी संसार की समस्त वर्तमान इसी भौतिक विलियम्स का अधिकत है वेस्तुत और दर्शन से पूर्ण लिपि है।¹ है। वास्तव में सभी लिपियों की तुलना देवनागरी लिपि संसार की तभी लिपियों में परिचित है। देवनागरी अंतरराष्ट्रीय । देवनागरी में वर्णमाला की वैज्ञानिकता, गोग आदि विशेषताओं से संपत्त होने के न।

नागरी लिपि में तहजता से लिखा और के लिए नागरी बहुत आसान एवं सरल

श के लिए देवनागरी को अपनाओ तो नागरी ऐसी रक्षा कवच सिद्ध हो सकती लिपि के प्रचार-प्रसार करने वालों में महार्य

दयानंद सरस्वती, लोकमान्य तिलक, वी. कृष्ण स्थानी अप्पर ने बहुत प्रवास किये। देश के प्रयम प्रधानमंत्री पांडित जवाहरलाल नेहरू ने भी देवनागरी लिपि को अपनाने की बात रखी थी।

देवनागरी लिपि के संबंध में डॉ. रामप्रकाश सरसेना ने लिखा है 'यदि भारत की सभी भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाएँ तो इसमें देश में मानवात्मक एकता बढ़ेगी और ज्ञान के क्षेत्र में भी संपूर्ण साधारणता होगा।' इसके लाभ टिकट भविष्य में चाहे कम दिखाई दे, पर दीर्घकाल में इसके बहुत लाभ होंगे।

वस्तुतः राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से देवनागरी लिपि की महत्ता निर्विवाद है। सम्पर्क लिपि के रूप में देवनागरी लिपि महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है।

देवनागरी लिपि रोमन एवं फारसी लिपि की तुलना में अधिक वैज्ञानिक है। इस तिथि के गुण अधिक हैं, दोष न्यूनतम हैं। देवनागरी लिपि के वर्ण विभाजन में वैज्ञानिकता है। इस तिथि में 52 वर्ण हैं। स्वर 11 हैं। इसमें अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, औ, ए, ओ, औ आदि स्वर हैं। अनुस्वार 1 है। विसर्ग भी 1 है। इस प्रकार कुल वर्ण 52 स्वीकार किये हैं।

देवनागरी लिपि व्यान्यात्मक लिपि न होकर अक्षरात्मक वा वर्णात्मक लिपि है। देवनागरी लिपि में समग्र ध्वनियों को अंकित करने की क्षमता है। देवनागरी लिपि में उच्चारण में, लेखन में एकलूपता दिखाई देती है। जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। वास्तव में देवनागरी लिपि में Silent अक्षर के लिए कोई स्थान नहीं है। रोमन लिपि में कुछ शब्दों में Silent वर्ण होते हैं। जो लिखे जाते हैं किन्तु बोले नहीं जाते। जैसे-

Knife में k silent है।

Psychology में p silent है।

Knowledge में k.w.d भी silent ध्वनियाँ हैं।

देवनागरी लिपि में लेखन एवं उच्चारण में एकलूपता है। देवनागरी लिपि में प्रत्येक ध्वनि के लिए एक चिन्ह नियत है, जबकि रोमन लिपि में कई विकल्प हैं। जिसके कारण वहाँ वर्तनी की गलतियाँ होती हैं। देवनागरी में क ध्वनि को लिखने के लिए केवल एक ही वर्ण है.... 'क' जबकि रोमन लिपि में यह कई तरह से लिखी जाती है।

जैसे क के लिए c-cat, k-king, Q-Queen, ch-chemistry आदि।

देवनागरी लिपि में प्रत्येक वर्ण का निश्चित उच्चारण है। यह उच्चारण सदैव एक-सा रहता है। उसमें बदल नहीं होता। किंतु रोमन लिपि में एक ही वर्ण अलग-अलग शब्दों में प्रयुक्त होने के कारण उच्चारण भी अलग होता है।

जैसे cat- में c ध्वनि का उच्चारण होता है।

Put- में u ध्वनि का उच्चारण होता है।

देवनागरी लिपि में स्पष्टता होती है। लिखने और बोलने में स्पष्टता के कारण देवनागरी लिपि श्रेष्ठ है। उसके ताथ-ताय मात्राओं के कारण रोपन लिपि की तुलना कम छर्चीली होती है।

देवनागरी लिपि के संबंध में डॉ. चंद्रकान्त पालीयाल ने लिखा है, "नागरी लिपि के माध्यम से विदेशी भाषाओं का अध्ययन बड़ी सरलता से किया जाता है। पहर्ष दयानंद सरस्वती ने कहा था कि मेरेनेम तो वे दिन देखना चाहते हैं कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक और मटक से कटक तक नागरी अक्षरों का ही प्रयोग और प्रचार होगा।

नागरी लिपि के संबंध डॉ. शाहवुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख ने लिखा है नागरी अधारात्मक लिपि है। इसका स्वरूप वैज्ञानिक है। विश्व की सभी भाषाओं की घनियों के उच्चारण एवं लोकन की क्षमता नागरी में निश्चित है। इसमें ऋत्व और दीर्घ में स्पष्ट भेद है। नागरी वर्णमाला परिपूर्ण है। इसमें ऋत्व दीर्घ में स्पष्ट भेद है। नागरी की भाषाएँ स्थान अवश्य धेरती हैं परंतु इसमें उच्चारण में किसी प्रकार के प्रन या आङ्कका का स्थान नहीं रहता। नागरी लिपि में यह शक्ति है कि उसमें लगभग सभी घनियों प्रयुक्त होती हैं। इस लिपि में वर्णों की संख्या काफी बड़ी है। रोपन और अरवी लिपि की अपेक्षा इसमें वर्ण अधिक हैं।

वात्सव में राष्ट्रीय एकता में हिंदी और देवनागरी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। महात्मा गांधी के देवनागरी लिपि को इत दृष्टि से देखा या तथा इस लिपि को अपनाने की यातें भी रखी थीं। विनोदा जी ने भी देवनागरी लिपि की विशेषताओं का समझकर इस लिपि को हिन्दुस्तान के लिए उपयुक्त समझा। उन्होंने नागरी को जोड़ लिपि कहा। उन्होंने कहा कि, हिन्दुस्तान की एकता के लिए हिंदी भाषा जितना काम देगी उससे बहुत ज्यादा मैं चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान की सभी भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाएँ। वे लिपियाँ भी चाहेंगी और देवनागरी भी।

देवनागरी लिपि को आदर्श लिपि माना गया है। यह लिपि उच्चारण दृष्टि से आसान है। इस लिपि में जो बोला जाता है वही लिखा भी जाता है। सरलता से लिखा जाता है जिसके कारण इस लिपि को आदर्श लिपि माना गया है।

डॉ. एन.एस. दशिणामूर्ति ने नागरी लिपि के संबंध में लिखा है... "एक भाषा के लोग दूसरी भाषा को सीखना चाहते हैं तो कभी-कभी लिपि वाधक होती है। भाषा सरल भी हो लिपि के कारण भाषा सीखना कठिन होता है। एक सामान्य लिपि के स्वीकरण के द्वारा इस समस्या का समाधान किया जा सकता है। इस परिप्रेक्ष्य में देवनागरी लिपि की उपयुक्तता स्वयं सिद्ध है।"

उपर्युक्त लघु विवरण से ज्ञात होता है कि उपयुक्तता स्वयंसेव सिद्ध है। संबंध चौली दामन जैसा है। एक-दूसरे के अभाव में दोनों का अस्तित्व न्यूनतम है, अधूरा है। यदि भाषा आसान हो, स्पष्ट हो तो उसकी लिपि भी सरल स्पष्ट होनी चाहिए। जिसमें पाठक आकर्षित हो। इन सब दृष्टियों से नागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है आदर्श

देवनागरी लिपि में स्पष्टता होती है। लिखने और लेने में स्पष्टता के कारण देवनागरी होती है।

देवनागरी लिपि के संबंध में तो, नंदकान्त पालीपाल ने लिखा है, "नारी लिपि के भाष्यम से विशेष भाषाओं का अव्यवहार नहीं तरलता से किया जाता है। महसि द्यावन्द सरकारी ने कहा था कि भेंगोप तो ऐ दिन देखा चाहते हैं कि बजार से कन्याकुमारी तक और मलक से कटक तक नारी अवारों का ही प्रयोग और प्रचार लेगा। अखालक लिपि है। इसका स्वल्प वैज्ञानिक है। विश्व की सभी भाषाओं की घनियों के उच्चारण एवं तेलन को धमता नारी में निश्चित है। इसमें स्वल्प और दीर्घ में स्पष्ट भेद है। नारी वर्णमाला परीक्षण है। इसमें रुद्र दीर्घ में स्पष्ट भेद है। नारी की भाषाएँ स्थान अवश्य बोती हैं परंतु इसमें उच्चारण में किसी प्रकार के प्रमाण या आशङ्का का स्थान नहीं रहता। नारी लिपि में यह व्यक्त है कि उसमें लगभग सभी घनियों प्रमुख होती हैं। इस लिपि में वर्णों की संख्या काफी बड़ी है। रेपन और अर्नी लिपि की अभ्यास इसमें वर्ण अधिक है।

चातुर में राष्ट्रीय एकता में हिंदी और देवनागरी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। यहाता गांधी के देवनागरी लिपि को इस दृष्टि से देखा गा तथा इस लिपि को अपनाने की बातें भी लड़ी थीं। बिनोय गी ने भी देवनागरी लिपि की विशेषताओं का समझकर इस लिपि को हिन्दुस्तान के लिए उपर्युक्त समझा। उसने नारी को जोड़ देने उससे बहुत ज्यादा में बाहता है कि हिन्दुस्तान की एकता के लिए हिंदी भाषा विजया का मान जाए। ये लिपियों भी चाहेंगी और देवनागरी भी।

देवनागरी लिपि को आदर्श लिपि मान गया है।

आदर्श है। इस लिपि में जो बोला जाता है वही लिखा भी जाता है। सरलता से लिखा जाता है लिखके कारण इस लिपि को आदर्श लिपि मान गया है।

डॉ. एन.एस. दीपेणामूल ने नारी लिपि के संबंध में लिखा है... "एक भाषा के लोग दूसरी भाषा को सीखना चाहते हैं तो कभी-कभी लिपि वाचक होती है। भाषा सरल भी हो लिपि के कारण भाषा सीखना चाहिए होता है। एक सामाजिक लिपि के स्वीकरण के बारा इस समस्या का समाधान किया जा सकता है। इस परिवेष्य में देवनागरी लिपि की उपयुक्तता स्वयं निर्द्देश है।"

चौली वामप देता है। एक-दूसरे के अध्यावद में दोनों का अस्तित्व चूनाम है, अध्यावह है। यदि भाषा आत्मन ही, स्पष्ट हो तो उसकी लिपि भी सरल लाप्त होनी चाहिए। लिखने पालन जाकरिति हो। इन सब दृष्टियों से नारी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है जारी

देवनागरी लिपि को वैज्ञानिकता : 151
लिपि है। आचार्य विनोदा भावे जी ने लिखा है... भात की सभी भाषाएँ नारी लिपि में भी लिखी जाएँ।

मैतीलिंगण गुप्त ने नारी लिपि के संबंध में लिखा है... हे एक लिपि विस्तार होना योग्य लिंगस्तान में। अब आ गई है वह सभी विषयों के ध्यान में। हे किंतु इसके बोय उत्तम कीन लिपि गुण कामती? इस प्रसन का उत्तर है व्याख्यित है जगार नारी। जैसे लिखो बैसा पढ़ो युठ यूल तो सकती नहीं! हे गर्व का न अनर्थ इसमें एक चार तुजा कहो।

इस भावि होकर गुद्ध यह अति सरल और सुविशेष है। क्या उन्नित फिर इसका कभी अवरोध और विरोध है?

निष्कर्ष

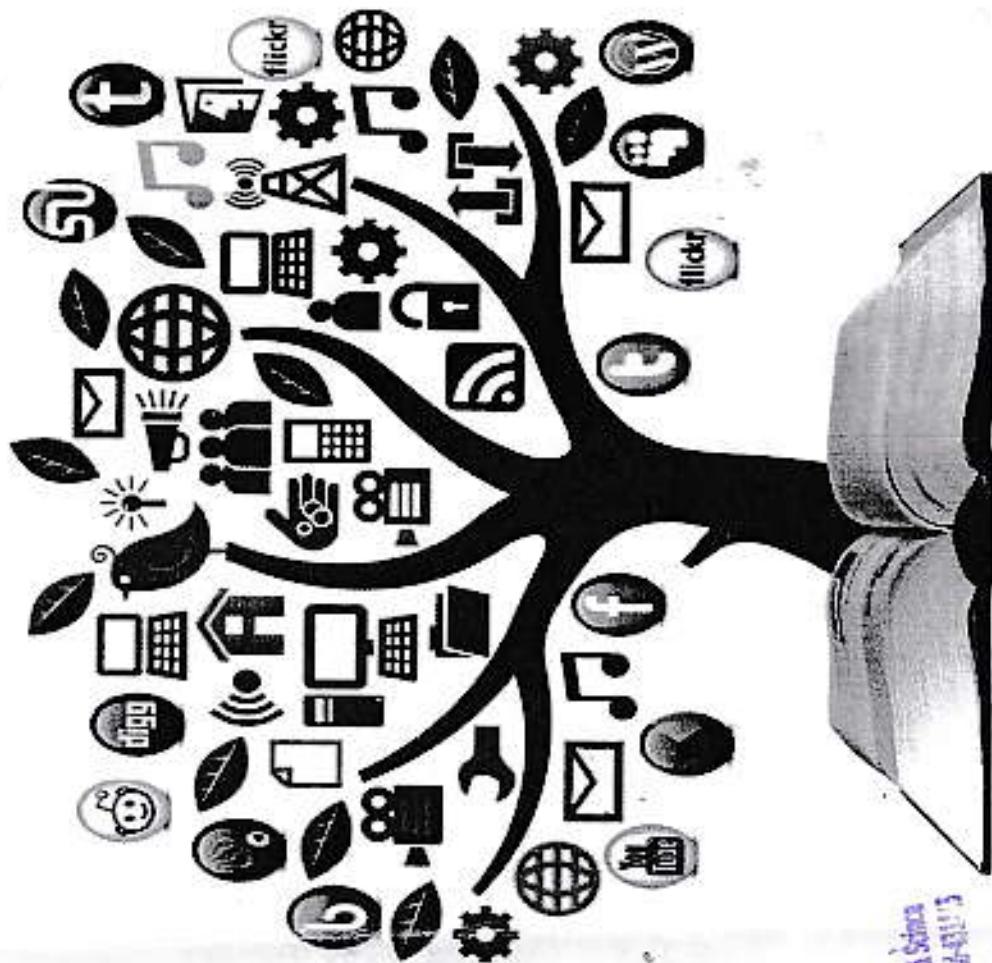
प्रयोग नाल से देवनागरी लिपि का गहत है। देवनागरी लिपि राष्ट्रीय एकता लिपिवाली भावे सभी ने इस लिपि का समर्थन किया है। सतिलासिक दृष्टि से, इलेक्ट्रोनिक जनसंचार भाष्यम में भी इस लिपि को महत्वपूर्ण स्थान है। कुत मिलाकर हम कह सकते हैं कि देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है।

संदर्भ सूची

1. भाषा और भाषा विज्ञान- डॉ. तेजपाल धीरेही, पृ. 326
2. वर्णी, पृ. 326
3. नारी लाम्प- अद्यत्वर दिल्ली 2000, पृ. 20
4. वर्णी, पृ. 10
5. वर्णी, पृ. 18
6. वर्णी, पृ. 12
7. वर्णी, पृ. 48

हिन्दी साहित्य

बाजार से बाजारवाद तक



समाप्तक

दो मुगालात गात्मात

५८
प्रियंका वर्षा
प्रियंका वर्षा, सुनील कुमार
सुनील कुमार वर्षा, प्रियंका

१५-१६
२०१५



हिन्दी साहित्य बाजार से बाजारवाद तक

लेखक
डॉ० भगवन गवाहे

प्रकाशक
साहित्य सागर
128/23 'R', रवीन्द्र नगर, यशोदा नगर
कानपुर - 208 011
Mob. : 9450766327, 9005904629
Email : p.prakashan03@gmail.com

© सर्वाधिकार सुरक्षित

संस्करण : प्रथम, 2015

ISBN : 978-93-82234-08-1

मूल्य : रु० 600/-

शब्द सञ्चा
रिचा ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक
साक्षी आफ्सेट, कानपुर

अनुक्रम

1. हिंदी कविता में भूमंडलोकरण और बाज़ारबाद	13
2. बाज़ारबाद और मीडिया	20
3. बाज़ारबाद और मीडिया से उपजी अपसंस्कृति	24
4. बाज़ार, समाज और साहित्य के अन्तःसम्बन्ध की खोज	30
5. बाज़ारबाद का आतंक और प्रतिरोध का साहित्य	36
6. महिला टोडिकाओं की कलानीयों में बाज़ारबाद	41
7. बाज़ारबाद और समकालीन हिंदी साहित्य	46
8. इन्डोसिल्वी सदी के हिंदी काव्य में बाज़ारबाद	54
9. बैश्वकरण, निजीकरण और उदासीकरण की अवधारणाएँ	61
10. चाजारबाद और मीडिया : सांस्कृतिक परिषेष्य	67
11. विश्वग्राम बनाम विश्वबाजार और समाज	71
12. हिंदी कविता : बाज़ारबाद और नानबीच मूल्य	75
13. बाज़ारबाद और समकालीन नाट्य-साहित्य में मानबीच मूल्य	79
14. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और साहित्य	84
15. बाज़ारबाद और मानवीय मूल्य	87
16. 'दौड़' उपन्यास में बाज़ारबाद	90
17. बाज़ारबादी जीवन की अंतर्हीन 'दौड़'	94
18. बाज़ारबाद से रुक्क्ह हिंदी कहानी	98
19. बाज़ारबाद और मीडिया	104
20. बाज़ारबाद और मानवीय मूल्य	108
21. बाज़ार से रुक्क्ह हिंदी कविता	113
22. बैश्वकरण, निजीकरण और उदासीकरण की अवधारणाएँ	122

दिया हैः

पूर्णडलीकरण और उसमें उपर्युक्त बाजारवाद ने उत्तर आधुनिकता के लिए उपयोग का काम किया है। पूर्णडलीकरण के पूर्णीवादी सोच का धूत हम पर मध्यावर है। लोग जीवन के दूर प्रसंग में गार्डीय के बाजाय लंगरास्ट्रीय बनने के लिए बेचने हैं। परिवारों देशों की पतानशील आधुनिकता को आधारहीन नवीनता के साथ हम पर अरोपित किया जा रहा है। अमेरिका और अन्य विकासित राष्ट्र अपने उत्तरों को खपा के लिये तीसरी दुर्दिन्य के देशों में अपने बाजार तलाश रहे हैं। यह एक गलौबल खेल है।

बर्तमान बाजारवाद के इस दौर में मनुष्य मूल्यहीन तथा संबंधरक्षण हो गया है। यह केवल ऐसों का दिवाना बनकर रह गया है। बाजारवाद ने मनुष्य के साथ-साथ हिंदू साहित्य को भी प्रभावित किया है। महिला लोखिकाओं की कहानियों में भी बाजारवाद ने प्रवेश किया है। ममता कलिया, उषा प्रियंकवदा, मालती जोशी, सुर्यवाला, नासिम शर्मा, सिम्मी हरपिता, सुधा अर्योदा, मृणाल पांडे आदि लोखिकाओं ने अपनी कहानियों के माध्यम से बाजारवाद का खुलकर विवरण दिया है।

आज के सामय के बहिल यथार्थ को उठनें विस कलानकता से कहानी पें निचोड़ा है, यह बड़ा अद्भुत है। आज बड़ी तेजी से उपर्युक्तकालादी-बाजारवादी सम्भवा और विज्ञापन तंत्र ने मनुष्य जीवन को केवल यंत्रवत बनाया है। मानवी जीवन सबधों और संबंधनाओं में आपूर्त्य परिवर्तन हो रहा है। महिला लोखिकाओं ने उत्तर आधुनिक परिवेश को अत्यंत मार्गिकता से अपनी कहानियों में उड़ागर किया है।

इन महिला लोखिकाओं ने 'नरी विमर्श' के साथ-साथ बाजारवाद से प्रभावित भारतीय साहित्य, संस्कृति, मनुष्य की स्वार्थ की मानवा को इट्टि में रखकर साहित्य सूजन किया है। आज का बाजारवाद उत्तर पूर्णियाद समाज में हमें उपर्युक्तकाला बनाकर धन कमज़ोन में विश्वास रखता है। इसकी गवाही हमारा महिला लोखिकाओं का कहानी संसार देता आ रहा है।

ममता कालीया की 'बीमारी' नामक कहानी बाजारवाद का वास्तव विवरण करती है। बर्तमान बाजारवाद के इस दौर में मनुष्य रिश्तों से अधिक ऐसों को महत्व देता है। इस कहानी की नायिका अकेली अपने परिवार से अलग रहकर नौकरी करती है। जब वह बीमार होती है तो सहायता के लिए अपने भैया और भाई को आठ दिन के लिए युलाती है। उसकी भाँगी उसे बीमार मानती ही नहीं। भाई का घ्यवहार उसे छ्याकूल, दुःखी बना देता है। कहानी में नायिका का अस्पताल लाया जाता है। उसका भैया अस्पताल का किरणा देता नहीं बल्कि उल्टे, उसके लिए लायी दबाइयों के

6

महिला लोखिकाओं की कहानियों में बाजारवाद

भूमिका

आज बाजारवाद के प्रभाव से समस्त मानव सुष्ठुप्त प्रणालित है। बर्तमान जीवन की भागदैड़ी की जिन्दगी ने मनुष्य को केवल पश्चिम बना दिया है। मनुष्य कम समय में अधिक धन कमाने की इच्छा रखता है जिसके कारण मनुष्य ऐसों का गुलाम बनकर रह गया है। बाजारवाद के इस दौर में मनुष्य सभी को केवल एक बस्तु के रूप में देखता है। बाजारवाद उस एक फ़सल का मनुष्य होता है कि उसके पीतर का मनुष्य ही नहू ठह हो गया है। जिसके कारण मनुष्य स्वयं को तथा परिवार, समाज, संस्कृति तथा राष्ट्र को भी भूल रहा है। ऐसे समय संत कीवों के अनगोल विचार आज के बाजारवाद में हमें ग्राहकीकरण लगते हैं।

"राई इतना बीचिए, जा में कुदुर्य समाया।
से भी भूया न रहै, साधू न पूछा जाया!"

आज हम पूर्णडलीकरण की दैदूर में शामिल होकर आत्मकोद्दित होते जा रहे हैं। आज की केंद्रीय चिंता मनुष्य का मनुष्य बने रहने की है। बांग्रा, पूँजी, सत्ता आदि मनुष्य के मनुष्यत्व को छीने जा रही है। उपर्योक्तवादी संस्कृति हमें हिंसक बनाती है। हिंसक रूप अतिवायर करके ही हम भौतिक चुख-सुखिधाओं का अपनाना बाहते हैं। आज का समय सबसे कठिन समय है और क्रूर भी। साथ ही रघुनंदिनी और मनुष्यता विरोधी है। साहित्य हमें मनुष्य होने की तर्मज देता है। मनुष्य के लिए हमें साहित्य से जुहे रहने की जहरत है।

आज को वैरिवक स्थिति में उत्तर आधुनिकता की विचारधारा से गच्छ पाना संभव नहीं है क्योंकि परिचयमीयाद सहित अमेरिका आदि का हम पर कफी दबाव है। पूर्णडलीकरण के पूँजीवादी सोच से उत्तर आधुनिकता हम पर लायी है। इसने हमारे लोखन, संस्कृति, इतिहास-चोथ, अंधं, राजनीति नारं और दलित विमर्श, माकस्त्रादी, चिंतन को प्रभावित किया है। साहित्य, इतिहास मनुष्य और इंसरक के अंत तक को बात कही गई है। बाजारवाद ने एक नई उपर्योक्तवाद संस्कृति को जन्म

साथ फलों के भी पैसे उमसं ले लेता है। यह कहानी मनुष्य के स्वार्थ को उड़ाग कहती है।

मृदुला गर्ण को 'लौटना और लौटाना' नामक कहानी में बाजारबाद के दर्शन होते हैं। प्रस्तुत कहानी का बेटा और बहू, किस प्रकार यहूँ माँ-बाप को अकेले छोड़कर चिरेश चले जाते हैं उनके मन को स्वर्ण करने वाला चिकित्षण किया है। इस कहानी का नायक हरिश रक्त से अधिक देरों को महत्व देता है। अर्थ के कारण ही बेटा अपने माँ-बाप की उपेक्षा करता है। डॉ० पृथ्वलाल सिंह ने इस कहानी के संरप्त में लिखा है, "लौटना और लौटना" में चिरेश गया बेटा हरिश देश लौटकर उनका न रहकर नहज ऐसों का हो रहा है। यह कहानी बाप-बेटे, माँ-बेटे के संबंधों के अधिकृत हो जाती है कि निमित्त को स्वक्षण अधिक्षित होती है।"

मृदुला को "बाकड़ी और बदर" नामक कहानी आज के नये उपमोक्षकालीन होते हैं जो अपने ही परिवार में उपेक्षा का यात्रा है। परिवार में ऐसे पिता के दर्दन कुक्कु हैं। परिवार के लोग पिता को बोझ मानने लगते हैं। जिसके कारण अपनी जर्मन-जायदाद आदि की देखभाल करने के लिए गांव भेज देते हैं। लेकिन पिता पर्वतर में परिवार में लौट आते हैं। जिसके कारण परिवार का सारा माहौल बदल जाता है। परिवार की बहू पिता पर क्रोध प्रकट करती है।

परिवार की बहू पिता को केवल कामों भै उलझाकर रखती है। यह कहानी के अंत में पिता को बंदर भगाने का काम देती है। लेकिन बाकड़ी बंदर भगाने का काम नहीं कर पाते। वे बारीचे में जाते हैं तो हाथ काट लेते हैं। बारीचे में चंदर चार-चार आकर तुकसान कर देते हैं। जिसके कारण बाकड़ी बहू के कोपमोजन चन जाते हैं। बेटा भी अपने पिता पर क्रोध प्रकट करता है। जब सारा परिवार पिकनिक मनाने जाता है तब बाकड़ी के चौकोदार के रूप में रुखते हैं।

जब सारा परिवार पिकनिक से लौटकर आता है तो घर का दूसरे देखकर सब चौक जाता है, "बतमदा पूरा छोटे-छोटे बदरों से चिरा हुआ था, बाकड़ी कटोरे भर पीने चौने बदरों को खिला रहे थे। बदरों के बच्चे अपनी खुशी का इजहार करते बाकड़ी के सामने कलामूँडयां खा रहे थे।"

प्रस्तुत कहानी में पीढ़ी का अंतर, मानविय संवेदनशून्यता तथा स्वार्थ की शावना ढगार होती है। सिम्पी हरिंता को "इस तरह की जाते।" बाजारबाद से प्रमाणित सशक्त कहानी है। आज भौतिकवादी सोच ने व्यक्ति के विचारों को, मनोपाचारों को कितना

बदल दिया है। उनकी एक स्पष्ट बदल क यह कहानी देती है। पैसा और शोहरत पाने के लिए पिंडि स्वेच्छा से अपनी पाली को किसी और के बिसर पर सुलाया करता है और तमाम सुख-साधनों को प्राप्त करने की होड़ में पली भी यह मर्हे स्वीकार करती है। उन्हें कहीं कुछ भी अनुच्छेद, विवेकहीन नहीं लगता। ऐसे संबंधों के दुष्परिणाम क्या हो सकते हैं? इस बात का अहसास पत्नी को तब होता है जब वह देखती है कि उसके साथ सबध बाजारों वाला उचित ही अब उसको बेटी के साथ संबंध चाना रहा है। इस कहानी का दूसरा पक्ष यह है कि जो साधारण आदमी है, अपनी मेहनत के बल पर जीने वाला वह ऐसे रितों को कभी बदरत नहीं कर पाता। जैसे इस कहानी का स्टेनो-वाइफ्स्ट कम रसेंइया नालन्दा यह सब देखकर घूला रहता है। जब किसी तरह यहाँ से छुटकारा पाना चाहता है। यह कहड़ता है— "मैं इस पर की दीवाने, यह सर में जन्म लेती है इस तरह की बातों को काली इबात। इस पर की बोझित हवा और हवा पर का मुर्दा आकाश तोड़कर आग जाना चाहता है, किसी जीविता आकश के नीचे।"

प्रस्तुत कहानी स्पष्ट करती है कि आज के बाजारबाद के प्रभाव में मनुष्य गृहीत हो अभी विकाल नहीं हुआ है। नास्तिक शाया की, "इमाम ताहव" नामक कहानी में अर्थकेन्द्री वर्तमान परिवेश के परिस्रेष्ठ में आग-मुर्दिम-समाज के पारिचारिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक-धार्मिक जीवन में लाले परिवर्तनों की सहज आंगृव्यक्ति देखी जा सकती है। अपनी प्रशिक्षा के लिए नन्जीद का जोर्णीदार, इमाम की नियुक्ति, इमाम शकोलउद्दीन की नारबासी मुर्दिम परिवारों से उपेक्षा-अपमान इमाम बने रहने की शक्तिलड्डीन की विवरता आदि, वर्तमान अर्थकेन्द्री परिवेश की पठानओं के साथ ही कई तारङ्ग की उपेक्षा-अपमान के बाबजूद शक्तिलड्डीन और नार परिवार की जीर्णताएँ और बच्चों के बोच की सोनहरील संबंधों के माध्यम से लेखिका भालौय मानसिकता को अधेरित करती है।

उषा प्रियंवदा की "चापसी" नापक कहानी बांगमान बाजारबाद का यथार्थ विचार करती है। आधुनिकता ने जीवनमूल्यों का विवरण कर दिया है। आपसी संबंध विवर गये हैं। अकेलेपन की पीड़ा उसे सलती चली जा रही है। एक नियायहृद आदमी गजाधर चारू के द्वाग अकेलेपन की समस्य के साथ एक पीढ़ी की बदली हुई मानसिकता को यह कहानी प्रस्तुत करती है। जब गजाधर चारू लौटकर अपने परिवार में आते हैं तो सारा चातवरण बदल जाता है। पत्नी भी अपने में ही ल्यरता, उपसीन विवरती है। जब तक गजाधर चारू के पास ऐसे होते हैं तब तक उनकी कीमत होती है। लेकिन जैसे ही वे रिटायर होकर आते हैं तब सारा माहौल हो बदल जाता है।

जब पनी से चे कहतो है कि अब हाथों ये ऐसा कम आँगा तब पनी कहती है, "सभी खर्च तो बाज़िय-चार्जिंच हैं, किसका पेट कहाँदू?"
यह कहानी अर्थ कोदित मूल्यों के संवेदनशून्यता को, मुझ की स्वार्थ की प्रवाना पर प्रकाश डालती है।

पंजुल खगत की "पावरोटी और कटलेट्स" नामक कहानी पूँजीवादी अध्यक्षस्था तथा आर्थिक विषयता पर आंग प्रकट करती है। देश में एक ओर धार्नक धर्म धो-विलास तथा ऐसव्यं में गानी की लाह धन बहाते हैं, तो दूसरी ओर गर्भवती-दाने को मुहताज है। कहानी की मेपलाहब जिद्दों को रोगीन बनाने के लिए रेस्टर्यू में आती है। एक भूख में लड़ते हुए अखबार लेन्डने वाले से उसका अखबार नहीं खरीदती। वह कहती है, "बाबा अखबार नहीं चाहिए। तो यह दस पैसे ले लो और जान छोड़ो।" लड़के का स्थापितमान उसे भीख मानते नहीं होता। वह भूख बना रहना श्रेयाकर समझता है और कहता है कि, "मैं भूख नहीं होता। अखबार ले लो बहुमी।"

जब वह महिला कटलेट्स खाकर काँफी पीकर जाती है तब वह उस बच्चे को देखती है वह अखबार के पैसों से याच गोटी खोदें कर खा रहा है। यह हँसकर उससे कहता है कि, "ए पेप साहब ! पाच गोटी खाओगो ?" लड़के की बातें उसके स्थापितमान को तोड़ देती हैं। यह कहानी पूँजीवादी अध्यक्षस्था पर कराया ग्रहर करती है।

निष्कर्ष : बर्तमान बाज़ारवाद को इस युग में 'बाज़ार' शब्द ने मनुष्य का सारा चीज़न ही बदल दिया है। साथ साथ बाज़ारवाद के कारण एक ग्राम की तरह यह रहा है। भूमंडलीकरण के कारण विश्व के किसी भी मनुष्य को कही भी अपनी वरदु बेचने की मजूरी तसकार ने दी है।

बाज़ारवाद के कारण सभी को अपनी संस्कृति अपनी भाषा की चिंता स्वाभाविक है। लोकिन ध्यान देने की आवश्यकता है कि बाज़ार ने हमारी भाषाएं तथा संस्कृति को नया रूप दिया है। बाज़ार संस्कृति ने पूरे विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। साहित्य गी उसके लिए अपवाद नहीं है। महिला लेखिकाओं को कहानियाँ इस दृष्टि से मील का पत्थर है।

संदर्भ

1. बीना प्रकाशन समाचार, प्रो. शिवकुमार विश्व, जुलाई 2010
2. उत्तर अध्यनिकता : एक चिंतन, सूर्यकलं चार, चौणा, अक्टूबर 2011, प. 8
3. वही, पृ. 9
4. समकालीन लिंगों कहानी, डॉ. पुष्पपालसिंह, प. 201

-डॉ. वसंत माल्ही
आसारामजी पांडितलालर महाविद्यालय
देवगढ़ (र.) ता. कन्नड, जि. ऊर्माचार
गो. ९८६०६७३७१२
E-mail : vmail813@gmail.com

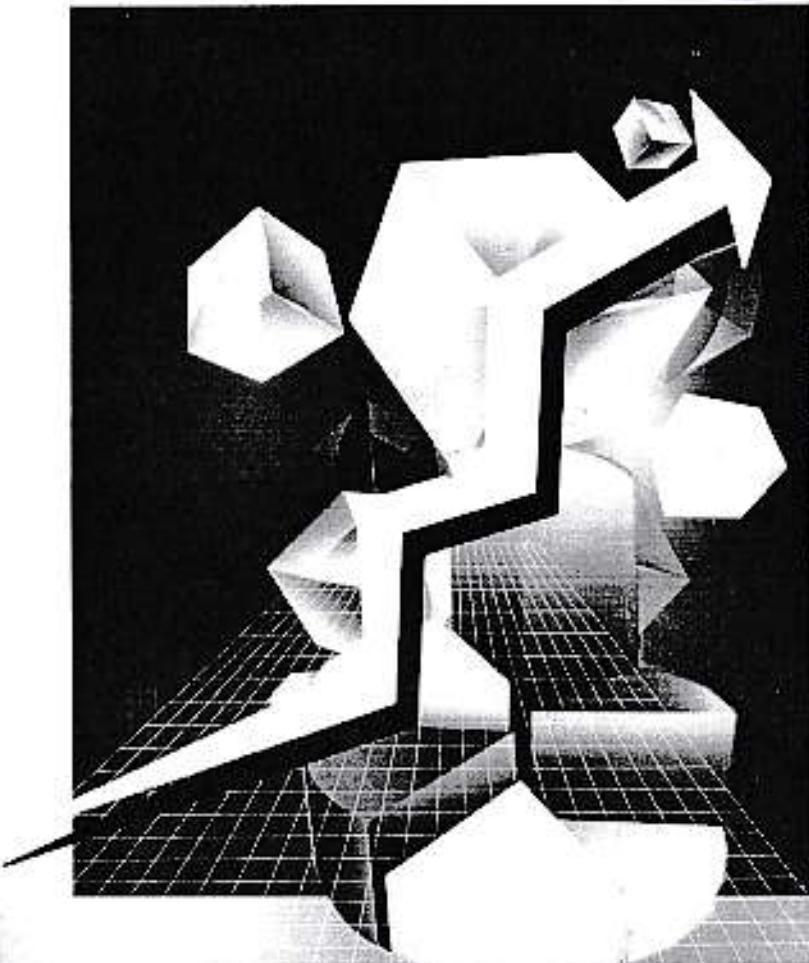
2015-16

सांकेतिकीय पद्धती

२

डॉ. विलास खंदारे

डॉ. शिवाजी यादव



Principal
[Signature]

सर्व विद्यापीठातील पदवी व पदब्युत्तर अभ्यासक्रमासाठी उपयुक्त

सांख्यिकीय पद्धती (Statistical Methods)

डॉ. विलास भि. खंदारे
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
श्री. आतारामजी भाडवलदार कला
व वाणिज्य महाविद्यालय,
देवगांव (र.) ता. कळड
अधिकारी, सामाजिक शास्त्रे
विद्याशास्त्रा, डॉ. डा. आ. म. विद्यापीठ,
जि. औरंगाबाद

डॉ. शिवाजी भ. यादव
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख
शिवहत्रपती कला महाविद्यालय,
पाठोड
ता. पैठण, जि. औरंगाबाद



चिन्मय प्रकाशन,
औरंगाबाद



Sankhiya Paddthi

सांखियकीय पद्धती

डॉ. विलास भि. खंदारे, डॉ. शिवाजी भ. यादव

प्रकाशक

चिन्मय प्रकाशन,

सवणेकर विलिंग जिगामाता कॉलनी,

पैठणेट, औरंगाबाद.

मो. ९८२२८५४२१९

Email-chinmayprakashan@gmail.com

अक्षरजुल्यणा

श्रो. ज्ञानेश्वर के, सुनो

खेदिका डाइप्सेटस, औरंगाबाद.

© लेखकाधीन

जुलै २०१५

मुद्रक

प्रिटो ग्राफिक्स

औरंगाबाद.

मुख्यपृष्ठ : अपूर्वा ग्राफिक्स

औरंगाबाद.

₹ : ४५०/-

ISBN - 978 - 93 - 84593 - 87 - 2

१

2006

अर्थशास्त्री

समाचारिका

नवीनी पुस्तकालय

NARADA



नवीनी पुस्तकालय

मराठी अर्थशास्त्र परिषदेते ३९ वे शब्दीय अधिवेशन

दि. १६, १७ व १८ नोव्हेंबर २०२४



आयोजक



अनेकांत एज्युकेशन सोसायटीचे

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

ता. बारामती, जि. पुणे - ४१३ १०२

Principals
Dr. S. S. Patil
Dr. S. S. Patil
Dr. S. S. Patil



Ji. Rupan Singh -
- Purnia, 19/11/2016, Pin: 844126

अर्थमती २०१५-१६

अनुक्रमणिका

शार्पी देख	
१.	महाराष्ट्रातील महिला सहसमीकरण योजना व त्याची परंपरां
२.	पश्चिम बाह्यराज्य विकास बोर्डाचे न महिला सहसमीकरण - योजनापूर्व क्रित्यातील ग्रामीणवासींचा तीलचिक अभ्यास
३.	आर्थिक व सामाजिक भ्रष्टाचाराची महिला सहसमीकरण
४.	महाराष्ट्रातील विवाहे महिला घोरण - व्यवस्था आणि उत्तराने
५.	महाराष्ट्रातील महिला सहसमीकरण - योजना व परंपरां
६.	महिला सहसमीकरण - इच्छा आणि सामूहिक व्यवस्था योजनांची परंपरां

गोपन्यार्थ	
७.	महाराष्ट्रातील महिला सहसमीकरण योजनांचे विवेशासाठीचा अध्ययन
८.	महिला नाळगीकरण - एव्ही संबोधावाचे वास्तव
९.	महाराष्ट्र नाळगावाचे महिला सहसमीकरणावर घोरणा २००६ च्या मुल्यांमात्र
१०.	महाराष्ट्रातील अनुभवित जाती / जनतीतील महिला सहसमीकरणाची समस्यांची व्याख्या
११.	दावे विवेशासाठील महिलांच्या सहसमीकरणादील घोरणा
१२.	व्यवसायाचाचे व्यवसाय आणि महिला सहसमीकरण - घेऊ विलह विशेष अभ्यास
१३.	महाराष्ट्रातील महिला सहसमीकरणाच्या विकास योजना
१४.	व्यवसायाचाचे व्यवसाय विकास
१५.	महिलांचे सहसमीकरण - जागेवाच योजनांची आवाया
१६.	महिला नाळगीकरणाचा सहसमीकरणाचा अद्यावा
१७.	महाराष्ट्रातील महिला सहसमीकरण योजना आणि त्याची परंपरां
१८.	स्त्री द्रुग्यांना - महिला सहस्रोऽप्यातील स्त्रावाहक, अद्यावा
१९.	महिला सहसमीकरण -आर्थिक व सामाजिक विकास
२०.	महाराष्ट्रातील महिला सहसमीकरण घोरणाची घोरणी
२१.	सुखम उद्योगांमधील दोषांचाचा संधी आणि महिलांचे सहस्रोऽप्यां
२२.	महाराष्ट्रातील विकास व आर्थिक सहस्रोऽप्यां
२३.	आर्थिक व्यवसाय महिलांचे सहस्रोऽप्यां
२४.	कृषी व्यापारातील महिलांचे सहस्रोऽप्यां
२५.	महिला घोरणा आणि व्यवस्थापनी
२६.	महाराष्ट्रातील अविवाही महिलांच्या संवलोवत्यासाठीच्या स्वास्थ्यावस्थावाच व्यवस्था घट घोरणाचे मुल्यांमात्र
२७.	महाराष्ट्रातील महिला सहस्रोऽप्यां योजना व त्याची परंपरां
२८.	महिलांच्या आर्थिक सहस्रोऽप्यां स्वास्थ्यसाठीच्या व्यवस्थावाच व्यवस्थावाच योग्यता
२९.	महाराष्ट्रातील महिला सहस्रोऽप्यां योजना आणि त्याची परंपरां
३०.	महाराष्ट्रातील सहस्रोऽप्यां व त्याची सहस्रोऽप्यां
३१.	महाराष्ट्रातील विवाह आर्थिक सहस्रोऽप्यां आणि महिलांची परंपरां
३२.	महाराष्ट्रातील विवाह आर्थिक सहस्रोऽप्यां योजनाचा आवाया
३३.	विवाहाची जाती या विवाहाच्या सांख्यमात्रात महिलांचे सहस्रोऽप्यां
३४.	महिला सहस्रोऽप्यां योजना व मुल्यांमात्र
३५.	महिला सहस्रोऽप्यां योजना व त्याची परंपरां
३६.	नवीकरण सहस्रोऽप्यां महिला सहस्रोऽप्यां
३७.	महाराष्ट्रातील महिला सहस्रोऽप्यां योजना व त्याची परंपरां
३८.	महिला सहस्रोऽप्यां योजना व त्याची परंपरां
३९.	महिला सहस्रोऽप्यां योजना व त्याची परंपरां
४०.	व्यवसायातील महिला सहस्रोऽप्यां
४१.	महिला सहस्रोऽप्यां योजना व त्याची परंपरां
४२.	महिला सहस्रोऽप्यां योजना व त्याची परंपरां
४३.	महिला सहस्रोऽप्यां योजना व त्याची परंपरां
४४.	व्यवसायातील महिला सहस्रोऽप्यां योजना



३०९
३४५८८
प्र० १००५

अर्थमती २०१५-१६

आर्थिक व सामाजिक घटक आणि महिला सबलीकरण

प्रस्तावना :

भारतीय समाजात अनेक वर्ष सोली मनुसमृद्धी, धर्मांश्च तसेच पुरुषप्रधान समाजिक व्यवस्थेने जन्मुकुन ठेवले होते. बालविवाह, सर्तीप्रधा, शिक्षणवंदी, घराच्या बाहेर जाण्यास बंदी, या सारख्या अनेक प्रथांमध्ये स्वानांतील अडकुन ठेवले. एकीकडे भारतीय संस्कृतीने स्त्रीयांना देवीचे स्थान दिले परंतु त्याच बरोबर पुरुषांकडुन नात्र प्रत्येक बाबतीत महिलांना दुव्यम स्थान निळते. गिर्यारेदाच्या आधारे (Gender Discrimination) स्त्रीपुरुषा मधील फरक ही ब्रित्वांक प्रक्रिया आहे. शेत्या अनेक वर्षांत आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रांतील खियांचा सहभाग नगण्यच गर्दीले दिसून येतो.

महिला सबलीकरणाची संकल्पना :

महिला सबलीकरणाची संकल्पना हि अत्यंत व्यापक असल्यानंदे निचा नेमका अर्थ सांगणे अवघड आहे. महिलांचे सबलीकरण ही संकल्पना महिल्यांच्या विकासाच्या यंदभानु रुद्र इच्छी आहे. पावलो फिरे याने सबव्यंदेशम ही संकल्पना उपयोगात आणली. आबला महिलांना सबला करणे आणि त्यांना समान हक्क व संधी देणे हेच या मार्गाल तत्व आहे. म्हणजेच सत्तावंचित, संधिवंचित, महिलांना कोणत्या ही मंदभावा शिवाय प्रगती करण्याची संधी देणे हे महिला सबलिकरणात अपेक्षित आहे. महिला सक्षमिकरणाच्या प्रक्रियेत प्रत्येक लोकांसाठी ओळख करून देणे गरजेचे आहे. महिलांमध्ये आत्मविश्वास, स्वायत्तेवन, स्वातंत्र्य, आत्मसम्मान व साझा निर्गण करणे हा महिला सक्षमीकरणाचा अंतिम उद्देश आहे. स्त्रीयांना शक्ती, शमता आणि कौशल्ये वृद्धिंगत करण्यासाठी

प्रा. डॉ. डी. बी. खरात

जर्यशास्त्र विभाग प्रमुख
मोरेश्वर महाविद्यालय, भोकरवत्त
मो. ९४२२२२३१६३८

प्रा. डॉ. विलास खंदारे

सहयोगी प्राध्यापक
डॉ. ए. बी. महाविद्यालय, देवगांव (र.)
ता. कल्प निं. औरंगाबाद

तसेच स्वतःच्या जीवनमानाचा दर्जा उंचावुन स्वयंनिर्धारित होण्यासाठी आवश्यक ते सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, शैक्षणिक पर्यावरण निर्माण करण्याची प्रक्रिया सबलीकरणात होते.

सामाजिक घटक आणि महिला सबलीकरण :

सामाजिक न्यायाच्या दृष्टीकोनातून जर स्त्रीयांचा विचार करावयाचा झाला तर बहुतांश समाजात लियांचे दोष हे चुल आणि मुल इयपर्यंतच मर्यादित असल्याने त्यांना समाजात न्याय मिळताना दिसत नाही. लोकसंख्येच्या नेसर्पिंक समतोलामध्ये झालेला मानविष्टक्षेप आणि त्यावुन निर्माण होणाऱ्या समस्या गंभीर सामाजिक परीणाम करणाऱ्या आहेत. लोकसंख्येचा विचार करीत असतांना लो-पुरुषांचे प्रभाण हे समान असणे आवश्यक असते. लो-पुरुष प्रभाणात असनतोल वाढत आहे. यामध्ये स्त्री मुळ दृष्टेचे वाढणारे प्रमाण हा महत्वाचा घटक आहे. भारतीय मुळे मुलींच्या शिक्षणाबाबत सातत भेदभाव केला जातो मुलींना उच्च शिक्षण पासून वंचित ठेवले जाते. अन्यान व अत्याचाराच्या समस्या दिवसेंदिवस काढत असून यामध्ये कौटुंबिक हिसा, शुद्धाबद्धी, लैंगिक छळ, सामाजिक अत्याचार, इ. चा उल्लेख करता येईल. यामुळेच महिला सबलीकरणाच्या कार्यक्रमातून स्त्रीयांवरील होणारा सामाजिक अन्याय दुर करता येईल.

आर्थिक घटक आणि महिला सबलीकरण :

भारतात महिलांच्या कामाचे राष्ट्रीय उत्पन्नात कमी योगदान असते. महिलांना बन्याच कामाचा मोबदला दिला जात नाही. त्यामुळे ते काम पगारी कामाच्या तुलनेते दुव्यम मानले जाते. मुलींना





अर्थमती २०१५-१६

संकारण द्वारा

लिंगाधारित अर्थसंकल्प (Gender Budget) :

जगत सर्वप्रथम १९८० मध्ये आँस्ट्रेलिया या देशाने लिंगाधारित अर्थसंकल्पाची संकल्पना मांडली तर इंग्लॅंड मध्ये १९८९ लिंगाधारित अर्थसंकल्प संडला भारतात २००३ मध्ये लहोरा चक्रवती आणि भद्रचार्य यांनी लिंगाधारित अर्थसंकल्पाची शिकारस केली होती त्यामुळे २००५-२००६ च्या केंद्रिय अर्थसंकल्पात पहिल्यांदा अर्थपत्त्वांनी आपल्या भाषणात लिंगाधारित अर्थसंकल्पाचा उल्लेख केला महिलांच्या सर्वांगिन विकासासाठी शासन कर्तीशह आहे असेही त्यात नमूद केले. सध्या जगत जवळपास नव्यद वेळा जास्त देशात जेडर बजेट तयार केले जाते. महिलांच विकास सामाजिक आर्थिक कल्याण आणि संबलीकरणासाठी योजनात्मक कार्यक्रम वर्जपे. महिलांनांनी विंशेष निधी निर्धारित करणे हे लिंगाधारित अर्थसंकल्पात अभिनित आहे. म्हणजेच लिंगाधारित संबलीकरणासाठीचा अर्थसंकल्प म्हणुन लिंगाधारित अर्थसंकल्पाकडे पाहिले जाते.

बरील वृत्त्यावरुन गेल्या नऊ वर्षांत महिलांसाठी राशविलेल्या योजनांसाठी पेशाची कशा प्रकारे तरतुद केली आहे याची कल्पना येते. पेशाची तरतुद केल्याशिवाय कोणतेही साधन परीणामकारक ठरत नाही. २०१०-११ च्या अर्थसंकल्पात सर्वांत जास्त म्हणजे ६७,७४९ कोटी रुपये महिला संबलीकरणासाठी तरतुद करण्यात आली. जगत झाण भारतातही निरक्षर वर्गामध्ये महिलांचे प्रनाण आजही पुरुषांच्या तुलनेत आधिक आहे. सरकारी व खात्री केवळ उच्च पातळीवरील निर्णय प्रतिपेत महिलांना मिळणाऱ्या संधी खुपच मर्यादित आहे. म्हणुन हल्की व कमी वेतन असणारी कामे करावी लागतात. एकदरीत पुरुषांच्या तुलनेत महिलांचा सामाजिक व आर्थिक दर्जा कमिट असल्याचे स्पष्ट होते म्हणुन ही दरी कमी करण्यासाठी लिंगाधारित अर्थसंकल्प या संबलपनेचा उदय झालेला दिसून येतो.

महिला संबलीकरणासाठी लिंगाधारीत अर्थसंकल्पाच्या प्राप्त्यासातून क्रांती महत्वपूर्ण वावी साध्य घेण्यास मदत होते. यामध्ये प्रामुख्याने -

- १) सर्वजनीक आर्थिक धोरण ठरवितांना महिलांचा सहभाग वाढविण्यास मदत होते.
- २) स्त्रीयांच्या गरजा शोधून त्या पुर्ण करण्यासाठी वाढल्या खुर्चाची तरतुद केली जाते.
- ३) स्त्रीया, मुले व मुली यांच्या विविध गरजा पुर्ण करण्याचा प्रयत्न केला जातो.
- ४) पुरुष व मुलांच्या तुलनेत लिया व मुलीच्या गरजांवर अधिक लक्ष केंद्रित करता येते.
- ५) लिंगाधारित अर्थसंकल्पामुळे ली व पुरुष समानतेच्या दृष्टीने अर्थसंकल्पास स्त्रीयांच्या गरजांकडे अधिक लक्ष देणे शक्य होते. अशा प्रकारे महिलांच्या आर्थिक व सामाजिक विकासाच्या अंतक प्रक्रियाद्वारे महिलांचे संबलीकरण होत असल्याचे दिसून येते.

संदर्भमुद्दीश्य :

- १) अर्थवोध खंड १५, अंक १ मार्च २०१०
- २) डॉ. पाटील जानेंद, स्पर्धा परीक्षा नोकरी संदर्भ, फेब्रुवारी २०१३
- ३) स्त्री-पुरुष अभ्यासातील जाव्हाने व उपाय, डॉ. डॉ. एम. गंगेश्वर, अपुर्व पद्धतीशींग हाऊस, औरंगाबाद ऑफिस २०१३
- ४) विचारमंच, महाराष्ट्र राज्यशास्त्र व लोकप्रशासन परायेची संशोधन परिका, अर्थव पद्धतीकेशन, जळगांव, जानेवारी २०१४
- ५) महिला आणि मानवी हड्डा, डॉ. विहंवाय, सोनवणे, प्रा. सुरेश भालेश्वर, प्रशांत पद्धतीकेशन जळगांव, मार्च २०१४
- ६) महिला संबलीकरण, प्राचार्य डॉ. संभाजी देसाई, प्रशांत पद्धतीकेशन जळगांव, मार्च २०१४
- ७) अर्थसंबाद, खंड ३८, अंक ४, जानेवारी - मार्च २०१५



कुटुंबातील संपत्तीचा समान वाटा मिळत नाही. पिलसताक कुटुंब पद्धतीत पुरुष कुटुंबप्रगण असल्या मुळे कुटुंबातील साधनाच्या वितरणावर त्यांचे नियंत्रण असते. यासारख्या अनेक बाबींमुळे खोया ह्या आर्थिक दृष्टीकोनातून दुलंभित राहील्या-आहे. त्यामुळे महिला सकारात्मकरणाच्या नाईमानातून खोयामध्ये आर्थिक स्वालंबन यावे यासाठी अवैधव्ये यारकारी प्रत्यावर मोठ्या प्रमाणात प्रयत्न करण्यात येत आहे. नियोजन काळात प्रत्येक पंचार्थिक योजनेत खोयांच्या विकासासाठी तरतुद करण्यात आली असून पाचव्या पंचार्थिक योजनेपासून खोयां पिष्ठेच्या धोरणात अमलाश बदल झाला आहे. अकराव्या पंचार्थिक योजनेमध्ये खोसकारीकरणा उंतर्गत खोयांवरील जल्याचार, आर्थिक सकारात्मकरण, राजवित्त सहभाग आणि आरोग्य या चार मुद्यांवर लक्ष केंद्रित करण्यात आले आहे.

स्वयं सहाय्यता बचत गट :

भारतात स्वातंत्र्योत्तर काळात महिला विकासाचे दंडक प्रयत्न झाले आहे. तरी त्यात आनंदी वरीच मजल मारणे दाकी आहे. महिला समस्यांचे मुळ हे आर्थिक असल्याने त्या समस्यांचे उच्चाटन करून आर्थिक सुव्यवस्था प्राप्त झाली तर महिलांना दर्जी व स्थान प्राप्त होईल. महिलांना आर्थिक वृक्षया स्वावलंबी बनवुन समाजात मान-सन्मान व गुणांना दाव देण्यासाठी रोजगाराचे नवे दाळन म्हणुन स्वयं सहाय्यक बचत गटाच्या पर्वाचा आरंभ झाला आहे. त्यामुळे महिलांचे आर्थिक व सामाजिक परीकर्तन होत असून अर्थव्यवस्थेत नवी विचार प्रणाली, नवी व्यवस्था तसेच नवी माणसिकता घडविण्यात स्वयं सहाय्यता बचत गटाचे महत्त्वपूर्ण योगदान आहे. स्वयं सहाय्यता बचत गटाची संकल्पना वेगवेगळ्या दृष्टीकोनातून अनुभवली जात आहे, लोकशाही मागानी चाललेली ही चलवळ असून महिलांची संख्या त्यात सर्वाधिक आहे. म्हणुन महिला स्वयंसहाय्यता बचत गट शिर्षकाने नाभरुपाला आले आहे. महिलांना संघटीत करून त्यांना आर्थिकवृक्षया सशक्त करण्याहे बचत गटाचे ध्येय आहे. बचत गटाचे जाळे पसरविण्याचे काम स्वयंसेवी संस्थाकडे, बैंकाकडे सोपविण्यात आले आहे. हांग्रेसांद युनुस यांच्या चलवळीचे भारतातील अनुकरण करण्याचा निर्णय १९९१ मध्ये घेण्यात

आला. १९९८ नंतर या चलवळीने येग पंतप्रधान आणि सुमारे ३० लाख बचत गट, त्यातील जोडल्या नेतृत्वात सुमारे साहेचार कोटी महिला आणि सुमारे अटवा हजार कोटीची उलाढाल ही बचतगटांची आकडेवारी दोलकी असून महिलांच्या आर्थिक सकारात्मकरणाची कोणतोही चलवळ यापुढी इतरकी यशस्वी आली नाही.

भारतीय महिला बैंक :

भारत सरकारच्या आर्थमन्त्रांनी अर्थव्यवस्थेवर भागणात फेब्रुवारी २०१३ मध्ये भारतीय महिला बैंकीची स्थापना करण्याची घोषणा केली. महिलांच्या आर्थिक सकारात्मकरणासाठी व सकारात्मकरणासाठी ही बैंक सर्व प्रकारचे सहाय्य व मार्गदर्शन करून हा उद्देश होल्यासमोर ठेवुन या बैंकीची स्थापना करण्यात आलेली आहे. सध्या डेशातील २६ टक्के महिलांच बैंकिंग सेवेचा लाम घेतान तर केवळ ८ टक्के महिलांच क्र०प्र०प्र०ता. महिला बैंकच्या स्थापनेमुळे यान नव्हाच ग्राह झोईल. येणाऱ्या पदील काळात ग्रामिण भागात घेण्यात या बैंकच्या शाखा सुरु करण्यात येतात.

कृपी दोनातील आर्थिक स्थान :

कृपी व्यवसायाच्या कामाचे स्वरूप लक्षात घेता जवळपास ५५ टक्के महिलांचा सहभाग या कामात आहे. कृपी व्यवसायाला पुरुक असणा-न्या व्यवसायातही महिलांचे योगदान मोठ्या प्रमाणात आहे. रेशीन उद्योग, दुःखव्यवसाय, मृत्स व्यवसाय, कृकट पालत, शेंकी व मेंडी पालन या सायद्या व्यवसायात ही महिला कार्य करतांना दिसून येतात. देशातील काही भागात तर कृपी विषयाने दोयातही महिलांचा सहभाग दिसून येतो. कृपी व्यवसायातील महिलांचे आर्थिक स्थान स्पष्ट करतांना आंतरराष्ट्रीय श्रम संघटनेने देखील या बाबत खुलासा देत कृपी खाद्यांन उत्पादनात जवळपास ५० टक्के महिलांचे योगदान असल्याचा पाठपुरावा केला आहे. ग्रामिण अर्थव्यवस्थेच्या विकासात सहभाग असणाऱ्या जवळपास ९० टक्के कृपी आणि कृपी पुरुक व्यवसायात महिला श्रमिकांचा सहभाग असल्यानेच देश आज मार्जीपाला व फुलांच्या व्यवसायात जगत प्रमुख स्थानावर आहे. ग्रामिण मागातील महिलांना कृपी दोनात स्थानिक पात्रांवर रोजगारांच्या संधी उपलब्ध होण्यासाठी आणखी काही नविन योजनांची आवश्यकता आहे. जेनेकरून महिलांचे आर्थिक



Special Issue 3rd
Feb. 2016

(3)

ISSN-2250-0383
IMACT PACTQR-0.423

SHODHAKAR

२०१६

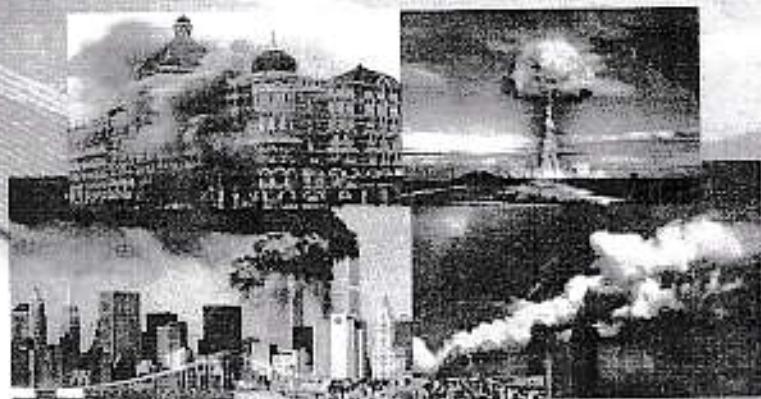
वर्ष

३

माह

फर

21ST CENTURY WORLD : PRESENT SCENARIO & CHALLENGES



EDITOR
Dr. Pandit Nalawade

136. POLITICAL DECISION MAKING AND ADMINISTRATIVE MIND SET ARE THE CULPRITS OF POVERTY IN INDIA

Dr. Vilas B. Khansare, Research Guide, Dr. A.B. College, Deogao R. Balwahab A. Sarate, Ph.D. Student in Economics, Dr. B.A.M.U., Aurangabad

Key words: Politics of poverty, Class interests, Administrative mind set, Mass poverty Theory of Exploitation, Redefining Needs, Alleviation of poverty

Introduction:

Reducing poverty is a key element for inclusive growth strategy and there is some progress in that regard. However, actual head count of poverty in India has been continuously increasing. The claims are made for poverty alleviation and also the figures of reduction are also presented that the poverty is reduced to a large extent. In fact, Indian economy is facing the serious problem of mass poverty twinned with unemployment. The poverty and unemployment are caused due to the policy decisions and failure in administration. Objectives of this research paper are to study the presented figures of the poverty and its estimation, to understand the nature and causes of poverty, to put forth some proper measure for poverty alleviation in India. This research is mainly based on secondary data.

The main hypothesis of the research is that "the political decision makers and the administrative mind set are the sole culpris of the poverty in India".

Objectives Of the Study :

1. To study the methods of Poverty estimation and actual head count of poverty in India.

2. To understand the nature and causes of the chronic Poverty in India.

3. To examine government policies and administrative mind set for alleviation of Poverty.

4. To suggest the practical remedial solutions reduction in poverty in India.

Methodology :

This Research article is prepared on the basis of the secondary data sought from the Books, Reports, Research Articles of Research Scholars etc.

Meaning of Poverty :

Poverty means inability to fulfill even basic economic needs of life. When any individual, family or any group becomes unable to satisfy their basic needs due to lack of sufficient income or means of production. It means the people are deprived of means of Consumption and resources Income for a long time have suffer from Poverty. When such situation arises frequently over a longer period, it becomes more critical to eradicate. If substantial segment of Society is deprived of the minimum stand of living, is treated as Mass Poverty. Generally there are various Methods of estimation of Poverty - the average level of living of society. Minimum level of living and reasonable level of living. In India, a large segment of the population is continuously deprived of minimum level of living for a quite long time. Hence it is Mass Poverty. Therefore, only minimum level of standard of living is considered for estimation of Poverty. Reasonable level of estimation means the average level of standard of living of all the people. But it is mere a wishful thinking in India as the minimum level is also difficult to achieved yet.

May take many more decades to consider Minimum Level of standard of living for all the people. The Poverty in India is mass Poverty. A big segment of the population is living under poverty even after independence of the Nation.

Estimation of Poverty in India :

The poverty line is determined by considering expected level of minimum Calorie intake and other indispensable non-food purchases assured (cereals, pulses, milk, meat, vegetable, butter etc.). The poverty was first time estimated by Dr. V.M. Damlekar and Dr. N. Rath committee. They had considered minimum 2100 Calories for Urban and 2400 calories for Rural area. According their findings in 1968-69 the poverty in India was estimated as 40 per cent in Rural and 50 per cent in Urban area. It means about 16.6 crores in Rural and 4.9 Crs in Urban Population was below poverty line. In 1979-80, the Planning Commission Reports had shown 32 per cent poverty in Rural and 40 per cent poverty in Urban area.

Tendulkar Committee Report :

Table 1 : Poverty Estimation as per Tendulkar Committee Report :

Sr. No	Year	% Poverty in Rural	% Poverty in Urban	Average Poverty
1.	2004-05	42 %	32 %	37 %
2.	2009-10	—	—	29.80 %
3.	2011-12	—	—	21.90 %

A Committee headed by Dr. Suresh Tendulkar submitted their Report on poverty in 2011. According to this Report the poverty was estimated that about 27 Crores of people in India were below Poverty line in 2011-12.

Dr. C. Rangarajan Committee :

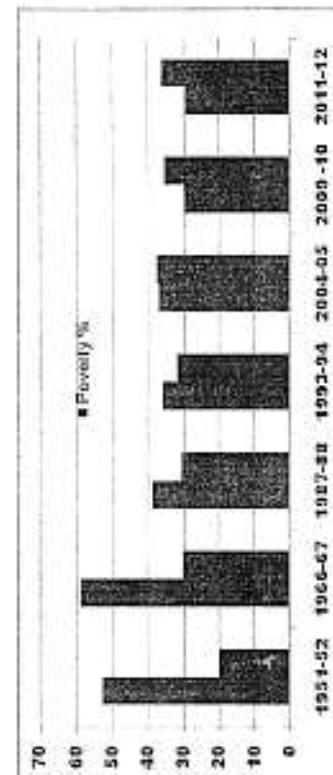
The Tendulkar Committee has had pulled the Poverty Line to the lowest side by determining very less amount of daily expenses. Therefore, the Government of India decided to re-estimate the poverty and a Committee under chairmanship of Dr. C. Rangarajan was appointed in 2012. Dr. Mahendra Dev, Dr. K. Sundaram, Dr. Mahesh Vyas, Dr. K. L. Datta were other members in the Committee. The Dr. Rangarajan Committee submitted its Report on 1st July 2014. The Dr. Rangarajan Committee applied an alternative method for Estimation of Poverty estimation. This Committee considered minimum level of expenditure on livelihood, clothing, house rent, travelling, food, education etc. according to Indian Council of Med & Research - Calories, Proteins, Fats as per age, gender etc. Accordingly, Minimum Calories intake for Rural was decided as 2155 and for Urban areas as 2090 calories and per capita consumption expenditure for Rural was fixed as Rs. 972/- p.m i.e. for 5 persons family Rs. 4860 p.m and for Urban Rs. 1407/- p.m i.e. for 5 persons family Rs. 7035/- p.m. Finally Dr. C. Rangarajan Committee - Estimates of Poverty in 2011-12 were 30.90 per cent for Rural area and 26.40 per cent for Urban i.e. 29.50 per cent as an average.

Severity of Poverty in India :

Table 2 : Per Cent of Poverty and Actual Population in Crores during last six Decades

Sr. No.	Year	Average Poverty %	Actual Population	Below Poverty Line
1	1951-52	52.66	19.87	
2	1966-67	58.60	30.17	
3	1987-88	38.90	30.71	
4	1993-94	36.00	32.03	
5	2004-05	37.20	37.57	
6	2009-10	29.80	35.50	
7	2011-12	29.50	36.30	

Graphical Representation of the above figures is shown as under :



The above graph make it clear that there is reduction in the per cent of Poverty. But the actual Population below Poverty Line is increasing steadily. Even during the phase of Economic Reforms, the Population under Poverty is constant. In spite of the Highest GDP Growth Rate of more than 9 per cent, the Poverty is not reduced as per expectations.

Why Poverty became so Chronic ?

1. Theory of Exploitation : The Poverty in India is generated through the theory of exploitation based on social hierarchy. Mahatma Jyotiba Phule writes in the preface of his booklet 'Shekaryatka And (Cultivator's Whipcart)' as "Without knowledge intelligence was lost, Without intelligence morality was lost, Without money war lost all dynamism ! Without dynamism money was lost, Without money the shudras were sank. All the misery was caused by lack of knowledge."¹¹⁷ It was the true reasoning of the Poverty in India. Karl Marx had described that the Capital does not create any value. Surplus value of commodity is created by labor. But the Capital holder gets all the surplus value as profit. That system of earning profit was declared as the exploitation of the labour by Karl Marx. In the same way, in India, the Shudra, Atishudra and Women create

the wealth through their labour. But all the benefits are enjoyed by the upper class Brahmin community. Alike Karl Marx Mahatma Phule propounded the theory of exploitation in India.

There are four factors Industrial production – Land, Labour, Capital and Entrepreneur. In that system of production, the true producers are labour only. The Land and Capital are non-living factors. It means the Land and Capital are passive factors. Only Labour and Entrepreneurs are the living factors of production. In fact, the Entrepreneurs do not take part in actual Production. Only labour is the true Producer. On the same line, in India, there were four factors of production as Shudra, Vaishya, Kshetriya and Brahmin. In this Fourfold Indian society- Shudra was foundation of Production. In India, all the productive activities were in the hands of Shudra only. Actually, as like, Entrepreneurs the Brahmin factor did not take part in any productive activity. But gradually, through the religious theories and rituals, the Brahmin started exploitation of the Shudras. Further, more social strata were created by the Brahmins in the name of the Religion and Rituals. Indian social system has become too rigid to get changed. This fact was well described by Mahatma Phule. It is very clear that roots of Poverty of Indian masses are in the Social System. Without making some prevention to such exploitation the upper class people, the Poverty in India cannot come to end. Poverty is the sin of a few & curse for masses and hence, will remain forever.

2. Economic Inequalities : India is not a poor country. India has ample Assets of production. The per capita income of India is not very low. Presently India's per year per capita income is more than Rs. 70,000/- It is sufficient to live better life in India. But, due to economic Inequalities, the rich are becoming rich and the poor are becoming poor in India. Because of social stratification, the means of production and assets are not distributed proportionately. Therefore, the poor and their successors are poor forever. On the other hand the rich and their successors are becoming richer day by day. The policy of Economic Reforms, Liberalization, Privatization and Globalization has caused to further increase in the Economic Inequalities in India.

3. Unemployment : Since the Economic Reforms started, everybody speaks for the GDP Growth rate. It is always contended by the economists that only high GDP Growth rate can reduce Poverty. But actual experience shows that the highest GDP Growth rate of more than 9 per cent could not help to reduce poverty in India. With manipulation of the figures, the Government of India is claiming that the rate of Poverty is reduced. But in Reality the rate of Poverty and the Population under Poverty is not reduced during the last decade. Because, the GDP growth theory is not scientifically checked and challenged on the basis of the facts and experience. The theories of Higher Growth rate cannot help to reduce Poverty in reality.

4. Population not the main Reason : It is always stated that the Poverty in India is due to population growth. But in 1950 to 1960 the population of India was 1/4th of today's population. The resources were more or less same which are as today. Even then there was poverty more than 55 per cent in 1950s. The population may be a reason of Poverty. But it is not the main reason. Even today the per capita income is more than Rs. 70,000/- per year. This is quite sufficient in India to live life without poverty. But it is average Income. It means Upper 10

per cent of Indian population is getting very high share of income. On the other hand, the 80 per cent population constituting masses, are getting very low income. The lowest 10 per cent of the masses are getting no income. Thus the distribution of income is the main problem behind the Poverty in India.

5. Corruption and Black Money : The corruption and Black money is the main cause of the Poverty in India. The corruption in Policy making and Implementation is rather serious, so far as the Poverty is concerned.

6. Inflation : The Black money is also a cause for poverty in India. The Black money leads to low tax collection and the increase in inflation. Due to increase in inflation, the real income in the hands of poor get automatically reduced. The inflation rises, but the income of the masses does not rise. With the same quantity of money the masses have face the inflation.

Features of Poverty in India :

- Poverty is man made and not because of shortage of Resources or means of production. People are ready to work, but are not employed. Hence they remain poor.
- Poverty is created by grabbing uneven means of Production and Income.
- Actually no poverty as average per capita Income is more than needed for a person needs to live.
- Poverty in India is Absolute Poverty (*Nirapexta*) and becoming forever i.e.no bar of Time, place, segments etc.
- Poverty in India is not Relative or Comparative.
- Poverty is a disease of Groups or Clusters, it is not related any individual or family only.

Conclusions :

The inequalities in income and wealth and the discrimination in consumption are the indicators of poverty. The mass poverty is perpetuated because of the GDP growth centric economic policies, privatization, free market economy, corruption and the insensitive mind set of the administration. The political decision makers and the administrative mechanism are quite reluctant to the real problems of the masses in India. Neglecting Agriculture and priority to service sector in free economy has been unsuitable models for our country.

Suggestions :

There is a need to redefine the criteria of Poverty as per the democratic spirit of the Nation. The Basic Needs like Food, clothing, air, water are the Living Needs. In addition to that Suitable Residence, Locality & bringing up, Education, Skill & Social esteem Productive, Creative work & reasonable Income, Timely Treatment and Health, Hygiene must be considered as fundamental needs of life. Suitable work, reasonable wages. Redistribution of assets, wealth and income. Equal opportunity to progress by democratic system are necessary for reduction in Poverty. There is a need to implement labour intensive technique of production at large scale to generate employment in India. This will certainly reduce poverty.

References :

- Datta K.L., Poverty and Development Planning in India (2014), Concept Publishing Company Pvt. Ltd, New Delhi.
- Datta Gaurav, Mahajan Ashwani, Datt & Sundharan Indian Economy (68th Ed., 2013), S.Chand & Company Ltd, New Delhi. (Short name : Datt- Sundharan, IE)

2015-2016



(A)

क्रांतिज्योती सावित्रीबाई फुले : छोड़न ब कार्य

डॉ. कृष्णा मालकर

Kranti Jyoti


Principal
Shantiniketan Sahitya Akademi
Shantiniketan, West Bengal, India

क्रांतिज्योती

सावित्रीबाई फुले जीवन व कार्य

- डॉ. कृष्णा मालकर



चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद

सर्वोच्च मात
आपलन्हा :
त्यांचे थोट
ते
माझे बडील
श्री. दादारा
आई
सौ. हीसाबा
वांना अज्ञाप

KRANTI JYOTI SAVITRIBAI PHULE
कांतिज्योती सावित्रीबाई फुले

लेखक : डॉ. कृष्णा मालकर

प्रकाशक : विन्द्य प्रकाशन - मी. दिपाली चि. कुलकर्णी,

दारा, सवंनेकर, जिवामाता कल्लो, वैदुषगंगे, औरंगाबाद, प्रमाणव्यापार - १८३३८७५३१५

मुद्रक : वेदानन अंगिसेट, औरंगाबाद, प्रकाशन क्रमांक : ५०

सर्व हक्क : डॉ. कृष्णा मालकर अध्यारजुळयणी - एव्ह इंडियुटरी, औरंगाबाद

गुणपूर्ण : सरदार आवृत्ती - प्रथमाष्टनी दे २०१६

किंपत : ५० रुपये ISBN - 976-60-53279-10-1



2015-16

Shri Ram Prasarak Mandal's

BABUJI AVHAD MAHAVIDYALYA

Dist-Ahmednagar, 414102 (MH)

Savitribai Phule Pune University, Pune)

NAAC Re-Accredited A Grade

ISO 9001- 2008 Certified.



UGC Sponsored

Two Day

NATIONAL SEMINAR

9th & 10th Oct. 2015

Mallcom
5

On

"SOCIETY, ART & CULTURE IN INDIA DURING
THE MUGHAL PERIOD"

Organized by

DEPARTMENT OF HISTORY



Principal

Shri Ram Prasarak Mandal's Shri Ram College of Science
Ahmednagar, 414102 (MH) 0241-221115

अ.नं.	पेपरचे नांव	संशोधकाचे नांव	पान. नं.
७५.	मुघलकालीन राज्यकर्त्त्याचे धार्मिक धोरण	प्रा. डॉ. कृष्ण मालकर	२८९ ते २९२
७६.	मोगलकालीन चित्रकला एक ऐतिहासिक अवलोकन	प्रा.डॉ.मंजुळकर ए.के.	२९३ ते २९६
७७.	मुघल स्थापत्यकलेचा उत्कृष्ट भव्य नमुना -हुमायूंचा मकबरा	प्राचार्य डॉ.धम्मपाल आर.माशाळकर	२९७ ते ३००
७८.	शहजानकालीन वास्तुकला	प्रा. डॉ. पाथरकर सुरेश विठ्ठलराव	३०१ ते ३०३
७९.	सम्राट अकबरकालीन धार्मिक व सामजिक सुधारणांची समिक्षा	प्रा. विशाल छवू पोटे	३०४ ते ३०७
८०.	मोगलांचा हिंदूधर्म विषयक दृष्टीकोण	नवधर सोपान लक्षण	३०८ ते ३०९
८१.	लोकसंस्कृतीचा सांस्कृतिक अनुबंध अकबर व दिने इलाही	प्रा वाईकर शोभा ववन	३१० ते ३११
८२.	मोगल सम्राट अकबराच्या कालखंडातील धार्मिक धोरण	प्रा. केरकल अर्जुन शंकर	३१२ ते ३१६
८३.	मोगल काळातील व्यापार आणि औद्योगिक धोरण	प्रा. किंशोर शेषराव चारे	३१७ ते ३२०
८४.	मुघलकालीन भारतीय अर्थव्यवस्था (इ.स. १२०६ ते १७०७)	प्रा. नंदु पेत्रस सदाफळ,	३२१ ते ३२३
८५.	मोगलकालीन घलनव्यवस्था	प्रा.डॉ.कानडे अशोक कर्हुभाऊ प्रा. संजय पाईकराव	३२४ ते ३२५
८६.	मोगलकालीन कला व स्थापत्य	प्रा. गोपाल नामदेवराव भड	३२६ ते ३२९
८७.	मोगलकालीन धार्मिक स्थितीचा आढावा	सतिष प्रल्हाद ढोरे	३३० ते ३३२
८८.	मोगल कालीन मुद्रापद्धती	डॉ. एन. डब्ल्यू. ढाले प्रा. डॉ. एच. लहासे	३३३ ते ३३५
८९.	औरंगाबाद क्षेत्रातील मध्ययुगीन गढी बांड्यातील स्थापत्य	प्रा.डॉ.राधाकृष्ण एल. जोशी डॉ. मुकुंद देवर्णी	३३६ ते ३३९
९०.	मध्ययुगीन काळातील राजपूतांचे कला स्थापत्य : औरंगाबाद क्षेत्र	डॉ.गढ्डी जी.की. प्रा. नाईक एन.डॉ.	३४० ते ३४२
९१.	मध्ययुगीन भारतीय स्त्री- जीवन	प्रा. रा. ना. पवार	३४३ ते ३४६
९२.	मोगल काळातील वैशिष्ट्यपूर्ण स्थापत्य कला	प्रा. श्री.सुर्यवंशी आर.के	३४७ ते ३४९
९३.	मध्ययुगीन महाराष्ट्र हिंदू - मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय.	प्रा. के.जे. चव्हाण	३५० ते ३५३

75

मुघलकालीन राज्यकर्त्याचे धार्मिक धोरण

प्रा डॉ कृष्ण गालकर

उपप्राचार्य व विभाग प्रमुख इतिहास, श्री आ. भा. महाविद्यालय देवगाव (र.)

ता. कन्नड, जि औरंगाबाद, 431115.

(Affiliated to Dr. B.A.M. University, Aurangabad)

प्रस्तावना :— भारतीय इतिहासात मुघलकालीन कालखंडाचा इतिहास अतिशय महत्वाचा मानला जातो. भारतात नुरलीमांचे आगमन झाल्यानंतर सर्वप्रथम तुर्की सुलतानांनी भारतात आपली सत्ता स्थापन केली. गुलाम धराणे, खिलजी धराणे, तुघलक धराणे, आणि लोदी धराणे या राज्यकर्त्यांनी मध्ययुगात भारतावर राज्य केले. लोदी कालखंडात इब्राहीम लोदीच्या विरोधात 1526 मध्ये बाबर या मुघल सुलतानाने पहिले पानिपतचे युध केले. यात बाबराने इब्राहीम लोदीचा पराभव करून भारतात मुघल सत्तेचा पाया घातला. म्हणजेच बाबराच्या कालखंडापासून मुघलांच्या इतिहासाचा प्रारंभ होतो. 1526 ते 1707 हा प्रवळ मुघल कालखंड मानता येतो. 1707 ला औरंगजेबाच्या मृत्युनंतर मुघल सत्ता 1857 पर्यंत भारतात चालू राहिली पण ती तितकी प्रभावशाली राहिली नाही.

मध्ययुगीन काळात भारतात मुघल सत्तेची स्थापणा झाल्यानंतर बाबर, हुमायून, अकबर, जहांगीर, भाहाजहान, औरंगजेब या प्रमुख मुघल राज्यकर्त्यांनी भारतात सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, सांस्कृतीक, धार्मिक धोरण राबविले. यापैकी मुघल राज्यकर्त्यांचे धार्मिक धोरण अत्यंत महत्वाचे मानले जाते. कारण मुघलांच्या राज्यात हिंदू-मुस्लिम, खिश्चन अशा विविध धर्मांचे लोक राहत होते. अशा या धर्मांप्रती आणि या धर्मांच्या नागरीकांपैकी नुघल सत्ताधीशांनी बाबर पासून ते औरंगजेबापर्यंत प्रत्येकाने कधी आकमकतेने तर कधी सहिष्णूतेचे धोरण अवलंबिले बाबराच्या कालखंडापासून धार्मिक धोरणाला प्रारंभ झाला असला तरी तो तितका प्रभावी नव्हता. पानिपत युद्धानंतर आपले भारतातील राज्य स्थिर करण्यातच बाबराच्या बराचसा वेळ खर्दी झाला. यामुळे मुस्लिम धर्म, हिंदू धर्म व त्यांची प्रजा यांच्या बाबत धार्मिक धोरण राबविण्यासाठी बाबराला वेळच नव्हता. बाबर नंतर 1530 पासून हुमायून मुघल बाद हा बनला. पण हुमायूनला आपल्या कार्यकाळात शेरशाह सुरी सारख्या बलाढी, पराकमी सरदाराविरोधात लढावे लागल्याने तो बराचसा काळ निर्वासीत होता. कारण भारतात मुघल राज्याचे भवितव्यच पणाला लागले होते. यामुळे हुमायूनने पुर्वीचेच धार्मिक धोरण पुढे चालू ठेवले. हिंदू, खिश्चन, शिया पंथाच्या लोकांना मिळणारी पारंपारीक असहिष्णू वागणूक तशीच चालू ठेवण्यात आली.¹

हुमायून नंतर 1556 ला दुस-या पानिपत युद्धानंतर अकबर हा मुघल बादराहा बनला. अकबर हाच ख-या अर्थाने मुघल सत्तेचा संस्थापक, विस्तारक मानता येतो. कारण राज्याच्या स्थैर्याच्या दृटीने, प्रजेचे हक्क व राज्याच्या मागण्या यांची सांगड घालण्याचे श्रेय अकबराकडे जाते. जिझीया व यात्राकर तसेच हिंदूना दिली जाणारी इतर अपमानारपद वागणूक बंद करून त्याने सुरांस्कृत धोरण व विगर मुस्लिमांना सहिष्णूतेची वागणूक देणे सूल केले. राजपूतांशी अकबराने लग्न संबंधही सूल केले.² असे करतांना मुस्लिम परंपरेत आवश्यक ते बदल केले. तीर्थक्षेत्रांना भेट देताना हिंदूना दयावा लागणारा यात्राकर अकबराने रद्द केला इ.स. 1564 मध्ये जिझीया कर ही रद्द केला³ हा कर म्हणजे हिंदूच्या सतत मानहानीचे प्रतिक मानले जाई. व मानसानानसात धर्मामुळे केलेला

भेदभाव सतत चालू ठेदण्याचे साधन मानले जात असे. म्हणून जिझीया कर रद्द करणे, हे कल्याणकारी राज्य आपण करण्याच्या दिशेने टाकलेले फार महत्वाद्ये पासून होते.

आपापली प्रार्थना मंदिरे बांधण्याची हिंदू व खिसचनांना परवानगी देण्याचे चतुर धोरण अकबराने हेतूपूर्वक अनुसरले होते. अनेक ठिकाणी देवळे बांधली गेली, हुगळी व इतर ठिकाणी जेसूइट लोकांना चर्च बांधण्याची परवानगी देण्यात आली.⁴ हिंदू स्त्रियांशी विवाहसंबंध करून अकबराने राजपूतांशी रक्ताचे नाते जोडले. अकबारचा मुलगा सलीमचा जन्म अनिरचा राजा भारमलची मुलगी जोधाबाई या हिंदू स्त्रीच्या पोटी झाला होता.⁵ अनेक वडया राजपूतांना अकबराच्या हातून मोठमोठया हुदयाच्या जागा मिळाल्या होत्या. या सर्व घडामोडीनीं हिंदू व मुस्लिम यांच्यातील दुही कमी होण्यास मदत झाली. बुद्दीमत्तेला कर्तवगारीची क्षेत्र अकबराने खुले ठेवले होते. सार्वजनीक सेवेत भरती करतांना धर्म, जात किंवा संप्रदाय यावर आधारीत या कोणाशीही भेदभाव केला जात नक्हता. समाज्याच्या बारा प्रांतावर नेमलेल्या बारा अर्थमंत्र्या पैकी आठजण हिंदू होते.⁶ मानसिंग, भगवानदास, तोडरमल व इतर अनेक राजपूत भाऊंसी सेवेत महत्वाची पदे भुशावू लागले. यामुळे दोन्ही समाजातील संबंधावर फार अनुकूल परिणाम झाला. सार्वजनिक सेवेत केवळ गुणावर भरती करण्याचा हा उपक्रम अकबराने नेपोलीयन व विल्यम बैटींग यांच्या फार पर्वीच केला.

अकबराने हिंदू व मुसलमानांना विभागणारी सर्व बंधने मोहून आपल्या संयुक्त राजांच्या पाया मजबूत करण्याचे त्याने प्रयत्न केले. हिंदुच्या धार्मिक सामाजिक परंपरेचे आकलन मुसलमान समाजाला जास्त चांगले व्हावे म्हणून रानायन, हरीवंश, योगवंशिष्ठ अशा हिंदू पवित्र ग्रंथाचे फारशी भाशेत भाशांतर करण्याचा हुकुम आकबराने दिला होता.⁷ याच वैली मुघल दरबार साजरा करत असलेल्या हिंदू उत्सवात अकबराने महाशिवरात्र, रक्षाबंधन, दसरा अशा सणाची भर घातली. अकबराच्या काळात धर्माची राजकारणापासून फारकत झाली. धर्म व राज्य यांचे अधिकार त्यांनी परस्परापासून वेगळे ठेवले व एकाचे दूस-यावर वर्द्यस्व होऊ दिले नाही. सती जाणाच्या हिंदू स्त्रियांना अकबराने मदत केली. स्त्रीयांना सती जाण्यासाठी भाग पाडणा—या नातेवाइकांना प्रतिबंध केला. सामाजीक कायद्याच्या बाबतीत आपण आपला अंतिम निवाडा देऊ शकतो. असे जाहीर करणारा महजर काढून अकबराने स्वतःची व राज्याची धर्मपंडीतांच्या वर्चस्वा पासून मुक्तता करून घेतली. इतर धर्मियांना घरेसाठी इबादतखाणा खुला केला. हिंदू जैन, पारशी व खिंश्चन या धर्मातील धर्मपंडीतांशी धार्मिक चर्चा व विचारविनीमय करून त्यांची धर्मतत्वे समजून घेतले.⁸ अकबराने ‘दीने इलाही’ नावाच्या नविन धर्माची स्थापना केली. या धर्मात इतर सर्व धर्माच्या उत्तम तत्वांचा समावेश केला. पण अकबराने आपल्या प्रजेवर हा धर्म कधीच लाधला नाही.⁹

अकबरानंतर त्याचा मुलगा सलोम उर्फ जहांगीर हा मुघल बादशाह बनला. सामान्यपणे अकबराच्या पावलावर पाऊल ठेवून आपले धार्मिक धोरण आखले. राज्याच्या व्यवस्थेत हिंदूना सामायून घेणे, हिंदूपंडीतांना राजाश्रय देणे, हिंदू उत्सव साजरे करणे व हिंदू प्रथाचे फारशीत भाशांतर करणे, अशा उपायांनी स्नेहभाव वाढविणे हे अकबराचे धोरण जहांगीरने पुढे यालू ठेवले. परंतु अकबराचे संपूर्ण धार्मिक धोरणाचे जहांगीरला आकलन झालेले नव्हते, यामुळे मैवाडच्या मोहीमेच्या वेळी काही मंदिराचा नाश झाला. जाहांगीर यिरुद्द खुस्त्रोने केलेल्या बंडात त्याला उत्तेजन देण्याच्या आदेशावरुन शिखांचे पाचवे गुरु अर्जुनिदेव यांना फाशी देण्यात आली. तसेच पुश्कर थेथील वराह मंदीराचा विध्वंसही करण्यात आला.¹⁰ पुढे भाहाजहानच्या काळात अकबराचे ध्येय व जहांगीराचे धोरण यातील

अंतर जारतच वाढले. शहाजहानने धर्माचे संरक्षक अशी भुमिका घेतली. त्यांनी धर्माचे अधिकार नेमले धर्मातर केलेल्या हिंदूना तो वतने देवू लागला. हिंदूचे सकतीचे धर्मातर करून त्यांना मुसलमान बनविले. हिंदू युद्धकैदयांना प्रथम गुलाम बनवून नंतर त्यांचे धर्मातर करून मुसलमान बनविले¹¹ “शहाजहानच्या मुर्तिभंजक हालचाली विषयी त्यांचा इतिहासकार अब्दूल हमीद लाहोरी म्हणतो” खांवदांच्या हे नजरेत आणून देण्यात आले की. पूर्वीच्या कारकीर्दीत पुष्टक देवळाचे बांधकाम काफरांचा मोठा बालेकिल्ला बनारस येथे सूरु झाला होता. पण ते अपूर्ण राहिले, हे काम पूरे करण्याची आशा काफरांना होती. धर्माचे संरक्षक असलेल्या खांवदांनी आज्ञा दिली की, बनारस येथे व आपल्या राज्यात असलेल्या प्रत्येक ठिकाणी ज्या देवळांचे बांधकाम सुरु होते. ती पाडून टाकावीत. आता अलाहाबाद प्रांतातून अहवाल आला की, बनारस जिल्ह्यातील शहात्तर देवळांचा नाश करण्यात आला होता”.¹² अशाप्रकारे शहाजहानचे राज्य हे औरंगजेबाच्या कर्मठ राज्याची नांदी होती. शहाजहान नंतर धार्मिकतेच्या दृष्टीने कट्टर असलेल्या औरंगजेब हा मुघल बादशाह बनला. अकबरकालीन धार्मिक धोरणाचा पुण्यपणे विसर औरंगजेबाला पडला व अकबराच्या अगदी विलक्ष्य धोरण औरंगजेबाने राबविले. उलेमांना आपल्या राज्यात अवाजवी फार मोठे महत्व देवून आपल्या असहिष्णू व छळवादी राज्याचा आरंभ औरंगजेबाने केला. धार्मिक बाबतीत स्वतंत्र्यरीत्या विचार करण्याचे त्याने सोडूनच दिले. यामुळे औरंगजेबाच्या कार्यकाळात मुघल राज्यात इतर धर्मांना अन्याय अत्याचाराला सामोरे जावे लागले. यात फक्त भारतातील बहूसंख्य हिंदूचाच समावेश नव्हता तर शिया पंथीयासारखे त्याचा स्वतःचा धर्म अनुसरणारे इतर पंथाचे अनुयायीही यात समाविष्ट होते¹³ इतर धर्मांचा छळ करणे, त्यांच्या धार्मिक श्रद्धा बदलणे व त्यांची प्रार्थना मंदीरे उध्वस्त करणे ही कृत्ये औरंगजेबाने केली.

सन 1658 मध्ये औरंगजेबाने आपला राज्यभिषेक झाल्यानंतर जुनी मंदीरे तशीच सोडून कोणतेही नवीन मंदीर बांधावयाचे नाही. असा हुक्म काढून त्याने आपला कट्टर धार्मिक धोरणाला प्रारंभ केला. बनारस, मथूरा, आयोध्या, कशी, हरीद्वार, या ठिकाणी मंदीरे पाडण्यात आली.¹⁴ हिंदूच्या धार्मिक उत्सवात ढवळाढवळ केली. सिहांसनावर आरुढ होतांना कपाळावर गंध लावण्याची हिंदूना मनाई करण्यात आली. दिवाळी, होळी हे सण साजरे करण्यासही बंदी घातली. दिल्लीच्या रहिवाशांना यमुनेच्या काठावर हिंदूच्या प्रेतांना अग्नी देण्यास मनाई करण्यात आली. हिंदूना दिलेली इनामे परत घेण्यात आली. महसूल व इतर खात्यातील अनेक हिंदूना कामावरुन कमी करण्यात आले. हिंदूना प्रलोभने दाखवून व काही वेळेस जबरदरतीने इरलाम धर्म रवीकारण्यास भाग पाडण्यात येत असे¹⁵ औरंगजेबाने धार्मिकतेच्या बाबतीत अतिशय कठोर नियम तयार करून त्याचे पालन होते किंवा नाही यावर देखरेख ठेवण्यासाठी मुहतसीब नावाचे धर्माधिकारी नेमले होते.¹⁶

अकबराने रद्द केलेला तसेच जहागीर, शहाजहानने नंतर न लावलेला हिंदूवरील जिझीया कर 1679 मध्ये औरंगजेबाने पुन्हा लावण्यात आला. जिझीया कर पुन्हा लावण्याच्या औरंगजेबाच्या उद्देशा विषयी खाफीखान म्हणतो” काफरावर बंधन घालण्यासाठी श्रद्धाळू लोकांचा देश काफरांच्या देशाहून वेगळा दाखविण्यासाठी जिझीया कर पुन्हा लावण्यात आला”¹⁷ हिंदूना जेरीस आणून धर्मातरांस भाग पाडावे आणि खजिना भरावा या उद्देशाने औरंगजेबाने हिंदूवर जिझीया कर लादला. अकबराने अस्तित्वात आणलेले सामान्य नागरीकत्व, जोपासलेले एकसंघ राज्य औरंगजेबाच्या कट्टर धार्मिक धोरणामुळे विभंगले गेले. औरंगजेबाच्या अशा कट्टर धार्मिक धोरणामुळे मुघलाविरोधात शीख, जाट, बुदेले, सतनामी राजपूत यांचे बंड घडून आले.

आ
विद
जह
अर
कर
रा
सा
चि
प्रभ
या
प्रभ
सा
नी
चि
गे

क
ङ
श
अ
१

निष्कर्ष :-

- 1) मुघलकालीन धार्मिक धोरण समिश्र स्वरूपाचे होते. बाबर, हुमायून, अकबर यांच्या काळापर्यंत उदारमतवादी, सहिष्णू व सर्व धर्मसमभावाचे धार्मिक धोरण अवलंबिले होते. पण जहागीर, शाहजहान व नंतर औरंगजेबाच्या कार्यकाळात सहिष्णू धार्मिक धोरणाची जागा असहिष्णू कटूर विध्वंसक धार्मिक धोरणाने घेतली.
- 2) मुघल राज्यकर्त्त्यांमध्ये अकबर बादशाहा हा ख-या अर्थाने साम्राज्याचा संस्थापक मानता येतो. बहूसंख्य असलेल्या हिंदू धर्मीय प्रजेच्या देशात अल्पसंख्य असलेल्या मुस्लिम राज्यकर्त्त्यांला भासन करावयाचे असेल तर हिंदूचे सहकार्य हवेच हे ओळखून अकबराने उदारमतवादी सर्वधर्मसमभावाचे धार्मिक धोरणाची अमलबजावणी केली.
- 3) अकबराच्या अगदी विरुद्ध धार्मिक धोरणाची अमलबजावणी औरंगजेब बादशाहाने केली. अकबराने मुघल साम्राज्याचा पाया मजबूत केला तर औरंगजेब व त्याचे कटूर धार्मिक धोरण मुघल साम्राज्याच्या -इसाला जबाबदार होते.
- 4) सद्यकालीन धर्मनिरपेक्ष राज्य ज्या तत्वावर आधारीत आहे. त्या तत्वांना अनुसरून राज्य करण्याचा प्रयत्न करणारा अकबर हा एक सुसंस्कृत मुघल राज्यकर्ता होता.
- 5) आज सद्यकाळात देशात सर्व जनतेच्या विकासासाठी व देशाच्या उत्कर्षासाठी सर्वधर्मसमभावाचे, समता, बंधुतेवर आधारलेले धार्मिक धोरणाची गरज आहे.

संदर्भ :-

- 1) चिट्ठनीस कृ. ना. मध्ययुगीन भारतीय संकल्पना व संस्था (खंड-1) पुणे. 2003 पृ 176.
- 2) उपरोक्त. पृ 117.
- 3) वर्मा हरीचंद्र. मध्यकालीन भारत. हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय. दिल्ली. 2007. पृ 77.
- 4) चिट्ठनीस कृ. ना. मध्ययुगीन भारतीय संकल्पना व संस्था (खंड-1) पुणे. 2003 पृ 119.
- 5) महाजन दी.डी. मध्यकालीन भारत का इतिहास. एस चंद्र प्रकाशन. दिल्ली पृ 180.
- 6) चिट्ठनीस कृ. ना. मध्ययुगीन भारतीय संकल्पना व संस्था (खंड-1) पुणे. 2003 पृ 119.
- 7) उपरोक्त. पृ 119.
- 8) देशमुख मा. म. मध्ययुगीन भारताचा इतिहास. वि दभारती प्रकाशन. नागपूर. पृ 98.
- 9) उपरोक्त. पृ 101.
- 10) चिट्ठनीस कृ. ना. मध्ययुगीन भारतीय संकल्पना व संस्था (खंड-1) पुणे. 2003 पृ 121.
- 11) उपरोक्त. पृ 121.
- 12) उपरोक्त. पृ 122.
- 13) उपरोक्त. पृ 122.
- 14) उपरोक्त. पृ 123.
- 15) देशमुख मा. म. मध्ययुगीन भारताचा इतिहास. विश्वभारती प्रकाशन. नागपूर. पृ 183.
- 16) उपरोक्त. पृ 184.
- 17) चिट्ठनीस कृ. ना. मध्ययुगीन भारतीय संकल्पना व संस्था (खंड-1) पुणे दृ 2003 पृ 125.

(6)

5/1-2016

Mallikarjuna

ISBN - 978-93-82504-36-8

Women Empowerment Issues and Challenges

Editors

Dr. Farhat Tabassum Siddiqui

Principal & Head,

Dept. of History, JSPM'S

Mahila Kala Mahavidyalaya, Aurangabad.

Dr. Shaikh Abdul Samad

Assistant Professor,

Dept. of History,

Mahila Kala Mahavidyalaya,

Aurangabad.

Dr. Sable Vanita Bhaskar

Assistant Professor,

Dept. of History

Mahila Kala Mahavidyalaya,

Aurangabad.

CONTENTS

"Heritage Management of Khanaqa" With Special Refreence to Aurangabad	
Dr. Farhat Tabassum Siddiqui	1
Jyotirao Phule and Women's empowerment	
Prof. Shailesh Raut	3
नवव्या पंचवार्षिक योजनेची महिला सबलीकरणा बाबतची भूमिका	
डॉ. हरी नारायण जमाले	प्रा. सुनिता बोर्ड खडसे
	5
महाराष्ट्रातील समाजसूधारकांची महिला सक्षमी करणाबाबतची भूमिका	
प्रा.डॉ. कृष्णा मालकर	11
महिला सबलीकरण आणि ऐतिहासिक परिप्रेक्षातील स्त्रीयांचे जीवन	
प्रा.दैशाली बागुल	15
हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील महिलांचे योगदान विशेष संदर्भ - मराठवाडा	
डॉ. विनोद बाबुराव बोरसे	19
महिला सबलीकरण आणि ऐतिहासिक परिप्रेक्षातील स्त्रियांचे जीवन	
प्रा.डॉ. देशपांडे एस.पी.	27
महिला सबलीकरण आणि ऐतिहासिक परिप्रेक्षातील स्त्री जीवन	
यास्मीन वहिद शेख	32
स्वातंत्र्य चळवळीतील महिलांची भूमिका	
प्रा. केशव अंबादास लहाने	36
महर्षी विठ्ठल रामजी शिंदे यांचे स्त्री विषयक विचार व कार्य	
प्रा.किर्ती विकास वर्मा	42
डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर आणि महिला सक्षमीकरण	
प्रा. पेरके वर्षा शेषराव	47
सामाजिक पुनरचनेत सत्यशोधक महिलांचे योगदान	
कु.मनोरमा श्रीराम राठोड	51
महिला सशक्तीकरणात शिक्षाणाची भूमिका	
ज्योति हरिभाऊ कोंदलकर	55
राजर्षी शाहू उत्रपती आणि महिला सक्षमीकरण	
कांबळे सधाकर ज्ञानोबा	59

महाराष्ट्रातील समाजसूधारकांची महिला सक्षमी करणाबाबतची भूमिका

प्रा.डॉ. कृष्णा मालकर

प्रस्तावणा

१९वे शतक हे स्त्रियांच्या सुधारणांच्या दृष्टीने अत्यंत महत्वाचे ठरले कारण या काळात सामाजिक, धार्मिक, राजकीय प्रबोधनाला सुरुवात झाली. तसे पाहता भारतात तसेच महाराष्ट्रात स्त्रीयांची स्थिती खूपच हालाख्याची राहीली आहे. १९ व्या शतकात स्त्रीयांवर होणारा अन्याय अत्याचार व शोषण या विरोधात आवाज उठवला तो महाराष्ट्रातील व बंगालमधील समाजसूधारकांनीच. इंगजींच्या संपर्कात आल्यानंतर भारतीयांना इंग्रजी शिक्षण मिळू लागले भारतीयात वैचारीक बदल होत ते आपल्या समाजातील वाईट रुढी व परंपरा, चालीरीती यांच्याकडे घिकीत्सक दृष्टीने पाहू लागले यातूनच सामाजिक व धार्मिक सुधारणा चळवळीला सुरुवात झाली. यात राजाराम मोहन रॉय, महात्मा फुले, राजर्णी शाहू महाराज, महर्णी कर्वे, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर या समाजसूधारकांनी या सामाजीक चळवळी अंतर्गत स्त्रीयांच्या सक्षमीकरणासाठी प्रयत्न केले. स्त्रीयांवर होणा-या अन्याय अत्याचाराला वाचा फोडली.

महाराष्ट्रात स्त्रिय व शूद्र यांच्या उद्धारासाठी प्रयत्नारे अग्रगण्य समाजसूधारक म्हणून महात्मा फुलेना मान दिला जातो. तत्कालीन समाजात स्त्रीयांवर अन्याय अत्याचार करण्याच्या स्त्री भृणहत्याचा, सतीप्रथा, बालविवाह, जारठविवाह, विधवाचा प्रश्न, स्त्रीयांचे अज्ञान अशा प्रथा प्रचलीत होत्या. महात्मा फुलेनी या सर्व प्रश्नाविषयी आवाज उठवला आणि स्त्री शिक्षणाचा जौरदार पुरस्कार केला. शिक्षण म्हणजे बहुजन समाजाच्या, स्त्रीयांच्या, दलितांच्या मुकितलाढाचे पहिले पाऊल होय. म्हणून महात्मा फुलेनी १८८४ साली पुण्यातील भिडेवाड्यात मुलीची पहिली शाळा काढली. ^१ स्त्री शिक्षिका मिळत नसल्यामुळे त्यांनी आपल्या पली सावित्रीबाई यांना शिक्षिका केले. त्यांना तत्कालीन समाजाकडून प्रचंड मनस्ताप सहन करावा लागला. महात्माफुलेनी उच्च शिक्षणापेक्षा प्राथमिक शिक्षणावर ज्यास्त भर दिला आणि हे शिक्षण सर्व मुला मुलीना मोक्ष मिळाले पाहिजे अशी समानतेची भूमिका घेतली. १८८२ मध्ये हंट्र शिक्षण आयोगापुढे साक्ष देतांना फुले म्हणतात की, “स्त्रियांमध्ये प्राथमिक शिक्षणाचा प्रसार मोठ्या प्रमाणात होईल, अशा प्रकारच्या उपाययोजनांना समंती दयावी”^२ १८९१ साली प्रसिद्ध झालेल्या “सार्वजनिक सत्यर्धम्” पुस्तकात महात्मा फुले म्हणतात, “मनुष्य जातीला जन्म देणारी संवर्धन करणारी स्त्री पुरुषापेक्षा निःसंशय श्रेष्ठ आहे”^३ स्त्रीयांचे दूर्यमत्व फुलेनी ओळखले होते. आणि त्यासाठी स्त्रियांनी शिक्षण घेऊन सक्षम ढावे असा विचार फुले मांडतात. २४ सप्टेंबर १८७३ रोजी महात्मा फुलेनी सत्यशोधक समाजाची स्थापना केली व त्याच्यारे सामाजिक परीकर्तनाचे मोठे आंदोलन उभे केले स्त्री-पुरुष समानतेचा पुरस्कार केला. समता, बंधूता सदाचार, भूतदया, बुद्धिप्रामाण्य, मानवतावाद या मानवी मूल्यांची जोपासना केली तत्कालीन अनिष्ट रुढी परंपराना जौरदार विरोध केला. महात्मा फुलेनी अडचणीत सापडलेल्यो विधवा स्त्रियांच्या अनौरस मुलांना सांभाळण्यासाठी

गुप्तपणे व सुरक्षीतपणे बाळंत व्हा तुम्ही आपले मुल न्यावे आगर इथे सोडावे हे तुमच्या इच्छेवर अवलंबून राहील त्या मुलांची काळजी हा अनाथ आशाम घेर्ईल" ^४ अशा प्रकारे या बालहत्या प्रतिबंधक प्रहामार्फत विधवांचा प्रश्न भ्रूनहत्या ,बालहत्या हे प्रश्न सोडवण्याचा प्रयत्न करण्यात आला.

सत्यशोधक समाजाने ब्राह्मणशाहीला विरोध करून सत्यशोधकीय विवाह पद्धती सुरु केली. त्यासाठी मराठीतून मंगलाष्टके तयार केली. या विवाहपद्धती मागे महत्वाची भूमिका होती ती म्हणजे खर्चाविना लग्न . या विवाहात फक्त पानसुपारी देण्यात येत होती. मानपान, हुंडा या गोष्टीना स्थान नसल्यामुळे हुंडयाच्या विषयावरून होणारी स्त्रियाची दुर्दशा थांबली. गेल ऑम्बेट म्हणतात की, "कुटंबसंस्थेत पुनर्रचना करण्याचे आंदोलन जोतिरावांनी सुरु केले. त्याचा सार्वजनीक सत्यागृह तसेच त्यांनी सांगितलेल्या सत्यशोधक विवाहपद्धती यात त्यांचे खरे महत्व होते." ^५

महात्मा फुले प्रमाणे राजर्षी शाहू महाराज हे देखील स्त्रियांच्या सक्षमीकरणाचे पुरस्करते व अग्रणी होते. शाहू महाराजांनी आपल्या संस्थानात स्त्री शिक्षणास प्रोत्साहान दिले तसेच तिच्या नैसर्गीक हक्काचे संरक्षण करणारे अनेक कायदेही आमलात आणून स्त्रीयांची समाजाकडून आणि कुटुंबाकडून होणारी पिळवणूक थांबविण्याचा मोठा प्रयत्न केला. या व्हारे स्त्रीमुक्ती व स्त्रीयाच्या सबलीकरणात महाराजांनी हातभार लावला.

१९१७ च्या जुलैमध्ये शाहू महाराजांनी आपल्या संस्थानात विधवांच्या पुनर्विवाहास कायदेशीर मान्यता देणारा कायदा संमत केला.^६ या नुसार विवाहाची कायदेशीर नोंद करण्याची पद्धत सुरु केली. १२ जुलै १९१९ रोजी संस्थानात अंतरजातीय विवाह कायदा लागू करण्यात आला. ^७ या व्हारे जातीनिर्बंध न पाळता विवाहाची मुभा दिली. या कायदयाव्दारे मुलाचे वय १८ वर्ष तर मुलीचे वय १४ वर्ष पूर्ण असावे असा निर्बंध घातला गेला. बालविवाह रोखणारा हा कायदा होता स्त्री पुरुष सामाजिक स्वातंत्र्याचा पुरस्कार करणारे एक कांतिकारी पाऊल होते. पुढे शाहू महाराजांनी संस्थानात घटस्फोटाचा व वारशाचा कायदा व देवदासी प्रथा प्रतिबंधक कायदाही मंजूर करून घेतला अशा सर्व कायदयाव्दारे स्त्रीयाच्या हक्काचे संरक्षण करण्यात आले.

कोल्हापूर संस्थानात स्त्रीशिक्षणाचा दृष्टकोन पुरोगामी स्वरूपाचा होता. संस्थानात मुला मुलीच्या शाळा होत्या, प्रौढ स्त्रीयांच्या शिक्षणातही महाराजांनी विशेष लक्ष घातले होते. तसेच हुशार मुलीना शिक्षणात प्रोत्साहान मिळावे म्हणून संस्थानात खास शिष्यवृत्त्या ठेवल्या होत्या. मुलीच्या प्राथमिक शिक्षणावरोबरच उच्च शिक्षणाच्या बाबतीतही शाहू महाराजांनी उदार दृष्टी ठेवली होती. राजाराम कॉलेजमध्ये शिकणा-या सर्व मुलीना त्यांनी मोफत शिक्षण दिले जात होते. स्त्री शिक्षीका तयार करण्यासाठी १८८२ मध्ये स्त्रियासाठी अध्यापक महाविद्यालय स्थापन केले.^८ येथून शिकून बाहेर पडणा-या विद्यार्थीनीना पुढे महिलांना शिकविण्याचे काम करावे लागे शुद्धातिशुद्ध मुलीच्या शिक्षणासाठी १९०७ मध्ये चांभार, महार, ढोर यांच्या मुलीसाठी स्वतंत्र शाळा काढल्या.

महात्मा फुले, शाहू महाराज यांच्या कार्य पुढे नेण्याचे काम डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी केले. गांधीजी, बाबासाहेब नांदी, विलासी, विलेसी, विलेसी, विलेसी, विलेसी, विलेसी, विलेसी,

चळवळीचा पुरस्कार केला . दलीत स्त्रीच्या आत्मभानासाठी शिक्षणाची आवश्यकता होती. शिक्षीत स्त्री प्राथमिक पातळीवर आपल्या कुंटुंबाचे आणि नंतर समाजाच्या मुक्तीचे भान ठेवेल असा डॉ.आंबेडकरांचा विश्वास होता. महाडच्या सत्याग्रही स्त्रीयांच्या समूदया समोर भाषण देतांना डॉ. आंबेडकर म्हणतात ” ज्ञान आणि विद्या या गोष्टी काही पुरुषासाठीच नाही. त्या स्त्रीयांनाही आवश्यक आहे. पुढील पीढी सुधारण्यासाठी मुलीनाही शिक्षण दिल्या शिवाय राहू नका ”⁹ अशा प्रकारे डॉ.आंबेडरांनी स्त्री शिक्षणाला आग्रकम देवून ज्ञानार्जना पासून कोणीही वंचीत राहू नये यासाठी प्रयत्न केले. शिक्षण हे सामाजिक उन्नतीचे व भौतिक परिवर्तनाचे साधन असल्याने दलीत स्त्री पुरुषांना शिक्षणाची कासधरावयास सागीतले डॉ. आंबेडकरांनी मुला मुलीच्या एकत्र शिक्षणाचा पुरस्कार करून मुंबई येथे सिद्धार्थ महाविद्यालय व औरंगाबाद येथे मिलीद महाविद्यालय स्थापन केले. डॉ. आंबेडकांनी तत्कालीन मनूस्मृतीचे चिकित्सक विश्लेशन केले. स्त्रीयावर गुलामगीरीचे जीवन लाधण्याचा स्त्रीयांचे हक्क हीरावून घेणा-या त्यांचे शोषण करणा-या या मनूस्मृतीचे डॉ. आंबेडकरांनी दहन केले. आणि स्त्री पुरुष समानतेचा स्वातंत्र्यांचा पुरस्कार केला.भारताला स्वातंत्र्य मिळाल्या नंतर डॉ. आंबेडकरांनी राज्यघटनेबाबरे स्त्रियांच्या स्वातंत्र्याचा विचार करून पुरुषप्रमाणे स्त्रीयांना अधिकर दिले. या अधिकारावर गदा येऊ नये म्हणून २१ ऑगस्ट १९४८ हिंदू कोड बिल मांडले ¹⁰ यात आंतरजातीय विवाहास मान्यता एक पली तत्वाचे बंधन, पुरुष प्रमाणेच स्त्रीला सुधा घटस्फोट मागण्याचा अधिकार मुला इतकाच मुलीला सुधा वडिलांच्या मालमत्तेत अधिकार इ. बाबीचा समावेश होता. या बिला व्यारे स्वातंत्र्योत्तर काळात स्त्रीयांच्या अधिकाराचे कायद्यात्मक दृष्टीकोनातून जतन, संवर्धन करणारे कार्य केले गेले. पुरुषप्रधाण समाजातील स्त्रीदास्य याव्यारे संपणार होते. म्हणून आंबेडकर म्हणतात ”मी भारतीय राज्यघटना निर्माण केली त्यापेक्षाही हिंदूकोड बिल माझ्या हातून तयार झाले याचा आनंद होतो”.¹¹

डॉ. आंबेडकरांनी स्वातंत्र्य भारतात राज्यघटना तयार केली व त्यातही स्वातंत्र्य समता वधूता या त्रियुक्तीवर आधारीत समाज निर्मातीसाठी स्त्रियांच्या हक्काचे संरक्षण करून पुरुषांच्या वरोबरीचे अधिकार बहाल केले.

निष्कर्ष :-

- १) १९व्या शतकात महाराष्ट्रात स्त्रियांसंबंधी बालविवाह, विजोड विवाह, पडवा पद्धती, विधवाविवाहास बंदी, हुंडयाची प्रथा, सतीप्रथा, जातीप्रथेचा जाच अशा समस्या प्रचलित होत्या.या समस्याव्यारे तत्काळात समाजात स्त्रीयावर अन्याय अत्याचार व शोषण होत होते.
- २) म. फुले, राजर्षी शाहू महाराज आणि डॉ. आंबेडकर या तिन्ही पुरोगामी सुधारकांनी स्त्रीदास्य मुक्तीसाठी स्त्री शिक्षणाचा अतिशय हिरीरीने पुरस्कार केला. कारण शिक्षण हेच स्त्री सक्षमीकरणाचे प्रमुख साधन आहे.
- ३) म.फुले शाहू महाराज, डॉ. आंबेडकर हे कर्ते समाजसुधारक होते. यांनी स्त्रीयांच्या सक्षमीकरणासाठी प्रत्यक्ष शिक्षणसंस्था स्थापन केल्या. फुलेनी पुण्यात, शाहू महाराजांनी

आजच्या काळात कोल्हापूरचे राजाराम महाविद्यालय, मुंबईचे सिद्धार्थ महाविद्यालय व औरंगाबादचे मिलीद महाविद्यालय आजही शिक्षणाचे कार्य करीत आहे.

- ४) १९ व्या शतकात म. फुलेनी सत्यशोधक चळवळ, शाहू महाराजांनी ब्राह्मणेत्तर चळवळ आणि डॉ. आंबेडकरांनी दलीत चळवळ या मार्फत स्त्रीयावर होणा-या अन्याय अत्याचाराला बाचा फोडली सामाजिकराढी परंपरेला विरोध केला.
- ५) फुले, शाहू, आंबेडकर यांच्या कार्यामुळे स्त्रीयांच्या अधिकारांना कायदेशीर कवच मिळाले, यामुळे सध्याच्या काळात स्त्रीयांना सकर्तृत्वाद्वारे उंच भरारी घेणे शक्य होत आहे.

संदर्भ :-

- १) पाटील वं.सि. म. जोतिराव फुले, महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडळ, मुंबई, १९९० पृष्ठ कं १६.
- २) ऑम्हेट गेल, जोतिराव फुले आणि स्त्री मुक्तीचा विचार, लोकवाङ्मय गृह प्रकाशन, मुंबई, २००९, पृष्ठ. ११.
- ३) पाटील पद्मजा आणि जाधव शोभना, भारतीय इतिहासातील स्त्रीया, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर, २००७, पृष्ठ. ११८.
- ४) उपरोक्त, पृष्ठ ११९.
- ५) ऑम्हेट गेल, जोतिराव फुले आणि स्त्री मुक्तीचा विचार, लोकवाङ्मय गृह प्रकाशन, मुंबई, २००९, पृष्ठ. ११.
- ६) पवार जयसिंगराव (संपा) राजार्पी शाहू महाराज त्वारक ग्रंथ, महाराष्ट्र इतिहास प्रबोधिनी, कोल्हापूर, २००७, पृष्ठ. ११२.
- ७) उपरोक्त, पृष्ठ ११९.
- ८) उपरोक्त, पृष्ठ ११९.
- ९) भोस्ते नारायण, महाराष्ट्रातील स्त्रीविषयक सुधारणावादाचे सत्ताकारण, ताईची प्रकाशन पुणे, २००८, पृष्ठ २९६.
- १०) उपरोक्त, पृष्ठ ११९.
- ११) उपरोक्त, पृष्ठ ११९.

Boyc -

15-16

12

ISBN : 978-81-930150-8-7

**International Conference
on
II Sant Mahatmyanchi Bhumi^{ll}
Histories of Interactions, Connections &
Subjectivities in Aurangabad Region**

19-20-21, June, 2015.

Conference Souvenir

Organized by

Urdu Education Society, Aurangabad
Chishtiya College, Khuldabad & Aurangabad History Society, Aurangabad

Sponsored by

UGC & ICSSR New Delhi &

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad (M.S.) INDIA

International Conference

On

"Sant Mahatmyanchi Bhumi"

Histories of Interactions, Connections and Subjectivities in Aurangabad Region

19th to 21st June, 2015

CONFERENCE SOUVENIR



Urdu Education Society
Chishtiya Arts College, Khuldabad

&

Aurangabad History Society
 Aurangabad

Website: http://ccak.ac.in/about_us.php Website: <http://www.ruralsouthasia.org/ahs.htm>

Published by: Copyright ©Aurangabad History Society and Chishtiya Arts College
Address: Old Tehsil Building, Opp. Police Station,
Khuldabad, Pin Code No.431101
Aurangabad, Maharashtra, India
Phone: 02437-241124 / 241270 / 241161.

First Published: 2015

Publisher: Saudagar Publications, Roshan Gate, Aurangabad
ISBN: 978-81-930150-8-7

28. Dr. Rekha Shelke, Dr. Asha Deshpande, & Mr. Sanjay Paikrao, <i>The Spiritual Ethos Of Saint Dyaneshwar & Its Humanitarian Values,</i>	66-68
29. Dr. Pratap Patil, Spiritual Communication Of Saint Tukaram Through His Abhangas,	69-70
30. Dr. Farhat Tabassum Siddiqui, Reformation and Linguistic Aspect Of Khankhas: With Special Reference To Aurangabad,	71
31. Sanket Sharad Kulkarni, Medieval Hindi Poetry In Marathwada (With Special Reference To Saint Culture),	72-74
32. Ganesh Madanrao Shinde, Social Reforms through Eknathi Bharud,	75-76
33. Muphid Mujawar, Sant Eknath's Hindu-Turk: A Dialogue With Satire To Understand The Representations Of Communities And Precolonial Identities,	77-78
34. Aditya Waghmare, Yeola – Land Of Saint Raghujibaba,	79-80
35. Snehal Kulkarni, Temples Of Aurangabad: Legends and Mythologies,	81-83
36. Prakash Lakshman Shivbhakte, The Social-Religious Influence Of Sufism In Later Medieval Deccan,	84-85
37. Ghadge Gautam Venkati & Dr. A.Y. Dalve, The Impact Of Economic And Ecological Factors On Rural (Peasants) Culture With Special Reference To Beed District,	86-87
38. Baliram Paikrao, Buddhist Religious Centers In Marathwada Region Under The Vakataka Period,	88-90
● 39. Dr. D. M. Bhosle, National Integration And Cultural Communication: Vision Of Saint Namdev In The Bhakti Cult Of Maharashtra,	91-93
40. Hakim Mohd. Sharifuddin Shah, Sailani Baba,	94
41. Dr. Shaikh Shahjahan, Impact Of Sufism On India,	95
42. Dr. Sandesh M. Wagh, A Study Of Social Views Of Saints In Maharashtra,	96
43. Dr. Smita Shinde, Sant Janabai: Life and Work,	97
४४. डॉ. एजाज अहमद, औरंगाबाद क्षेत्र के सूफीयों का आगमन (सन् १३०० से सन् १७००),	९८
४५. प्रो. डॉ. गोपालसिंह बटिरे, सबॉल्टर्न सुफी शास्त्रियों का प्रभाव आज भी, प्रथा, अंतर्राष्ट्रीय : एक अध्ययन,	९९-१०२
४६. डॉ. संजय राठोड, राजा-महाराजाओं एवं संत जवाहिरिया की भूमि : औरंगाबाद,	१०३
४७. हॉ. जाफर घंटोखर लखनलाल, कबीरदासजी के विचारों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण,	१०४
४८. प्रा. राहुल चोकाजी साहने, संतार्थी सामाजिक भूमिका,	१०५-१०६
④९. इन्द्रेनद बोरसे, सपाइज जिंतायणी संत एकनाथ, ✓	१०६-१०८
५०. डॉ. ताहेर एच. पटाण, तुकोबा : नाथ विचाराचे विस्तारीत रूप,	१०९-१११
५१. प्रा. सच्यद मुखीव भुमा, खानकाहाचे सामाजिक प्रभाव,	११२-११३
५२. डॉ. झी. एच. पटेल, दक्षिण भारतीय सुफी संत – ऐतिहासिक विवेचन,	११४-११६
५३. राम गंगाधर वडोदरे, संत तुकाराम योगी मानवी योगाचा पहलेला वेद,	११७-११८
५४. डॉ. बाबाळे नितीन पांडुरगा, प्रा. कदम योगीराम विश्वुल, श्री. संत नामदेवगायेतील समाजदर्शन,	११९.१२१
५५. श्री. मायारी विजय साहेबराव, श्री. मायारी विजय साहेबराव, महाराष्ट्रातील समाजाला संतार्थी शिकवण,	१२२-१२३
५६. प्रा. घाडगे रघुनाथ व्यंकटी, डॉ. झी. व्ही. चौधरी, १४ आक्टोबर १९५६ व्या	१२४-१२५
५७. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या धर्मांतराचा मराठावाहिनीला दलित संस्कृतीषर पहलेला प्रभाव,	१२४-१२५
५८. प्रा. घाडगे सोमनाथ व्यंकटी, प्राचार्य डॉ. दलबेंग. वाय., डस्टोइ	१२४-१२५
५९. कामगारमहिलांच्यासंस्कृतीचा अभ्यास - विशेष संदर्भ : झीड जिल्हा,	१२६-१२७
६०. प्रा. शिंदे अनिता व्यंकटराव, झीड जिल्हाचा साप्तसेले सुफी-संताचे योगदान,	१२८-१३२
६१. विश्रा दांडगे, संत साहित्यातुन सामाजिक बांधिलकी,	१३३
६२. जगताप एन. झी., महानुभविय साहित्यांचा अनवार्थ,	१३४-१३६
६३. प्रा. झी. बाबाळे नितीन, अतिशय क्लवेस्ट,	१३४-१३६
६४. विजय साखरे, मध्ययुगीन काळातील संत यशाचा वसवेष्ट : एक दृष्टिक्षेप,	१३७-१३९
६५. दिपिका हिमत पवार, आहित्याचा होलकर आणि घोरोहर यंदिराचा डत्कर,	१४०-१४१
६६. अमोल गंगणे, पत्ति आनंदेलन और संत तुकाराम,	१४२-१४४
६७. खिलारे रवि, बद्द विचारांची मराठावाहिनी अभ्यास –	१४५-१४६

समाज चिंतामणी संत एकनाथ

प्रा. डॉ. विनोद बोरसे

श्री आसारामलो भाइवलदार पहाडियालय,
देवगांव रंगारो, ता. कजड, नि.ओरंगाबाद

महाराष्ट्रात संतांची फार दीर्घ अशी परंपरा चालत आलेनी आहे. वाहेरील वातावरणात व परिस्थितीत प्रचंड परिवर्तन झालेले असले आणि निसर्गात. स्वभावाच्या भाग असतो. तो जन्मताच असतो. संतवृत्ती ही शिक्षणाचे अंग येत नसते. आपल्या आध्यात्मिक ज्ञानदेव, संत नामदेव, संत रामदास, संत एकनाथ, संत विसोबा खेचर, संत बहिणाबाई यांचा जन्म मराठवाड्यातीलच! संतांचे कार्य खाली व वृद्धिंगत खाली, विकारांचे व अनीतिचे प्रावल्य वाढू येये, लोकांत प्रेम, सहकार्य, निर्देश, निर्मत्सरता, औदार्य, सहिष्णुता, अदृश्य असतो. पण तो खरा व प्रत्यक्ष असतो. जर समाजात संत, साधु नसले तर समाज जीवन उद्धस्त होण्यास वेळ लागणार नाही. अदृश्य शक्तीचे अवमूल्यन आणि अवहेलना करून समाजहित सापता येत नाही.

महाराष्ट्रात होऊन गेलेल्या सर्व संतांच्या प्रभावलीत संत एकनाथांचे स्थान हे देशिष्ट्यपूर्ण आहे. ओरंगाबाद जिल्हातील पैठण येथे इस. १५३३ मध्ये संत एकनाथाचा जन्म झाला. ते लहान असतांनाच त्यांच्या फिल्हाला पूर्ण झाला मग त्यांचे आजोबा संत भानुदास स्वार्मांकडे आले. तेथे त्यांच्याकडे राहुन त्यांनी गुरुकृपेच्या साहाय्ये ज्ञान आजिंत केले. ज्ञानप्राप्तीनंतर ते पैठण येथे परतले.

पैठण येथे परतल्यानंतर एकनाथांनी प्रचंड ग्रंथ संपदा निर्माण केली. भावार्थ रामायण, श्रीमदभागवत, रुक्मीणी स्वर्यंवर या सारखे भक्ती आणि चितनाने परिपूर्ण असणा-या ग्रंथाची मांडणी केली. मात्र त्यांनी ज्ञानेश्वरीचे केलेले शुद्धीकरण हे त्यांचे अत्यंत महनीय कार्य समजात्या जाते. ज्ञानेश्वरांनी ज्ञानेश्वरीची रचना केली हे सत्य पण ते समाधीस्त झाल्यानंतर आणि अन्य विचारांची सरमिसळ इताली होती. हे लक्षात घेऊन एकनाथांशी ज्ञानेश्वरीच्या सर्व पाठांना, आवृत्तीना निळवुन त्याची शुद्धप्रत तवार केली जी आजतागायत असित्वात आहे. या कार्यांशिवाय एकनाथांनी भारूडेही रचली. भारूडांचा जन्म झानदेवाच्या काव्यत झाला असे मानतात. नामदेव तुकाराम यांनोही भारूडे रचली परंतु एकनाथांनी रचलेल्या भारूडांची जी लोकप्रियता आणि काव्यजेयता प्राप्त केली तो अन्यांच्या भारूडांनी नाही, हे सत्यच आहे. संत एकनाथांनो जवळपास १२५ विषयावर ३०० च्या वर भारूडे रचली आहेत. प्रतिभा आणि समाजजागिंव यांच्या साहाय्ये निर्माण झालेल्या भारूडात व्यापकपणा, सौदर्य, दस्तशीतपणा, यिनोद, प्रवोधन आणि अध्यात्म वोध हे महत्वाचे एवढे गुण आढळतात. भारूड मृटले की नाथांची मृती होते इतकी ती प्रभावी आहेत. त्यांनी आपल्या भारूडातुन केलेले समाजप्रवोधन हे अनुलनीय आहे. वोधाचा बोजडपणा व कडवटपणा न ठेवता समाजातील व्यक्तिवर वा चालिरीतीवर टिका असते. त्यांनी "जोहर" नामक भारूडात मांडलेल विचार जाती अंताच्या दृष्टिने महत्वपूर्णच आहे यात त्यांनी महट्टले.

का रे महादा मदमस्ता । का हो ब्राह्मण वाचा भलतेची बोलता ॥

तुझे बापाये भय काय । माय-बन तुमचे आमचे एकच हाय ॥

एक ऐसे नको बोलो । निर्गुणापासून अवघे झालो ।

निर्गुण तुला कया ठव्ये । आत्मरूपी शोधूनी पहावे ।

आत्मरूप आम्हा कळेना । नाही तरी संतासी कारण जा ना ।

संतांशी गेल्याने काय होते । चौं-यांशीचा फेरा चुकतो ।

हे ज्ञान कोणापासूनी प्राप्त झाले । एका जनादंन प्रसादे कळ्ये आले ।

एक नाथांना परंपरागत कर्मकाण्डाचा धर्म मान्य नक्ता. धर्मांच्या नावाखाली अधर्माचे जे आचरण करतात त्यांच्यावर त्यांनी टिका केली आहे. ते अनेकदा रुद्धी विरुद्ध निर्भयपणे गेले. त्यांनी फक्त मानवधर्म आचरणात आणला होता. सर्वसामान्य गरीब, अज्ञानी, रुद्धीवद्य पण अंतरीच्या प्रांगंत दलिता विषयी त्यांना ममत्व होते. असृश्याच्या रुद्धेवड्या पोरासा कडेवर उचलुन घेणारा, श्राद्धिय अन्न ग्राद्याणांआधी अंत्यजाना वाढणारा, संत एकनाथ हे समृद्ध समाज जागिंव असणारा संत होते हे निविचाद! नाथांची आध्यात्मिक उंची ज्ञाने मोठे होती तशी त्यांची समाजप्रियताही व्यापक होती. त्यांनी समाजातील दुर्गुण, दृष्टपणा, दंभ, ढांग, विषमता, स्वार्थ, द्वेष, प्रसर इत्यादी दोषावर टिका केली. जाती-यण-विद्या यावर आधारलेल्या भेदांना झुग्रून समता व सदयता याचा जोमाने पुरस्कार केला. एकनाथांच्या मोठेपणाचे वर्णन करतांना श.दा. पॅडसे यांनी महट्टले -

"ज्ञानेश्वरानंतर महाराष्ट्रावर आलेल्या अस्यांनी सुलतानी आपत्तीमुळे उच्चस्त अवनत झालेले महाराष्ट्राचे सामाजिक जीवन शक्य तितके सुधारून त्याला पुन्हा सहभ व दैतन्यपूर्ण करण्यास नाथांनी भागवत धर्म प्रसाराचे ज्ञानदेव नामदेवाचे कार्य त्यांच्यापेक्षाही कठिण परिस्थितीत अडिच शतकानंतर पुन्हा हाती घेतले. दोंग व दंभ याला उत आला असत्ता नाथांनी शांतपणे निराशा न होता अन्यंत उच्च दर्जाचे समाजोधाराचे कार्य केले ही त्याच्या लोकोत्र व्यक्तिमत्वाची खूण आहे". मानवी समतेला आधारभूत असणारा, मानवा मानवातील खंद खुरे नसून कृत्रिम आहेत असे सांगणारा आढ़ताचा सिद्धांत नाथांनी त्यांच्या भागवतात शासीय परिपाळा योग्यानही सुलभ व परिणामकारक करून सांगीतला. संत एकनाथांनी समाजमानस निरोगी आणि विकसित दृढ राहावी याकरिता स्वतःचे आचरण समाजापुढे ठेवले. एकनाथांचे कार्य इतके मोठे आहे की त्यांच्या एका खांद्यावर तुकाराम व दुस-यावर रामदास उपे आहेत. या दोघा संतांच्या कार्याच्या पाया घालणा-या समाज चिंतमाणी संत एकनाथांचे निधन इ.स. १५१९ ला झाले.

संदर्भ -

१. श्री संत एकनाथ: रां.दा. पेंडसे.
२. मराठी वाडमयाचा इतिहास, छंड-२ ल.दा. पांगारकर.

मराथ्यांच्या शतहसावे दुर्जनरवजा

REWRITING OF THE MARATHA HISTORY

संपादक

डॉ. जगदीश भेलोडे डॉ. कारभारी भानुसे

डॉ. प्रकाश महाजन



Rewriting of the Maratha History

मराठ्यांच्या इतिहासाचे पुनर्लेखन

डॉ. जगदीश व्ही. भेलोडे, डॉ. कारभारी भानुसे, डॉ. प्रकाश महाजन

प्रकाशक

प्राचार्य

शिवाजी कला, विज्ञान व वाणिज्य

महाविद्यालय, कन्नड

मुख्यपृष्ठ

अपूर्वा ग्राफिक्स, औरंगाबाद

अक्षर जुळवणी

वेदिका टाईपसेटर्स,
औरंगाबाद

© लेखकाधीन

१० ऑगस्ट २०१५

मुद्रक

चिन्मय प्रकाशन,
सवणेकर बिल्डिंग, जिजामाता
कॉलनी, पैठणगेट, औरंगाबाद.

मो. ९८२२२८७५२९९

Email-chinmayprakashan@gmail.com

₹ : ५५०/-

ISBN - 978 - 81 - 925220 - 3 - 6

मराठ्यांच्या इतिहासाचे पुनर्लेखन या संशोधन ग्रंथातील सर्व मते, विचार आणि
अभिग्राय संबंधित लेखकांचे असून त्याच्याशी संपादक, प्रकाशक, मुद्रक, वितरक
सहपत असेलच असे नाही.

डॉ. विनोद बाबुराव बोरसे
इतिहास विभाग,
श्री. आ.भा. महाविद्यालय देवगाव (र.) ता. कन्नड,

हिंदवी स्वराज्याच्या स्थापनेप्रभाणेच एक विशेष अंग म्हणून छत्रपती शिवाजी महाराजांनी मराठ्यांच्या स्वतंत्र आरमाराची निर्मिती करून सागरी सत्तेची स्थापना केली होती. सिद्धी, टोपीकर (इंग्रज), फिरंगी (पोतुंगीज), वलंदेज (डच) व फरासीस (फ्रेंच) आदी परकीयांच्या सागरी सामर्थ्यांशी तोऱ देण्यासाठी शिवरायांनी नोका बांधण्यासाठी प्रारंभ करून स्वतःचे आरमार कल्याण शहरात उभे केले होते. या आरमारी सत्तेस आवश्यक असलेली किनारपट्टीची सुरक्षितता त्यांनी निश्चित केली होती. सिंधुदुर्ग, विजयदुर्ग, रत्नदुर्ग, पद्मदुर्ग, कुलाबा, खांदेरी आदी किल्ले म्हणजे त्या काळातील सागरी सत्तेच्या संरक्षणाची अभेद्य अशी केंद्रे होती यापेकी काही किल्ले शिवरायांनी मुददामहून बांधून घेतली. काहीची दागांजी केली तर काही हस्तगत केली होती.

युरोपिन लोकांचे भारतात आगमन झाल्यानंतर त्यांनी पश्चिम किनान्यावरील बहुसंख्य महत्वाच्या बंदरावर ताबा घेतला यात प्रामुख्याने सांगावयाचे झाल्यास डंचानी वॅगुलां, पोतुंगीजांनी वसई, चेऊल, दमण, व गोवा आदी बंदरे ताब्यात घेतली होती. तर सिद्दीकडे कुलाबा, जंजिरा, तर इंग्रजाकडे मुंबईसह कारवार व सूरत आदी ठिकाणी त्यांच्या महत्वाच्या व्यापारी पेठ होत्या. या सर्वांचा बंदोबस्त करावयाचा असेल तर आपले स्वतंत्र आरमार असावे असे शिवरायांना वाटत असावे तसेच अरबी समुद्राच्या वाजूने शत्रुराष्ट्रापासून स्वराज्याच्या मुलूखांचे आरमारापासून स्वरंक्षण करणे आवश्यक आहे तसेच इंग्रजाजवळ बलिस्ट आरमार असल्या कारणाने त्यांची दहशत इतर राष्ट्रास किती वाटते हे त्यांच्या प्रत्यवास आले होते या कारणामुळे शिवरायांनी स्वतःहाचे आरमार तयार करण्याचे ठरविले होते १. तर या आरमाराच्या बाबतीत सभासद व चिटणीस वर्खरीत द्रव्यप्राप्तीस्तव शिवरायांनी आरमार निर्माण केल्याचा उल्लेख दिसून येतो. २ तर गो.स.सरदेसाई ३ यांच्यामते, मगांनी आरमाराची उत्पत्ती ही जंजिरा-झाज्या गोटीपाने ह

ाल्याचे सांगतात . तसेच आज्ञापत्रातही रामचंद्र अमात्य आरमारचे महत्व सांगताना म्हणतात . आरमार म्हणजे स्वतंत्र एक राज्यांगच आहे. जसे ज्यास अश्वबल तसी त्याची पृथ्वीप्रिणा आहे. तव्दतच ज्याजवळ आरमार त्याचा समुद्र याकरीता आरमार अवश्यमेव करावे ^४ असे म्हटले आहे.

छत्रपती शिवराय हे काळाची पावले ओळखणारे दृष्टे राजे होते म्हणूनच त्यांनी स्वतंत्र आरमाराची निर्मिती केली होती. यामुळे इंग्रजही त्यांचे वर्णन करताना पुर्वकडील देशातील सर्वश्रेष्ठ मुत्सददी ^५ (The Greatest Diplomatist of the Eastern Parts) असे करतात तसेच त्यांच्या या आरमारातील प्रगतीमुळे त्यांना , आधूनिक भारतीय आरमाराचे जनक ^६ (Father of Modern India Navy) असेही म्हटले जाते.

पोर्टुगीज दप्तरातील आधारप्रमाणे शिवरायांनी सन १६५९ मध्ये आरमाराची मुहूर्तमेढ रोवली होती. ^७ खास जहाजे बांधण्याच्या उद्योगासाठी रुय लैतांव व्हियेगस व त्याचा मुलगा फेनांव व्हियेगस लैतांव या नोशिल्यांच्या नेतृत्वाखाली ^८ आपली जहाजे बांधण्यास सुरुवात केली होती. तसेच या पोर्टुगीज नोशिल्यांच्या हाताखाली सुमारे तीनशेचाळीस पोर्टुगीज कारागोर व इतर लोक काम करीत होते. आर्किव्ह इस्तो रिकु उल्यामारीनुमध्ये शिवरायांच्या नोकरीत तीनशे पोर्टुगीज शिपाई ^९ असल्याचा दाखला मिळतो तसेच हा जहाजबांधणीचा उदयोग प्रामुख्याने कल्याण , भिवंडीची खाडी, पनवेल, कुलाबा, विजयदुर्ग मालवण ^{१०} येथे चालत असे तसेच या जहाजबांधणीसाठी लागणारे सागवानी लाकूड हे वसईच्या परिसरात मोठ्या प्रमाणावर मिळत असे या लाकडाच्या लागवडीसाठी तसेच संवर्धनासाठी विशेष दक्षता घेतली जात असे.

छत्रपती शिवरायांच्या आरमारातील जहाजांच्या संख्येविषयी इतिहास संशोधकांची वेगवेगळी मते असून चित्रगुप्ताने शिवरायांच्या नौकांची संख्या ६४० दिली आहे. जदुनाथ सरकारांनी १६० हा आकडा दिला आहे. तर सभासद बखरीत ती ४०० च्या आसपासचा आहे. डॉ. फ्रायरने शिवरायाजवळ ३०० छोट्या नौका असल्याचा उल्लेख केला आहे. ^{११} त्यांचा हा जहाजबांधणीचा उदयोग इ.स. १६५३-१६८० या काळात मोठ्या प्रमाणावर चालत होता . एकंदरीत ४५ प्रकारची वेगवेगळी जहाजे किंवा नौकांचा त्यात समावेश होता. ^{१२} यात प्रामुख्याने गुराब, तरांडी, गलबते, दुवारे, शिवाडे, पगार, मचवे, बांधीर, तिरकटी, पाल, ^{१३} तारवे ^{१४}, महागिन्या , पडाव, ^{१५} आदी प्रकारच्या जहांजाची नावे

या आरमारातील जहांजाचा केवळ स्वंरक्षण हाच उददेश नसून या जहाजांच्या माध्यमातून परकीय व्यापार १६ ही मोठ्या प्रमाणावर चालत असे इ.स. १६६४ मध्ये दक्षिणेतील महत्त्वाची अशी आठनंक बंदरे महाराजांच्या अधीन होती. प्रत्येक बंदरातून दोन-तीन अद्यवा अधिक ही व्यापारानोका इराण, बसरा, मक्का १७ आदी दुरदुरच्या ठिकाणी व्यापारसाठी जात असल्याचे आपणास तत्कालीण संदर्भ मिळतात. एवढेच नके तर व्यापाराचे महत्त्व ओळखून खास मिळच्या व्यापाराकरीता शिवरायांनी वासंतिक नोंदल ही तयार ठेवले होते. मस्कत व मोचा या अरबाचा बंदराशी व्यापार करण्यासाठी तीन ढोल काठयांची जहाजे त्यांनी बांधली होती. १८ या परकीय व्यापाराबरोबर समुद्री चाच्यांना रोखणे, समुद्री दळणवळणापासून जकात बसूल करणे, आपल्या बंदरांचे स्वंरक्षण करणे, १९ आदी साठी या आरमाराचा उपयोग शिवकाळात केला जात असे.

छत्रपती शिवरायांनी निर्माण केलेल्या या नविण राज्यांगास मायनाक व दर्यासारंग असे दोन नोंदलाचे प्रमुख अधिकारी असत व्यंकटजी सारंगजी व दौलतखान हे दोन अधिकारी या पदावर कार्यरत होते. दौलतखानच्या पुर्वी इभ्राहिमखान हा महाराजांचा दर्यासारंग होता. २० या सशस्त्र आरमाराच्या माध्यमातून शिवरायांनी व्यापाराबरोबरच परकीयांवरही जबरदस्त वचक बसविला होता. खांदेरी व उंदेरी बेटावरील तटबंदीच्या प्रकरणात शिवरायांच्या युद्धनोकांनी इंग्रजांची जी फटफिंती केली त्यांचे डॉ. पे अरने २१ आपल्या ग्रंथात केलेले वर्णन अत्यंत महत्त्वपूर्ण आहे तसेच खांदेरीच्या या विजयाविषजी इंग्रज म्हणतात. So that From it , he might watch the Bombay shipping before it entered our Hellspont . २२ तसेच इंग्रजांच्याच रिकेंज नामक सोळा तोफांची गलवताची व मराठ्यांच्या आरमाराची बरीच चकमक उडाली होती. आमं नामक इतिहासकाराने यावेळी मराठ्यांच्या गलवताची रचना व उल्ही इंग्रजी जहाजापेक्षा उत्तम होती असे म्हटले होते. २३ खांदेरीची ही लढाई आरमारी वल्ही इंग्रजी जहाजापेक्षा उत्तम होती असे म्हटले होते. शिवरायांनी उभारलेले आरमार योग्य लढाई असल्यामुळे तिचे वेगळेच महत्त्व आहे. शिवरायांनी उभारलेले आरमार योग्य नेतृत्वाखाली शत्रुशी यशस्वी झुंज देवू शकते हे या लढाईन सिद्ध केलेले आपणास दिसून येते.

शिवरायांच्या या वाढत्या आरमार सामर्थ्याबदल विजरेई कोंदी द साहिसॉति याने एका पत्रात व्यक्त केलेले मत उल्लेखनीय आहे ते म्हणतात. शिवरायांच्या नोंदलाची एका विजेतील व्यापाराच्या विरुद्ध आम्ही सुरुवातीपासूनच कारवाई न केल्यामुळे

तसेच शिवरायांच्या या आरमाराविषयी नेंवसाहेब कोकणच्या इतिहासात म्हणतात, शिवाजी हा समुद्रकिनाऱ्यावर राज्य करणाऱ्या तत्कालीन मुसलमान अथवा खिस्ती सत्ताधिकाऱ्यापेक्षा कमी प्रतिचा राज्यकर्ता नव्हता असे प्रांजलपणे कबूल केले आहे. २५ यावरुन आपणास शिवरायांनी उभारलेल्या या आरमाराची सहज कल्पना येते.

महाराजांच्या आरमारचे कार्य थोडक्यात पुढीलप्रमाणे सांगता येईल.

१. युरोपियन, सिद्दी व मोगल यांच्या आक्रमणापासून कोकण किनाऱ्यावरील होणाऱ्या व्यापाराच्या मालाचे प्रामुख्याने स्वरंक्षण केले.
२. इंग्रज, सिद्दी यांच्या आरमाराचा पराभव करून तसेच खांदेरी वरील विजयामुळे त्यांनी आपल्या आरमाराचे सामर्थ्य जगाला दाखवून दिले.
३. मोगल सम्राटांची सुरतेजवळील बंदरे लुटून तसेच मक्केच्या यात्रेला जाणारी जहाजे लुटून भुप्रदेशाप्रमाणेच समुद्रावरही आपण सामर्थ्यसंपत्र आहोत हे सिध्द करून दाखविले.
४. आपल्या स्वतंत्र आरमारामुळे ते युरोपियन शत्रुंच्या हालंचालीवर लक्ष ठेवत असत.
५. प्रवळ आरमारामुळे महाराजांना दुर्गमस्थानी जाण्याची व वेळप्रसंगी युध्दसाहित्य मिळविण्याची सोय झाली.
६. सेन्यात व प्रजेत या आरामामुळे एक नवी सूर्ती निर्माण झाली.
७. जहाजे बांधण्याच्या व्यवसायाला शिवकाळात मोठ्याप्रमाणावर प्रोत्साहन मिळाले उदा. कल्याण, कुलाबा, वैगुर्ला, पनवेल, मालवण, आदी ठिकाणी जहाजे बांधण्याचे नवे कारखाने निघाले होते.
८. भारतीय आरमाराचा प्रणेता व भारतीय समुद्रव्यापाराचा निर्माता म्हणून महाराजांनी प्रतिष्ठा स्थिरपद झाली.

संदर्भ :

१. घट भास्कर वामन, शिवाजीची राजनिती, प्रकाशक, राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे, १९४१, पृ. २३६.
२. कित्ता, पृ. २३७.
३. सरदेसाई गो.स., मराठी रियासत, पॉष्युलर प्रकाशन, मुंबई, पुनर्नुद्रण, २०१०, पृ. ३८१, ३८२.
४. (संपा) खोले विलास, अज्ञापत्र, लोकमाडऱ्य गृह, मुंबई, सहावी आवृत्ती, ऑगस्ट

५. डॉ. कुलकर्णी अ.रा., मध्ययुगीन महाराष्ट्र, डायमंड पब्लिकेशन, पुणे, २००७, पृ.१८.
६. डॉ. विरादार टी.के., मराठ्यांचा इतिहास, विद्याभारती प्रकाशन, लातूर, २०००, पृ. ४५३, ४५४.
७. (संपा) डॉ. पवार जयसिंगराव, छत्रपती शिवाजी महाराज, समृतिप्रयंथ, महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे, २०११, पृ.११९.
८. (संपा) कुलकर्णी अ.रा. आणि खरे ग.ह., मराठ्यांचा इतिहास, खंड पहिला, कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणे, पुनर्मुद्रण, २०१०, पृ३०५.
९. कित्ता, पृ. ३०६.
१०. उपरोक्त, (संपा) कुलकर्णी अ.रा., आणि खरे ग.ह., पृ. ३१४
११. डॉ.गवळी पी.ए., मराठ्यांचा इतिहास, कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद,प्रथमावृत्ती, ०१ जानेवारी १९९९, पृ. ११३.
१२. डॉ.खोबरेकर वि.गो., शिवकाल (१६३० ते १७०७), महाराष्ट्र,राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई, प्रथमावृत्ती, नोवेंबर २००६, पृ.५०७.
१३. उपरोक्त, सरदेसाई गो.स., पृ.३८८.
१४. उपरोक्त, (संपा), कुलकर्णी अ.रा. आणि खरे ग.ह., पृ. ३१४.
१५. केळूसकर कृ.अ., छत्रपती शिवाजी महाराज, चरदा प्रकाशन, पुणे, तिसरी आवृत्ती, मे. २००१, पृ. २२४
१६. भावे वा.कृ., पेशवेकालीन महाराष्ट्र, चरदा प्रकाशन, पुणे, १९९८, पृ. ४४२.
१७. साहित्याचार्य बाळशास्त्री हरदास, पुण्यश्लोक छत्रपती शिवाजी, खंड ४था, यशवंत मुद्रणालय, सदाशिव, पुणे, ११नोवेंबर १९६२, पृ.७७
१८. उपरोक्त, (संपा) डॉ. पवार जयसिंगराव, पृ. १२६.
१९. ग्रोवर बी.एल. आणि वेलेकर एन.के.,आधुनिक भारताचा इतिहास, एस. चंद आणि कंपनी, नवी दिल्ली, प्रथम संस्कारण २००३, पृ. ५१.
२०. उपरोक्त, साहित्याचार्य बाळशास्त्री हरदास, पृ. ७१.
२१. कित्ता, पृ. ७६.
२२. कित्ता, पृ. ८०.
२३. केळकर न.चि., मराठे व इंग्रज, रा.द.पराडकर, ४२३, शनवार पेठ, पुणे, पृ. ६३.
२४. उपरोक्त, (संपा), डॉ. पवार जयसिंगराव, पृ. १२०.
२५. उपरोक्त, केळकर न.चि., पृ. ६४.



Borse V.B 2015-16

New Voices Pub. A. Bad March 2016.

12



ISBN - 978-93-82504-36-8

Women Empowerment Issues and Challenges

Editors

Dr. Farhat Tabassum Siddiqui

Principal & Head,
Dept. of History, JSPM'S
Mahila Kala Mahavidyalaya, Aurangabad.

Dr. Shaikh Abdul Samad

Assistant Professor,
Dept. of History,
Mahila Kala Mahavidyalaya,
Aurangabad.

Dr. Sable Vanita Bhaskar

Assistant Professor,
Dept. of History
Mahila Kala Mahavidyalaya,
Aurangabad.



CONTENTS

“Heritage Management of Khanaqa” With Special Reference to Aurangabad Dr. Farhat Tabassum Siddiqui	1
Jyotirao Phule and Women’s empowerment Prof. Shailesh Raut	3
नवव्या पंचवार्षिक योजनेची महिला सबलीकरणा बाबतची भूमिका डॉ. हरी नारायण जमाले	5
महाराष्ट्रातील समाजसूधारकांची महिला सक्षमी करणाबाबतची भूमिका प्रा.डॉ. कृष्ण मालकर	11
महिला सबलीकरण आणि ऐतिहासिक परिप्रेक्षातील स्त्रीयांचे जीवन प्रा.वैशाली बागुल	15
हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील महिलांचे योगदान विशेष संदर्भ.- मराठवाडा डॉ. विनोद बाबुराव बोरसे	19
महिला सबलीकरण आणि ऐतिहासिक परिप्रेक्षातील स्त्रियांचे जीवन प्रा.डॉ. देशपांडे एस.पी.	27
महिला सबलीकरण आणि ऐतिहासिक परिप्रेक्षातील स्त्री जीवन यास्मीन वहिद शेख	32
स्वातंत्र्य चळवळीतील महिलांची भूमिका प्रा. केशव अंबादास लहाने	36
महर्षी विठ्ठल रामजी शिंदे यांचे स्त्री विषयक विचार व कार्य प्रा.किर्ती विकास वर्मा	42
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि महिला सक्षमीकरण प्रा. पेरके दर्शा शेषराव	47
सामाजिक पुर्नरचनेत सत्यशोधक महिलांचे योगदान कु.मनोरमा श्रीराम राठोड	51
महिला सशक्तीकरणात शिक्षाणाची भूमिका ज्योति हरिभाऊ कोंदलकर	55
राजर्षी शाह छत्रपती आणि महिला सक्षमीकरण	

हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील महिलांचे योगदान विशेष संदर्भ - मराठवाडा

डॉ. विनोद बाबुराव बोरसे

प्रास्ताविक

ब्रिटीश सरकारने १८ जुलै १९४७ रोजी भारतीय स्वातंत्र्याचा कायदा पास केला त्यानुसार १५ ऑगस्ट १९४७ रोजी भारताला स्वातंत्र्य मिळाले, परंतु याच कायद्यानुसार काही स्थानिकांनी भारतात सामिल न होता स्वतंत्र्य राहण्याचे ठरविले ज्या संस्थानिकांनी असा निर्णय घेतला त्यामध्ये हैदराबाद संस्थानाचाही समावेश होता त्यामुळे भारताला स्वातंत्र्य मिळूनही हैदराबाद संस्थानामधील जनता स्वातंत्र्यापासून वंचित राहिली इतकेच नक्हे तर निजामाच्या धर्माध, जुलमी राजवटीखाली भरडत चिरडत राहिली ही जुलमी राजवट नष्ट करण्यासाठा, या संस्थानाचे भारतीय संघराज्यात विलिनीकरण करण्यासाठी जे आंदोलन व शेवटी पोलीस कारवाई करण्यात आली तेच हैदराबाद स्वातंत्र्यसंग्राम म्हणून इतिहासात ओळखले जाते प्रस्तुत शोध निवधात आली हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील महिलांचे योगदान यांचा अभ्यास करण्यात आलेला असुन विशेष संदर्भ मराठवाडा हा प्रदेश आहे.

हैदराबाद संस्थान- स्थापना, स्वरूप व विस्तार

भारतात असलेल्या देशी राज्यांपैकी हैदराबाद हे एक राज्य असुन त्याची स्थापना दक्षिणेचा सुभेदार मीर कमरुददीन निजाम उल मुल्क^१ याने ३१ जुलै १७२४ रोजी केली या संस्थानाची राजधानी हैदराबाद होती मोगल काळात प्रशासनाच्या सोयीसाठी दक्षिण भारताची विभागणी खानदेश, वहाड, औरंगाबाद, बीदर, विजापुर व हैदराबाद^२ अशा सहा सुभ्यात केली होती हैदराबाद संस्थानाचे एकुण क्षेत्रफळ ८२६,९८ चौरस मैल, लोकसंख्या १,६३,३८,५३४, राज्यामध्ये १६ जिल्हे, ४ सुभे, १०० तालुके व २२,५०० खेडी होती, खेड्यापैकी ६,००० जहागिरीत मोडत असत, राज्यामध्ये प्रामुख्याने तीन भाषांचे तीन प्रादेशीक विभाग होत, तेलगु जहागिरीत मोडत असत, राज्यामध्ये प्रामुख्याने तीन भाषांचे तीन प्रादेशीक विभाग होत, तेलगु भाषेचा तेलंगणा मराठी भाषेचा मराठवाडा ५ जिल्हे आणि कन्नड भाषेचा कर्नाटक ३ जिल्हे, याखेरीज उर्दू ही राज्याची चौथी भाषा होती, भाषिक लोकसंख्या तेलगु ७५,२९,२२९ मरायाखेरीज उर्दू ३९,४७,०८९, कन्नड १७,२४,१८० आणि उर्दू २१,८७,००५ धर्मवार लोकसंख्या ३९,४७,०८९ हिंदू १३,३९,६४९ मुस्लिम २०,९७,७४५, ख्रिस्ति २,२०,५६४ आणि इतर ७,१०,९४६ होती^३.

या संस्थानाच्या इतिहासाच्या पट स्पष्ट करतांना अनंत भालेराव म्हणतात, इतरांच्या तुलनेने हैदराबादावर राज्य करण्याचा निजामाच्या आसिया घराण्याला १७२४ ते १९४८ तर्फे २२६ तर्बाचा बराच मोठा अवधी मिळाला^४ या तीन शतकांच्या या प्रदेशाची जी विलक्षण

हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील महिलांचा सहभाग

१९३७ मध्ये महाराष्ट्र परिषदेची स्थापना झाल्यानंतर या परिषदेची खालील ठिकाणी अधिवेशने संपन्न झाली. परतुर^५, लातुर^६, उमरी^७, औरंगाबाद^८, सेलु^९, लातुर^{१०}

या प्रमुख शहरामध्ये महाराष्ट्रात परिषदेची अधिवेशने घेण्यात आली होती, याच अनुषंगाने संस्थानात महिलांमध्ये प्रबोधन करण्यासाठी महिला परिषदेचीही अधिवेशने संपन्न झाली होती. पहिल्या अधिवेशनाच्या अध्यक्षा सौ. काशीबाई किलोस्कर^{११} हया होत्या, या अधिवेशनात एकुण १२ ठराव १२ मांडण्यात आले, होते व या पहिल्याच अधिवेशनात औरंगाबाद जिल्ह्यातील महिलांनी मोठ्या प्रमाणावर आपला सहभाग नोंदवला होता.

औरंगाबाद येथे झालेल्या अधिवेशनाला लागुनच महिला परिषद भरविण्यात आली होती व या परिषदेच्या अध्यक्षा सौ. पानकुंवर कोटेचा होत्या.^{१२} तर सेलु येथील महिला परिषदेच्या अध्यक्षा सौ. सुशिलाबाई दिवाण हया होत्या. ^{१३} सदरील अधिवेशनाला एक हजारावर महिला सहभागी झाल्या होत्या त्यामध्ये औरंगाबाद येथील करुणाबेन चौधरी, सुशिलाबाई भालेराव, इंदुताई सोनंदे, पप्रतिभाबाई वैशंपायन, आशाताई वाघमारे, शकुंतलाबाई सले, सत्यवतीबेन शॉफ व दगडाबाई शेळके ^{१४} यांचाप्रामुख्याने समावेश होतो.

या परिषदेत औरंगाबाद जिल्ह्यातील आशाताई वाघमारे, करुनाबेन चौधरी, शकुंतलाबाई सेल व माई देशपांडे या महिलांनी स्त्री शिक्षण, मराठी माध्यम, हुंडापद्धती, गोषा पद्धती बंद करणे, स्त्रियांचे आरोग्य, शिशु संगोपन व स्त्रियांना नोक-यात वाव देणे ^{१५} यांना महत्व दिले.

त्याचप्रमाणे त्यांनी आपल्या भाषणात जवाबदार राज्यपदधतीवर भर दिला, भारतीय संघ राज्यात सामील होण्यासाठी संघटितपणे व आत्मविश्वासाने सर्व भगिनींनी प्रयत्न करावेत असेही सुचविले आहे.

प्रमुख महिलांचे स्वातंत्र्य संग्रामातील कार्य

सौ. आशाताई वाघमारे जन्म ५ ऑक्टोबर १९१५ रोजी झाला होता त्या हाडाच्या शिक्षिका होत्या, त्यांच्या जोडीला यमुनाबाई अवस्थी, गंगुबाई पितांबरे, रमाबाई वसिष्ठ याही कार्यरत होत्या, पालकांनी आपल्या स्वाधीन केलेल्या या छोट्या विद्यार्थीनी मधुन प्रगल्भ व्यक्तीमत्व लाभलेल्या, स्वातंत्र्यप्रिय आणि सुजाण अशा नागरिक स्त्रिया त्यांना घडवावयाच्या होत्या.^{१६}

१९३७ मध्ये परतुर येथे झालेल्या महाराष्ट्र परिषदेच्या पहिल्याच अधिवेशनात आशाताई व त्यांच्या बरोबरीच्या इतर महिलांनी आम्हालाही स्वातंत्र्य संग्रामात सामील करून घ्या, गांधीजींच्या बरोबर करतुरबा गांधी, कमलादेवी चटोपाध्याय, सरोजिनी नायडु इ. स्त्रिया काम करीत आहेत मग आम्ही मागे का राहावे? त्यासाठी आम्हाला तुमची परवानगी हवी अशी भागणी स्वामी रामानंद तीर्थ यांच्याकडे केली होती^{१७} व यानंतर आशाताईनी महाराष्ट्र परिषद व स्टेट कॉर्ग्रेस यांच्या माध्यमातुन आपल्या कार्यास प्रारंभ केला, त्यांनी सत्याग्रहींना तुरुंगात

च
अ
शं
पाँ
खु
तुर
सा

दग
सा
म्ह
यां
जि
सर
ल१
शिं
सां
यां
यश

अर
धड
वित
पनि
जो
आ
रात
एक
हृद
त्या
उन

चिकाटीने व हिमतीने केली, जेष्ठ स्वातन्त्र्यसैनिक लाला लक्ष्मीनारायण जैस्वाल आपले दाहक अनुभव सांगताना म्हणतात '३० डिसेंबर १९४७ रोजी औरंगाबाद येथील हर्सुल जेलमधून श्री शंकरलाल पटेल, नागोराव पांक, श्रीनिवास खोत, तेलंगणचे ॲड. गौतम लक्ष्मण पदार, राम पांक, रामप्रसाद आणि नाशिककर या सर्वांना जेलमधून पलुन जाण्यासाठी आशाताईनी मला खुप मदत केली होती२०संग्रामातील या कार्यास आशाताईनी तुरुंगवास ही भोगावा लागला पण तुरुंगातही त्या शांत बसल्या नाहीत तेथे त्यांनी कैद्यांसाठी साक्षरतेचे वर्ग सुरु केले होते व या साक्षरतेच्या माध्यमातुन त्या कैद्यांचे मतपरिवर्तन करण्यात मग्न असत.

सौ दगडाखाई शोलके:

सौ. दगडाबाई शेळकः
 औरंगाबाद जिल्ह्यातील 'दगडाबाई शेळके' केवळ निरक्षर सामान्यातली सामान्य पण दगडासारख्या कणखर मनाची, सात वेळा सत्याग्रह केला. हातात बंदूक घेऊन निझामी रङ्गाकारांशी सामना दिला. मराठवाड्याच्या भुमितली ती लक्ष्मीबाई बनली^{२१} या सशस्त्रसंग्रामाची पुर्वतयारी म्हणून दगडाबाई विविध शस्त्रे चालविण्यास शिकल्या. कोलते टाकळी येथील नारायण गोसावी यांच्याकडून त्यांनी शस्त्राचं प्रशिक्षण घेतल. तलवार जांबिया, भरभार पिस्तुले चालविण्यास त्या शिकल्या^{२२} या आंदोलनात त्यांनी अंगावर लक्ष्मी गणवेश चढवून शस्त्रात्रे चालविली^{२३} जंगल सत्याग्रहातही त्यांनी बाबुराव जाधव, डॉ. धामणगावकर, सेवादास किसनराव वैऱ्याव, आगाशी लक्ष्मण कोलते या सहका-याबरोबर जंगलात जाऊन त्यांनी व त्यांच्या सहका-यांनी २५०/३०० शिंदिची झाडे तोडून जंगल सत्याग्रह यशस्वी केला होता. एवढेच नव्हे तर ७ ऑगस्ट १९४७ रोजी शिंदिची झाडे तोडून जंगल सत्याग्रह यशस्वी केला होता. एवढेच नव्हे तर ७ ऑगस्ट १९४७ रोजी संग्रामाच्या पुढा-यांनी दिलेल्या आदेशानुसार दगडाबाईनी कोलते टाकळीच्या वेशीवर गावक-यांसमवेत तिरंगा ध्वज फडकावून झोंडा तंदन केले व या झोंडा सत्याग्रहाचे नेतृत्वही त्यांनीच यशस्वीरीत्या पार पाढले होते^{२४}

राजकुंवरजी काबरा -

राजकुंवरजी काबरा -
नाशिकजवळील सातपुर येथे राजकुंवरजींचा सधन कुटुंबात जन्म झाला होता. शाळेत असतांना राष्ट्रसेवादलाच्या महिला विभागाच्या कार्यात त्या भाग घेत असत. एक थाडसी, घडाडीची, बंडखोर मुलगी म्हणुन त्यांची ओळख होती. १९४५ साली विजयेंद्र काबरा यांच्याशी विवाहबद्ध झाल्यानंतर त्या काबराजीबरोवर मुक्तीसंग्रमाच्या कामात लक्ष घालु लागल्या महाराष्ट्र परिषदेच्या अधिवेशनांना त्या आवर्जन उपस्थित राहु लागल्या एवढेच नव्हे तर या अधिवेशनांना जोडुन होणा-या महिला अधिवेशनातही त्या हिरहिरीने घेत असत. लातुर येथे झालेल्या महिला अधिवेशनात राजकुंवर हया प्रमुख वक्तव्या होत्या. २५ शस्त्रास्त्रांची जमवाजमव करण्यासाठी राजकुंवरजींनी खुप काम केले. (जमा केलेली हत्यारे त्या आजीच्या मोलकरणीच्या अन् आजीच्या एका मैत्रिणीच्या लक्ष्मीबाई घरी बसावे असत) गरज लागेल तसेतशी ही हत्यारे त्या हैंदराबाद हृददीत आणीत असत. पुणे, कलकत्ता, बिकानेर, जबलपुर अशा ठिकाणाहुन हत्यारे आणण्यासाठी

या समाजवादी जनराज्यातील खेडयांनी प्रथम स्वतंत्र होण्याचा मान मिळविला. विजयेंद्र व राजकुवंरजीनी जी दीडशे युवकांची फळी तयार केली होती. त्यांच्यामुळे हे साध्य होऊ शकले. २७

सौ. चंदाताई जरीवाला

चंदाताई यांचा जन्म भोकरदन तालुक्यातील हसनाबाद येथे १०ऑक्टोबर १९२३रोजी श्रीमंत मारवाडी कुंटुबात झाला. वडिलांच्या दुःखद निधनानंतर त्या औरंगाबादला भावाकडे आल्या. शाळेतील त्यांच्या शिक्षिका आशाताई वाघमारे यांच्या प्रभावामुळे त्या आपोआपच या संग्रामामध्ये ओढल्या गेल्या. कालातंराने या संग्रामातील सेनानी रतिलालजी जरीवाला यांच्याशी विवाहवर्थ झाल्या. सुरुवातीला प्रमिला ढोबळ आणि आशाताई यांच्याबरोबर चंदाताई सभा, संमेलनांना जात असत. २८

याचाच परिणाम म्हणुन पुढे चंदाताई शिक्षिका झाल्यावर त्या वैजापूरच्या सरकारी शाळेत विद्यार्थ्यांना अभ्यासाबरोबर नीती शिक्षणाच्या तासाला जनआंदोलन, स्वातंत्र्यप्राप्तीची चळवळ, सत्याग्रह, रझाकारांची गुंडागिरी व त्यामुळे स्त्रियांची होणारी गळघेपी इ. गोष्टीबदलही विद्यार्थ्यांना माहिती देत त्याचप्रमाणे वाढदिवस, हळदीकुंकु, इतर धार्मिक आणि सामाजिक सण आदी निमित्ताने जमलेल्या महिलांशी चर्चा करून त्यांना जागृत करत असत. २९ सशस्त्र लढ्याच्या वेळेस चंदाताई व सुभद्राबाई पाठक यांनी शंकरभाई पटेल यांच्या नेतृत्वाखाली घोटीच्या जंगलातुन शस्त्रे पाड पाडली होती. त्याचप्रमाणे देवळालीला देखील त्यांनी एक रिक्हॉलळहर हस्तागत करून तोही मनमाड कॅम्पवर योग्यरीत्या पोहचविल्या होता. ३०

कुसुमताई जोशी

कुसुमताईचा जन्म १९२२चा, विवाहानंतर घरच्या जबाबदारी बरोबरच त्यांनी आशाताईबरोबर मुक्तीसंग्रामाच्या कार्यात सहभाग घ्यायला संरुवात केली होती. त्यांचे वडील कॅग्रेसचे असल्याने त्यांच्या घरात प्रथमपासून राजकारणाचे आणि समाजकारणाचे वारे होतेच. यामुळे कुसुमताई घरातूनही पाठिंबा होताच. त्यांचे घर हे जुन्या बांधणीचे असल्याने ते बुलेटिन्स छापण्यासाठी अतिशय योग्य होते, त्यामुळे कुसुमताई घरात हॅंडप्रेस असावा आणि तो चालविण्याची आणि त्याच्या एकुण व्यवस्थेची जबाबदारी कुसुमताईनीच घ्यावी असा आदेश संग्रामच्या नेत्यांनी दिला व त्यांनी तो तंतोतंत पाळलाही होता ३१ हॅंडप्रेसवर बुलेटिन्स छपाई करून त्या रात्री सुपारी मारुतीजवळ एका दगडाखाली ती पत्रके बसवली जात असत. एकदा पोलीसांची धाड लागण्याचा सुगावा लागला आणि त्यांनी चतुराईने पत्रके विहिरीत टाकली व हॅंडप्रेस बांधतिणिच्या खोलीत लपविला होता. ३२ एकदे नक्हे तर त्यांनी ॲड. काशीनाथ नावंदर, माणिकचंद पहाडे, भीमराव कुलकर्णी, व्हारकादास पटेल आदी स्वातंत्र्य सैनिकांना आपल्या घरातच आश्रय दिला होता.

करुणाताई चौधारी -

करुणाताईचा जन्म मोरादाबाद येथे १८ ऑक्टोबर १९२७चा. करुणाभाभी या संग्रामातील

ए अ जि क ला

धे त क

ला औ आ हो

आ मार्ग कॉश स्व

सं स्व या पुर्द

येण गट

एक आगळंवेगळं व्यक्तिमत्व, संस्थानातील जात्यंध जुलमी निजामी राजवटीच्या निषेधार्थ त्यांनी आपल्या नेतृत्वाखाली औरंगाबाद येथील गोकुळदास मोहल्यापासून सरकारी कचेरीपर्यंत (आजचे जिल्हा परिषद कार्यालय) १००-१२५ महिलांचा भव्य मोर्चा काढला होता. ३४ महाराष्ट्र परिषदेच्या कार्यातही त्या हिरहिरीने भाग घेत असत. त्यांना या संग्रामातील सहभागामुळे कारावासही भोगावा लागला होता.

प्रमिला कुलकर्णी (पारनेरकर)

प्रमिलाताईचा जन्म २० ऑगस्ट १९३२चा, त्यांनी सातवीत असतांना १९४६ ला संताप भाग घेतला होता. या संग्रामातील माहिती संघटित करून चंदा भागवत व प्रमिलाताई बुलेटीन्स काढत. त्यांच्या घडया करून वाटपासीठी गवस बांधीत परगावी पाठविण्याच्या पाकिटावर पत्ते लिहिण्याचे काम प्रमिलाताईकडे असे. ३५

पानकुंवर फिरोदिया -

पानकुंवर फिरोदिया यांचा जन्म १९२३ मध्ये बीड येथे एका सधन कुटुंबात झाला होता. लहानपासूनच त्यांच्या मनावर देशप्रेमाचे आणि महात्माजींच्या तत्वज्ञानाचे संरक्षकार झालेले होते. औरंगाबाद या शहरात कॉमेड चंद्रगुप्त, कॉमेड व्ही.डी.देशपांडे गोविंदभाई शॉफ आदी मंडळी अभ्यास गट चालवित असत. या अभ्यास गटात पानकुंवरबाई ही सहभागी होत असत. तसेच येथे होण्या-या चर्चेतही त्या उत्सहाने सहभागी होत असत.

१९४१ साली महाराष्ट्र परिषदेच्या उमरी येथे झालेल्या अधिवेशनात पानकुंवर बाईनी आपल्या अभ्यासपुर्ण भाषणात स्त्री शिक्षण, शोषितावरील अन्याय आदि विषयावर आपले विचार मांडले होते. याबरोबर १९४६ मध्ये पणिदेचे अधिवेशन लातुर येथे भरले होते व याला जोडूनच महिला सम्मलील होते व या सम्मेलनाच्या त्या अध्यक्षा ३६ होत्या. याबरोबरच अहमदनगर येथील कॅम्पमध्ये पानकुंवरबाई सर्वंत्र फिरून या संग्रामासाठी निधि गोळा करणे शस्त्रास्त्रे मिळतात याचा शोध घेवून ती मिळविणे व कार्यकर्त्यापर्यंत पोहचाविणे अशी अनेक धाडसाची कामे त्यांनी या स्वातंत्र्यसंग्रामात केली होती.

गीताबाई चारठाणकर

गीताबाई यांचा जन्म ०७जून १९२३ रोजी वाई, जि.परभणी येथे झाला होता. या स्वातंत्र्य संग्रामात प्रामुख्याने त्यांनी परभणी जिल्ह्याचे संघटक ३८ म्हणून कामकाज पाहिले होते. स्वातंत्र्यप्राप्तीच्या ध्येयाने भारावून गेलेल्या गीताबाई हया यदा कदाचित धोका उदभवल्यास होण्या विटंबनेतून सुटका करण्यासाठी इतर महिला स्वातंत्र्यसैनिकाप्रमाणे त्या स्वतः जवळ विषाची पुडी बाळगत असत.

ताराबाई परांजपे

ताराबाई परांजपे यांचा जन्म ०५ आक्टोबर १९३० रोजी झाला. त्यांनी सर्वप्रथम नाशिक

यंत्रावर पत्रके काढणे, आणि ती वाटणे ४०३, कामे त्या करत असत. त्यांच्यासोबत या कामासाठी कु.कुसूम, कु.शरयु अपासिंगेकर, कु.तुंगा, कु.बेलुर्गीकर, कु.काशी मराठा, कु.शांता कुलकर्णी, कु.शशीकला बाम, कु.कालींदी देशपांडे, कु. सुशिला कुंडे ४१ इ.मुलीही सहभागी होत्या.

सीताबाई नांदापूरकर

सीताबाई नांदापूरकर
यांचा जन्म १९१३ साली परभणी येथे झाला होता. यांनी या संग्रामात वेगवेगळ्या ठाण्यावर शस्त्रास्त्रे पोहचविण्याचे महत्वाचे काम^{४३} त्यांनी केले होते. ही शस्त्रास्त्रे त्या ठोपलीत खालीवर व भाजाई ठेवुन मध्ये काडतुसे लपवुन, चेह-यावर कसलाच भाव न दर्शविता ही जोखमीची काम त्या स्वातंत्र्य संग्रामात करत होत्या. ही कामे केल्यामुळे त्यांना काही काळ तुरुंगवासही भोगावा लागत होता.

शांताखाई देशपांडे

शांताबाई देशपांडे
यांचा जन्म १५मार्च १९२६ रोजी पेडगाव येथे झाला या स्वातंत्र्य संग्रहात शांताबाई देशपांडे यांचे मामा, मामी, श्री निवासराव बोरीकर व त्यांच्या पल्ली सहभागी होत्या. कॅपवर करावयाच्या गुप्त स्वरूपाच्या कामांची शस्त्रास्त्रांच्या व्यवहाराची ओळख कावी यासाठी शांताबाई लेणी व वाशीम येथे काही दिवस प्रशिक्षणासाठी गेल्या होत्या या स्वातंत्र्य संग्रहात शस्त्रे व दारूगोळा यांची ने-आण करणे योग्य व्यक्तीच्या हाती ती सुपुर्द करणे तसेच सहभागी स्वातंत्र्य सैनिकांची व्यवस्था करणे४३ इ. कामे त्यांनी मनमाड कॅम्पवर केली होती.

चंदाताई जोशी

चंदाताई जोशी
 चंदाताई जोशींचा जन्म २४ नोव्हेंबर १९२७ रोजी कायगाव येथे झाला होता. या संग्रहातील चंदाताईचे मुख्य काम म्हणजे पत्रके छापणे आणि त्यांच्या वाटपाची व्यवस्था करणे^{४४} या लढ्याचा भाग म्हणून शाळा, कॉलेज, कोर्ट यावर बहिकार घालायचे ठरविल्यावर चंदाताई हया वकिलांच्या दाराशी बसून त्यांनी अन्नसत्याग्रह केला होता तसेच जे भ्याड होते, निशामी शासनाचे गुलाम होते अशा पुरुषांना बांगडयांच्या आहेर पाठविणे, सभा घेणे, सभेची पुर्व तयारी करणे, मोर्चाची आखणी करणे यात चंदाताई ^{४५} हया रात्रदिवस व्यस्त असत.

असत. याचप्रमाणे या स्वातंत्र्य संग्रहात सुनंदाताई जोशी, शांताबाई कोर्टचा, प्रतिभाताई वैशंपायन कावेरीताई बोधनकर, सरस्वतीबाई देशपांडे, शंकुतलाबाई साले, गंगुताई देव प्रमिलाताई महेन्द्र, सौ. मालनबाई जोशी, शंकुतलाबाई जोशी, रमाबाई गांजवे लता बोधनकर, पार्वताबाई जहागिरदार, सौ. शैलजाताई गोबटे, राधाबाई चारठाणकर, अनुसयाताई, खोडवे, शांताबाई मानवतकर मंगलाबाई बर्दापुरकर रमाबाई जोशी, सिंधुताई ६८ भालेराव, कमलाबाई राजंणीकर, कुसुमताई जोशी, कुसुमशहा, रमणशहा, कुमुदशहा ४६ आणि यासारख्या अनेक घराघरातील भगिनी प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्षरित्या या स्वातंत्र्य संग्रहात सहभागी झाल्या होत्या.

Women Empowerment : Issues and Challenges

संदर्भ सूची

१. मोगल दरबाराची वातमा पत्रे(संपा, व अनु.)पगडी सेतू माधवराव, म.रा.सा., व संस्कृति मंडळ, १९८३, खंड-०२, पृ.०८,०९.
२. Nanded District Gazetteer, Maharashtra State Publication, Bombay 1971, P-62
३. भालेराव अनंत-स्वामी रामानंद तीर्थ, नैशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नवी दिल्ली, आवृत्ती ५ वी, २००६, पृ. ४५६.
४. भालेराव अनंत, हैंदराबाद रवातंत्र्य संग्राम आणि मराठवाडा, प्रकाशन, स्वामी रामानंद तीर्थ संशोधन संस्था आणि भारत मुद्रक आणि प्रकाशन लिमिटेड, औरंगाबाद वितरक, मौज प्रकाशन, मुंबई, संटेवर १९८७, पृ.०२.
५. काळाच्या पड्याआड(संपा)जोशी द.पा., हैंदराबाद महाराष्ट्र साहित्य परिषद, १९९२, खंड ०३, पृ. २९९.
६. स्वामी रामानंद तीर्थ हैंदराबाद रवातंत्र्य संग्रामाच्या आठवणी(अनु)दृक्षणावकर वि.पा. हैंदराबाद स्वामी रामानंद तीर्थ स्मारक समिती, १९७४, पृ.७२.
७. Dhengle B.S, Hyderabad Freedom Struggle, Nanded, Kalpana Prakashan, 1998 P-55.
८. संघर्ष(संपा)गर्ग स.मा., आ.कृ.वाघमारे समृति समिती, औरंगाबाद १९७४, पृ. २३०.
९. Dhengle B.S, Op.Cit,P-59
१०. गर्ग स.मा., उनि, पृ. २५३.
११. जोशी द.पा(संपा)उनि, पृ. ४२३.
१२. तत्रैव, पृ. ४३४.
१३. डॉ. कठारे, डॉ. नागराजे, मराठवाड्याचा इतिहास, कल्पना प्रकाशन, नांदेड, १९९९, पृ. २२८
१४. कृष्ण पी.की.मराठवाड्याचा इतिहास, कैलाश पब्लिकेशन, १९९९, पृ. १४३.
१५. तत्रैव, पृ. १४३.
१६. तत्रैव, पृ. १४३.
१७. डॉ. घारापुरे ज्योत्स्ना, अशा झुंजलो आही, साहित्य सेवा प्रकाशन, औरंगाबाद, १९९४, पृ. १८६.
१८. तत्रैव, पृ. ३९.
१९. सुर्यवंशी उत्तम, टाकळगळानकर अण्णाराव, हैंदराबाद रवातंत्र्य संग्राम, सांगती प्रकाशन, नांदेड, १९८५
२०. स्वा. सै. जैस्वाल लाला लक्ष्मीनारायण, यांची प्रत्यक्ष मुलाखत, दि. १ संटेवर २००५
२१. परांजपे तारा, अभियान, हैंदराबाद रवातंत्र्य संग्राम विशेषांक, प्रकाशक, प्राचार्य पिपल्स कॉलेज, नांदेड, २२ जाने. १९८९, पृ.०९
२२. डॉ. घारापुरे जोत्स्ना, उनि पृ. ५९
२३. सुर्यवंशी उत्तम, उनि
२४. स्वा. सै. शेळके दगडाबाई, प्रत्यक्ष मुलाखत, दि १६ संटेवर २००३.
२५. सारडा शंकर(संपादन)विजयेन्द्र कावरा-व्यक्ती दर्शन, ग्रथविशेष प्रतिष्ठन, पुणे प्रथम आवृत्ती २००६, पृ. १००
२६. डॉ. घारापुरे ज्योत्स्ना, उनि, पृ. ७३
२७. डॉ. वोरकर मंगला, हैंदराबाद मुक्तीसंग्राम, प्रकाशन, विभागीय आयुक्त तथा अध्यक्ष वेरल औरंगाबाद महोत्सव, १७ संटेवर २००५, पृ. ७५
२८. डॉ. घारापुरे जोत्स्ना, उनि, पृ. १८७
२९. तत्रैव पा ११९

३०. स्वा.सै. जरीवाला चंदाताई प्रत्यक्ष मुलाखत, दि २३ अँगस्ट २००६
३१. डॉ.घारापुरे जोत्सा , उनि, पृ.८२
३२. डॉ. बोरकर मंगला, उनि, पृ. ७९
३३. स्वा.रौ. ॲड.नावंदर काशीनाथ प्रत्यक्ष मुलाखत, दि ३१संप्टे २००६.
३४. डॉ.घारापुरे जोत्सा , उनि,पृ १७१
३५. तत्रैव, पृ. २०६
३६. तत्रैव, पृ. ९३
३७. तत्रैव, पृ. ९४
३८. तत्रैव, पृ. १२२
३९. तत्रैव, पृ. १५०
४०. तत्रैव, पृ. १५२
४१. तत्रैव, पृ. १५३
४२. तत्रैव, पृ. १६३
४३. तत्रैव, पृ. १८०,१८१
४४. तत्रैव, पृ. २३२
४५. तत्रैव, पृ. २३२,२३३
४६. तत्रैव, पृ. २४५

Special Issue
February 2016

ISSN -2250-0383
Impact Factor - 0.421

International Multi Disciplinary Research Journal

SHODHANKAN

ICSSR & Dr. BAMU, Aurangabad Sponsored
International Seminar - Date 15 & 16 Feb. 2016

21ST CENTURY WORLD : PRESENT SCENARIO & CHALLENGES

[PART-I]

Organised by
Ajintha Education Society's
Pandit Jawaharlal Nehru College, Aurangabad
(Department of Political Science)

Editors

Dr. Pandit S. Nalawade
Head & Research Guide Dept. of Political Science
Dr. Raju B. Vanarse
Department of Political Science
Dr. Prabhakar R. Jagtap

Guest Published By
Dr. Ashok B. Naikwade
Principal, Pandit Jawaharlal Nehru College, Shivaji Nagar, Aurangabad.

2015-16


Principal
Shri Jayramji Naikwade Arts, Commerce & Science
College, Begon I. T. Yerwada Dist. Aurangabad-431015



- III. INCREASING TERRORISM: A SERIOUS CONCERN BEFORE THE WORLD** 392
Dr. Kishor Sarawade, Political Science, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad
- 112. HUMAN RIGHT & SRI LANKAN WAR** 394
Prof. Arun M. Karab, Dept. of Political Science, Bobiju Adibudh Akademiya, Patiala
- 113. HUMAN RIGHT DISPLACEMENT AND REHABILITATION** 399
Prof. Nandkumar Kulkarni, Asstt. Professor & Head, Dep't. of Sociology, Shri Amravati Mahavidyalaya College, Deoghar
- 114. RELEVANCE OF GANDHIAN THOUGHT IN 21ST ...** 403
VINOD LALRAJAN SANJAYNE, Research Scholar, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad
- 115. GLOBAL WARMING AND ITS IMPACTS ON** 405
Pankaj Tiwari, Shinde Department of Geography, Sant Dnyaneshwar Mahavidyalaya, Solapur, Dist. Aurangabad
- 116. IMPACT OF GLOBALISATION ON INDIAN AGRICULTURE** 408
Eric Prakash R. And Dr. Surekha R. Research Scholar /Research Guide in Commerce of Dr. B.A.M.U. University, Aurangabad.
- 117. A STUDY OF THE PUBLIC AND MEDICAL HEALTH CARE SERVICES AWARENESS CREATION THROUGH SOCIAL MARKETING-A CASE STUDY OF** 411
Dr. Anand P. Chaudhary, Asst. Professor, SIES College Of Arts & Commerce, AURANGABAD (M.S.), INDIA.
- 118. DISPLACED PERSONS AND THEIR HUMAN RIGHTS: AN OVERVIEW** 413
Snehal R. Pathare, Dept. of P.G.Studies in Law, Dr. B.A.M.U.University, Aurangabad.
- 119. ROLE OF THE INDIAN JUDICIARY IN PROTECTION OF ENVIRONMENT: A STUDY** 415
Anita Devendra Dharkar, S.R.T.M. University, Nanded.
- 120. ROLE OF INDIAN JUDICIARY IN PROTECTION AND PROMOTION OF HUMAN RIGHTS OF WOMEN: A STUDY** 417
Dr. Samik J. B. Aherkar, Shri. Shreyas Law College, Kamthi, Dist-Nanded.
- 121. CAUSES OF TERRORISM AND ITS IMPACT ON INDIA** 420
M.G.N.G.Shindale M.K.Kalp Research & Studies, Drogni College, Aurangabad

- 122. NUCLEAR WEAPONS: HUGE PROBLEMS ...** 423
Dr. Jagdishwar PV, Dep't. of Political Science, Shriram Arts College, Akola
- 123. STUDY OF TERRORIST ATTACKS IN 21ST CENTURY** 425
DeShikhar Dinesh Rath, San.P.K.Kalpathi Manoharadasayya, Akola
- 124. WATER POLLUTION CONTROL.** 429
Prof. Sandhya Kadara, G.J.E.Jay/Sac College, Panvel
- 125. CLEAN AND GREEN ENERGY : NEED OF THE 21ST CENTURY** 433
McDowell S.Dave, Department of English Pandit Jawaharlal Nehru College,
- 126. CAUSES AND EFFECTS OF ENVIRONMENTAL POLLUTION** 435
Prof. Kite Sengy Antulik, K.E.U.N.S College, Doshur, Raikot
- 127. STATUS OF GROUND WATER (SPECIFIC WELL) IN AURANGABAD TALUKA AURANGABAD DISTRICT (MS)** 437
Karmakar Rakesh, Dr. Punit S.A. M.Sc Arts Commerce & Science College, of India
- 128. MANUAL SCAVENGING: A SERIOUS ISSUE IN INDIA.** 439
Shrikant Bapnaik, Assistant Professor, M.P.Law College, Aurangabad (Maharashtra), India
- 129. MID-DAY-MEAL SCHEME AN ATTEMPT TO CONTROL MALNUTRITION AMONG SCHOOL CHILDREN: PROS AND CONS** 441
**PROF PRATHIBHA & GIRI DANE, Monklandia Palande Law College, Aurangabad*
- 130. IMPACT OF GLOBAL WARMING ON INDIA'S AGRICULTURE.** 443
Smt. Shilpa Anilrao Khandekar, Deogiri College, Santoor Road, Aurangabad
- 131. The practice of deterrence stability and nuclear balance in South Asia** 445
Pooja Patnayak, Department of Political Science, Jiwaji Miller Institute, New Delhi
- 132. MALNUTRITION A MAJOR HURDLE IN SAFEGUARDING WOMEN'S HEALTH WITH SPECIAL REFERENCE TO THE RIGHT TO HEALTH UNDER INDIAN CONSTITUTION** 451
Shrikant Suresh Bapnaik, Research Scholar, SVSUS University, Nanded
- 133. Impact of Global Warming [The Problem of Global Warming and environmental pollution in Global prospective]** 454
Shinde Meena Latawan Research Student Registrar Office, Dr. Balkhanda Auditorium Marathwada University, Aurangabad

crimes or report them to authorities for punishment. For a useful short treatment, see "Annex - A Note on Command Responsibility", in "Getting Away With Torture? Command Responsibility for the U.S. Abuse of Detainees", Human Rights Watch, April 2005, at longer study is A.P.V. Rogers, "Command Responsibility Under the Law of War". The ruling was a response to a determination by the UN Human Rights Committee that Sri Lanka had violated the International Convention on Civil and Political Rights. The Sri Lankan Supreme Court declared that for a treaty or convention to be binding, it would not only have to be signed by the president but also approved by parliament and endorsed in a nation-wide referendum. These measures require a level of political will that has so far been absent. There has been no sign of a willingness even to admit the scale of the problem, let alone address it. With the government unwilling to take serious steps to halt the decline, victims are forced to seek help elsewhere, in civil society and the international community.



113. HUMAN RIGHT DISPLACEMENT AND REHABILITATION

Prof. Nandakumar Kulkarni, Asst. Professor & Head Deptt. of Sociology
Shri Aravamudhanwar College, Dergonze

Introduction:

Displacement or involuntary and forced relocation of people has come to be acknowledged as among the most significant negative impact of large water resource development project such as dams. The World Bank review referred found that the 192 projects it assessed displaced 635000 more people than was originally estimated. It fact it is well established now that underestimation of figures is the norm rather than the exception. There is without doubt sufficient ground to find a faithful inquiry and possible design in the fact that these no reliable statistics of number of people displaced. Displacement and rehabilitation are however more than a question and accountability, participation and self-determination in development the complexities of resettlement goals, options and strategies and relevant legal and right instruments, these are some of the importance issues in this study.

We have observed to some length how the construction of large dams raises fundamental questions of equality, fairness, justice and equality before law, in the matter of distribution of benefits and burdens. The deprivation suffered by displaced people raises vital issues of constitutional norms and human rights including the right to survival, and basic right to live with dignity. The plight of uprooted tribes systematically personalised in their search for work and livelihood so that the nation may thrive and progress is particularly ironical in the light of observed that decision making about development is not exclusively or even primarily technical or managerial in nature, but essentially political, reflecting becomes clear that the objectives of any just and equitable law and policy dealing with the colossal social and human impacts of big dams cannot be limited only to minimizing the trauma of displacement and ensuring the just resettlement of the victims of displacement. It must incorporate the objective to that of severely curtail, displacement itself, to no longer accept state induced involuntary resettlement as an inevitable cost of all development projects, It must enable people to effectively challenge as usual partners a form of development which takes for granted the inevitability of displacement.

Objectives: To denil study of displaced people due to development projects. To study about human rights related to displaced peoples. To study of problems of project affected peoples.

Methodology: This paper is based on secondary source it mainly that reference books, research paper, government reports and world bank reports, journals magazine and websites etc that are consulted while formulating the paper.

The immediate response is largely about averting the financial threat finding adequate shelter, food, medical treatment and other essentials to those individuals and groups of individuals who have been forced to flee their homes and communities for safety elsewhere. However the forcible and displacement of

persons, both inside and outside the borders of their own countries is a complex phenomenon with dimensions that go beyond the humanitarian particularly as the duration of displacement increases for instance, mass displacement of a country's civilian population can have negative impacts on economic growth, poverty reduction and governs that typically require development strategies and responses. In addition comparative to displacement and the protection of displaced person also involve and require efforts to promote peace reconciliation and justice. India is the third largest dam building country with over 3600 large dams and more than 700 under construction. Dams have been the biggest source of people in last 60 years. Hineanshu Thakkar an activist of Narmada Bachao Andolan in his presentation to the World Commission on Dams (WCD) has quoted World Bank acknowledging that though large dams constitute only 26.6% total World Bank funded projects causing displacement. The resulting displacement makes up 62.8% of the total number of people displaced. It is also apparent that project authorities do not consider the problems of displacement and rehabilitation as important parts of the project. The primary concerns are engineering specific action and electricity and irrigation benefits. In this event concerned authorities undertaken detailed and systematic surveys of the population to be displaced. This makes it very difficult to know the actual number of displaced persons.

The Global Phenomenon: The number of people forced or otherwise obliged to flee their homes and communities on account of conflict, violence, mass atrocities and human right violations totaled 42 million. In addition to the global refugee population, which is estimated at 16 million people this population is comprised of another 26 million individuals displaced within the borders of their own countries. These people who we classify some what inelegantly around the world at the present time, making internal displacement truly global phenomenon. Most of the world's IDPs are found in Africa, where at least 11.6 million individuals are displaced within the borders of their own countries. In fact three of the world's five largest IDP populations are located in this region. This insuspicious list includes countries such as Sudan, with 4.9 million IDPs, the Democratic Republic of the Congo with 1.4 million IDPs and Somalia with 1.3 million IDPs other situations of mass displacement in Africa resulting from conflict and violence currently can be found in the (control) African Republic, Kenya, Uganda and Zimbabwe. The world has witnessed astounding levels of mass atrocities and human rights violations of generalized violence in all parts of the globe as well as surge in number of internally displaced persons like those cited above. At the same two sets of frame works have been developed to address these phenomena. A framework for the protection of internally displaced persons and the prevention of forced displacement and a framework for justice and accountability including measures of transitional justice, both frameworks comprise a set of norms and institution to prevent these phenomena and if they occur to mitigate their most pernicious effects.

For the part of justice and accountability framework is comprised of an overlapping series of universal declaration on human right and building human

all persons, including the right to remedy and same form of justice when these right have been violated. Within the sphere of international humanitarian law, parties to a conflict including both state and non-state actors are prohibited by the Geneva Convention and customary international humanitarian law from coercing and communities unless necessary for their safety or the conduct of military operation. In addition, article of the ICC statute, which also serves as a model for domestic legislation aimed at prosecuting mass atrocities identifies deportation and the forcible transfer of civilian populations through expulsion and other coercive acts as a crime against humanity. The ICC statute also defines war crimes as including the unlawful deportation and transfer of civilians as well as the ordering of displacement of the civilian population.

Justice in displacement contexts requires accountability for the insecurity exploitation and abuse suffered by the victims of displacement. In the words of a displaced person in Colombia is very unjust where's compensation the justice? You ask yourself who's going to put this right? How are you going to put it right? The justice and displacement nexus provides the means ground accountability and combat impunity for the violation of the rights of the displaced and for violence they experience. Doing so can prevent the recurrence of displacement in the future. While also providing victims of displacement with some satisfaction will be held to account for their actions. As another Colombian IDP has declared, they deserve to be punished to pay for what they have done. They are bad too had to be living among others. They have destroyed the lives of innocent people, people who didn't anything to do with them. So I think they should be punished that they should pay for what they have done.

The redress of past wrong and the pursuit of justice and accountability in the wake of violent conflict through prosecutions of the perpetrators and reparations that leads to make the victims whole again are not only important ends into themselves. They can also provide essential means to effects of conflict violence and mass atrocities and human right violations, including forced displacement. Similarly justice and accountability can contribute to the establishment. As the representative of prevalent because of lack of political will to hold those responsible for crimes accountable, durable solutions for displaced persons are not possible and such impunity may create new tensions endangering a fragile peace. A large number of dam projects around the world have met with stiff resistance and opposition particularly from people who stand to be the negatively affected them. The existing framework on natural resources, Confers totalitarian no option but to oppose it in totality. There is no scope in the existing legal framework for peoples participation in debating the merits of the projects or in creating alternatives which is the fundamental right of people in any democracy. Time and again there have been violence of human rights and the use of force rather than open negotiation to quell protest. Perhaps one of earliest tragedies is the fatal shooting by Tonga people who resisted displacement for the Kariba Dam. In the last few years intellectuals and indigenous leaders attempting to win improved compensation and mitigation measures of the people affected by the Urmia dam in Colombia have been murdered while other supporters have been exiled. In India too dam opponents have been targets of violence arbitrary and the use of excessive force in dealing with peaceful demonstrations has been part of the government's response to opposition

corruption is another malaise that has dogged resettlement program, as usual at the expense of the displaced people. To consider that just the example regarding to national audit office officials had embezzled 323 million yuan from funds Gorges area. Without a doubt every case of misappropriation would inevitably eat into the already insufficient funds for resettlement, further weaning the programme, corruption is of course widespread the most recent controversy being over the projects and this simply highlights the need for justice and right to people's involvement in every aspect of the resettlement programme.

Conclusion:

Development Project such as large dams represent supra-local interests that can conflict with some local interests but need exclude them altogether. The development effectiveness and public purpose of each project has to be established not by force of law but through a democratic, transparent and participatory process of assessing needs and alternatives in the context of larger development goals. The basic issues is that affected people, as citizens, have the right to participate in the process of development in general and more specifically in the process of decision making with respect to project that could have a major adverse impact on their lives people who may be negatively affected have to a decisive role, protected by law in determining the acceptability of social costs the benefits of the project. The development effectiveness of any project must include by definition the protection of entitlements of negatively affected people. The right of people to land, water, forests etc not absolute. The state has the mandate to call for renegotiation of these rights. However until the state demonstrates to the who may be negatively affected, through a transparent and participatory process, that accepting an altered set of rights resettlement will be to their benefit, they have a right to refuse resettlement.

No development project can result in complete alienation of the right customary and legal, of people thought payment of a one-time compensation or facilitated relocation, on the country the process must result in the creation of new right that will render people direct beneficiaries of the development project.

A successful rehabilitation with development is a responsibility of the state.

References:

- Dr. Joshi B. L. (1982). Displacement and Rehabilitation, *Parimal Prakashan*.
- Thakstar Humanasha (2000), Large Dam Projects and Displacement in India, (WCD)
- Perez, P. (2002.) Development Displacement and Elites, *Forced Migration Review*, World Bank (1993), Early Experience with Involuntary Resettlement, Maharashtra Irrigation Project- II
- Desh, Justice S.M. (1993), The Indian People's Tribunal on Environment and Human Right, Bombay, Bombay.
- Viegas, P. (1992), The Hirakud Dam cases, Sage Publication, New Delhi, www.iabd.org
- www.dams.org
- www.sudhik.gov.
- www.development.net



114. RELEVANCE OF GANDHIAN THOUGHT IN 2ISTERA: POVERTY

*VINOD LAXMAN SONAPANE, Research Student
Dr. B.Ramamurthi Ambedkar Marwahista University, Agra*

One of the difficult challenge faced by Independent India is poverty. The phases of poverty has different dimensions but to clear the concept of poverty we will see the definition of poverty. "Poverty is a condition where people's basic needs for food, clothing and shelter are not being met. Poverty is generally of two types. 1)Absolute poverty : Absolute poverty is synonymous with destitution and occurs when people cannot obtain adequate resources. 2) Relative poverty: Relative poverty occur when people do not enjoy a certain minimum level of living standards as determined by a government. In India after independent till now the popular slogan is "QUIT POVERTY" today government is implementing several schemes to reduce poverty but the observation is that the situation is the same as it was before. The distance between poorer and rich groups are the same. In our daily life, we come across many people who we think are poor. They could be landless labours in villages or people living in overcrowded villages at construction sites or child workers in dharnis. They could also be beggars with dirty clothes. We see poverty all around us and the ratio of poverty is that every fourth person in India is poor. This means, roughly 30 crore people in India live in poverty. This also means that India has the largest single concentration of the poor in the world. This is shakable and illustrates the seriousness of the challenge. The study of poverty and the issues related to poverty is related to following sectors. 1)Unemployment, 2) Unemployment, 3) Size of families, 4) Illiteracy, 5) Poor health / Malnutrition, 6) Child labor, 7) Helplessness. Above sectors shows that, there are many dimensions of poverty. They shows that the poverty means hunger and lack of shelter. It is also a situation in which parents are not able to send their children to school or a situation where sick people cannot afford treatment. Poverty also means lack of clean water and sanitation facilities. It also means lack of a regular job at a minimum decent level. Above all it means living with a sense of helplessness.

GANDHI'S ECONOMIC THOUGHT AND ANSWER ON POVERTY:

I wish to begin my reflections on Gandhi's economic thought in the context of the major problem of POVERTY in India, with the reference of HIND SWARAJ, a book that Mahatma Gandhi wrote and publish in 1909. In that book, Gandhiji speaks about independent villages and their productivity. Gandhiji's philosophy touched almost all the Social, Educational, Cultural Economic and Political problems of the contemporary world.

The Gandhian Concept of 'Selfreliant Village' (Gram swaraj)

As Gandhi was against the massive concentration of economic power among a handful of individuals, in his economic model he favours economic decentralization and hence villages become the basic economic units. His idea of Gram swaraj (village self rule) aims at developing villages in a manner which retains and strengthens those components of the village ethos, which deserve to be retained and strengthened. According to the idea of Gram Swaraj, each village should be basically selfreliant, making provisions for all the necessities of life-food, clothing,



कथा (युके)
Katha (UK)

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद
व चेतना शिक्षण प्रसारक मंडळ, वैजापूर संचलित
कला विश्व महाविद्यालय, औरंगाबाद आणि
कथा यू.के. (ब्रिटन) यांच्या संयुक्त विद्यापाने



एक दिवसीय आंतरराष्ट्रीय चर्चासत्र

जागतिक पर्यावरण: समस्या, आव्हाने व उपाय

दिनांक : २९ फेब्रुवारी २०१६

संपादक

डॉ. विशाला शर्मा
डॉ. विनोद एन. वैरागी



अजिंठा प्रकाशन

Principal
Sh. Jyoti Joshi

INTERNATIONAL EDITORIAL BOARD

Sohel Memon (Nizwa College of Technology Sultanate of Oman)

Prof. Abdelkader Mohamed Elsayed (Benha University, Egypt – Dhofar University, Oman)

Dr.Sisira Ediriweera Uva Wellassa University Badulla, Sri Lanka.

NATIONAL EDITORIAL BOARD

Umesh N Jadhav (Gaeddu college of business studies, Royal University of Bhutan, Gedu Bhutan.)

Dr. Prasanna Khadikar (College of Arts Commerce Jambagh Koti Hyderabad, Telangana.)

Mahendra V. Patil (Head of Dept. of Pol. Sci., S.P.D.M. College, Shipur, (North Maharashtra University))

Dr. Vaijayanti T. Ramavat (Toshniwal College, Sengoaan, (S.R.T.Univetsity))

Dr. Manhor Jadhav (Dept. of Marathi, S. V. P. U., Pune)

Dr. Rajesh Shesham (Dept. of English, Deogiri College, A'bad.)

Vaishali Supekar (Rayat Shishkan Sanstha's Annasaheb Awate College, Manchar, (Pune University))

Shri. Raut S.B. I/C Principal & H.O.D History

Dr. Sharma V.K. H.O.D Hindi

Dr. Bansode U.V. Hindi

Shri. Ighare S.D. H.O.D Marathi

Dr. Pilkhan A.A. H.O.D Pub. Adm.

Dr. Bhusare A.J. H.O.D Sociology

Dr. Bairagi V.N. H.O.D Pol. Sci.

Dr. Thavare B.B. H.O.D Geography

Dr. Koli A.P. Marathi

Dr. Sathe V.S. Librarian

NON-TEACHING STAFF

• **Shri Shinde D.E.** Head Clerk

• **Shri Sapkal S.T.** Sr. Clerk

• **Shri Tayade B.N.** Jr. Clerk

• **Shri Shinde M.E.** Lib. Attendant

• **Shri Paithane P.P.** Peon

• **Shri Suryawanshi S.S.** Peon

• **Shri Tambe G.T.** Peon

• **Shri Sonwane R.B.** Lib. Attendant

Printed by

Ajanta Computer, Near University Gate, Jaisingpura, Aurangabad.

Published by :

Ajanta Prakashan, Near University Gate, Jaisingpura, Aurangabad.

Cell No. : 9579260877, 9822620877, Ph.No. : (0240) 2400877, 6969427

E-mail : anandcafe@rediffmail.com, www.ajantaprakashan.com

मराठी अनुक्रमाणिका भाग - १

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	पर्यावरणीय राजकारण प्रा. गौतम कांबळे	१-२
२	व्यवसायिक पर्यावरण व पर्यावरणाच्या सामाजिक रचनेचा विकास दिपाली हरीशंकर अंभोरे	३-६
३	जागतिक पर्यावरण व भारताची सक्रीय भूमिका : एक संक्षिप्त आढावा दुर्गादेवी तुकाराम गुडे	७-११
४	पर्यावरण आणि सामाजिक समस्या प्रा. जोधले इश्वर नारायण	१२-१५
५	बदलते पर्यावरण आणि शेवगाव तालुका दुध व्यवसाय विष्णेवण प्रा. लांडे काकासाहेब मा. डॉ. हरिदास पिसाळ	१६-१८
६	पर्यावरणीय शास्त्रीय विकास प्रा. डॉ. मोटे गिलांजली सदाशिवराव	१९-२३
७	पर्यावरणातील संस्कृती संरक्षण आणि विकासाची भूमिका डॉ. प्रभाकर रामचंद्र बोरगांवकर	२४-२७
८	आपत्ती (भूकंप) आणि व्यवस्थापन प्रा. गायकवाड राजेश कचरा	२८-३०
९	अंतरराष्ट्रीय व्यवसायीक पर्यावरणातील घटक आणि अंतरराष्ट्रीय व्यवसायीक पर्यावरणात येणा-या अडथगी कृ. सारीका दिगंबरराव गुहूप	३१-३५
१०	संत साहित्यातील पर्यावरण विषयक शिचार पा. सरला वासुदेवराव गोरे-सावकारे	३६-३९
११	जल प्रदूषण आणि मानवी आरोग्य प्रा. मोरे संगीता दत्ताजी	४०-४३
१२	पर्यावरणीय समस्या आणि त्यावरील उपाययोजना सुनंदा एकनाथराव आहेर	४४-४९

मराठी अनुक्रमाणिका भाग - १

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
४८	औरंगाबाद जिल्ह्यातील पर्जन्य बदलाचा ऊस व कापूस पिकांवर होणारा परिणाम एक शैगोलिक अभ्यास	१९२-१९४
	बोडखे एस. एम. डॉ. पाटील एस. ए.	
४९	पर्यावरण आणि नागरिकरण	१९५-१९९
	ज्योती हरिभाऊ कोंदलकर	
५०	जागतिक अणिवक राजकारण आणि पर्यावरण	२००-२०२
	गायकवाड गौतम गोविंद	
५१	ग्लोबल वार्मिंगमुळे मानवी जीवनातील बदल	२०३-२०६
	श्री. एच. एल. सोनकांबळे	
५२	जागतिक तापमान वाढ : एक चिकित्सा	२०७-२१२
	डॉ. संजीव कोळपे	
५३	जागतिक तापमान वाढाचे परिणाम आणि हवामान बदल	२१३-२१८
	डॉ. नितिन हरिभाऊ कोंदलकर	
५४	पर्यावरण आणि मानवी आरोग्य	२१९-२२१
	प्रा. मंगला गुळवे	
५५	वायु प्रदूषण एक ज्वलंत समस्या	२२२-२२५
	प्रा. डॉ. कालिदास दिनकर फड	
५६	पर्यावरण प्रदूषण : सामाजिक प्रश्न आणि आढळान : एक अभ्यास	२२६-२२९
	डॉ. कालिदास मारुती भांगे	
५७	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांच्या ग्रामगीतेतील पर्यावरण चळवळ	२३०-२३३
	प्रा. विजय वाघमारे	
५८	आधुनिक शिक्षण प्रवाहानुसार पर्यावरण शिक्षणाची गरज व शिक्षकाची धूमिका	२३४-२३६
	डॉ. सोनकांबळे सी. पी.	
	गायकवाड राजरत्न	
५९	'बालकवांचा' भारतीय साहित्यातील पर्यावरण विषयक विचार	२३७-२३९
	प्रा. डॉ. जाकासाहेब बा. लिहिणार	

५६ पर्यावरण प्रदूषण : सामाजिक प्रश्न आणि आव्हान : एक अध्यात्म

डॉ. कालिदास मारुती भांगे

सहा. प्राथ्यापक, समाजशास्त्र विभाग, श्री. झा.भा. महाविद्यालय, देवगाव (र.), ता. कळड, जि. ओरंगाबादा.

प्रास्ताविक

ओद्योगिकीकरणाचा विकासाच्या प्रवृद्ध नादात जगभरातील किमती संसाधनांचा मोठ्या प्रमाणात विनाश होठन आर्थिक विकासात जलबायमध्ये परिवर्तन आणि पर्यावरण समस्यांची निर्मिती झालेली दिसून येत आहे. पर्यावरण प्रदूषण, जैविक विधिधता, जागतिक तापमात्रा (Global Warming), हरितगृहाच्या प्रभाव, ओझोन वायूचे पतन आणि पर्यावरणीय असंतुलन अशा पर्यावरणीय समस्यांनी जागतिक व्याप्त केलेले आहे. प्रदूषण आणि हरितगृहाच्या प्रभावाने पृथ्वीच्या तापमानात वाढ होत आहे. त्यालाच जागतिक तापमान असे नव्यामुळे समुद्र पातळीत झापाटव्याने वाढ होत आहे. हिमस्तखलनहोत होत आहे. त्याचबरोबर जैविक अजू साखळी जीव-जंतू आणि चम्पामातून पर्यावरण स्थिर होत असते. मात्र पर्यावरणातील बदलाने त्यांच्यातील अनुवांशिक गुणांमध्ये वाढ किंवा घट होत आहे. त्यामुळे असमतोलात वाढ होताना दिसत आहे. पर्यावरणीय संतुलन राखण्यासाठी सामाजिक वर्नीकरण करणे आणि त्याचे संवर्धन करणे आवश्यक आहे.

मानवी संस्कृतीच्या विकासात पर्यावरणाची महत्त्वाची भूमिका आहे. पर्यावरण हीच पृथ्वीवरील जीवांचा आधार आहे, नव्ये पर्यावरण निर्मितीचे वर्षांपासून आहे. काही विचारव्यंत पर्यावरणासाठी हेबीटेट (Habitat) असा शब्द वापरतात. त्याचा अर्थ प्राण्यांचे बनस्पतीचे मुळस्थान किंवा घर असेही संबोधतात. जैविक आणि अजैविक घटकांच्या रूपात जीवमंडल (Biosphere), स्वतः (Lithosphere), वायूमंडळ (Atmosphere) आणि जलमंडळ (Hydrosphere) इत्यादी पर्यावरणाचे मूळ घटक आहेत.

पर्यावरण म्हणजे नेमके काय? याचिपवी पाहताना परि+आवरण Environment "पृथ्वीभोवतालचे यातावरण, पृथ्वीवरील वन्यप्राणी व अन्य जीवजंतू यांचा परस्परावलंबी नैसर्गिक संबंध, संतुलन, संतुलन म्हणजे सुनिहीत चक्र, सजीव-निर्जिवांची परस्पर संगड ही पर्यावरण निर्मितीमधील काही महत्त्वपूर्ण घटकांचा समावेश ब्रह्मोड (पंचमहाभूते : पृथ्वी, आप, तेज, वायू, आकाश) यांचा समावेश करता नाहीत. या चक्राना भेद होणे म्हणजे प्रदूषण होय." उदा. शिसे, पारा, वुरिया, लॉस्टिक, विशारी वायू इत्यादीचा समावेश करता येईल. वायूमंडळ म्हणजे वायूमंडल = यात+अवरण : वायूरूप आवरण होय. यापासून अशा प्रकारचे वायू, पदार्थ वायूमंडलात बोमालनुमयणे सोडून भांतीक विवरण साधण्याचा प्रयत्न विकसित, अल्पविकसित आणि अविकसित राष्ट्रांमध्ये होत आहे. त्याचा परिणाम पृथ्वीच्या परिवर्तनांमध्ये मोठ्या प्रमाणे प्रदूषण होताना दिसून येते. त्याचा सामना पृथ्वीवरील जीव-जंतूना करावा लागल आहे.

प्रस्तुत पर्यावरणाच्या विनाशावरोबर मानवी जीवन आणि पृथ्वीवरील सांतांवरही विपरित परिणाम होताना दिसून येत आहे. प्रस्तुत शोध निर्बाधात काही उद्देश समोर ठेवण्यात आलेले आहेत.

शोध निर्बाधाचे उद्देश

- १) पर्यावरण प्रदूषणामुळे कांण-कांणते सामाजिक प्रश्न निर्माण झालेले आहेत. ते शोधणे,
- २) पर्यावरण प्रदूषणाची कारणे शोधणे.
- ३) पर्यावरण प्रदूषण कनी करण्यासाठी उपाय योजना सूचिणे.

गृहीतकृत्ये

- १) पर्यावरण प्रदूषणामुळे पाणी आणि आरोग्याचे प्रश्न निर्माण होत आहेत.
- २) औद्योगिक विकासामुळे नेसर्गिक साधन संपत्तीचे प्रचंड नुकसान होत आहे.
- ३) नेसर्गिक हानीस ख हवामान बदलास मानवी कर्तृतव्य कारणीभूत आहे.

मानवी समुदायाच्या चारही बाजू भौतिक, अभौतिक, जैविक, रासायनिक आणि प्राकृतिक घटकांचे अस्तित्व नेसर्गिक रूपात संतुलित अवस्थेत असते. या प्राकृतिक संतुलनाला छेद देत या नेसर्गिक स्थिती असंतुलनाच्या स्थितीला पर्यावरण प्रदूषण असे महत्त्व येईल. आज औद्योगिकीकरण, यांत्रिकीकरण, नागरिकरण आणि वाढती लोकसंख्या यामुळे पर्यावरणाचा अपव्यय मोठ्या प्रमाणात होकले पर्यावरणातील नस्तुन आमलाला आमच्या मुलीसाठी उसणे घेतलेली आहेत तो पूढील घिडोसाठी व्याजासहित वापस द्यावयाची आहेत." हे कथन पर्यावरणाच्या शास्त्रज्ञ विकासाला महत्त्व देत आहे. मानवी आणि सर्व सजीवांना या प्रदूषणापासून तसेच आर्थिक आणि भौतिक विकास किंवा प्रगतीपासून याचवले पाहिजे.

पर्यावरण प्रदूषण हे स्वाधारणपणे दोन घटकांडारे पसरते. १. वायो-क्षयकारी पदार्थ (Bio-degradable) २. गैर-वायोक्षयकारी पदार्थ या पासून पसरणारे प्रदूषण हे तात्पुरते असते भाज गैर-वायोक्षयकारी पदार्थापासून पसरणारे प्रदूषण धोकादायक असते. उदा. डी.डी.टी., पारा आणि रेडियम यांपासून होणारे प्रदूषण हे गैर-वायोक्षयकारी प्रदूषणाची उदाहरणे होत. पाणी, वायु, ध्वनी, मृदाग्रदूषण, समुद्रातील प्रदूषण, रेडियमपासून होणारे प्रदूषण, किटकनाशक प्रदूषण, विद्युत चुंबकीय वितरण प्रदूषण यांच्या व्यतिरिक्त नाभिकीव प्रदूषण तसेच इ. कचरा, आधुनिक युगातील प्रदूषण सर्वोचिक घातक आहे. वायु प्रदूषणाचा परिणाम जागतिक तापमान वाढ, हरितगृह यांचा प्रभाव ओळोगेचा क्षय होण्यात होत आहे. त्यामुळे संपूर्ण मानव जातीला धोक्याच्या क्षायवर बसाविण्यात आलेले आहे. त्याच्ये ग्राम्यांमध्ये प्रदूषण कोण-कोणत्या घटकांत होते त्याचा आढळाव घेता येईल.

१) इं-कचरा प्रदूषण (E-waste Pollution)

आजच्या वर्तमान सायंवर युगात विज्ञान हे वरदानावरोरच शापही बनत आहे. इलेक्ट्रॉनिक वस्तु, खराच, कॉम्प्यूटर, मोबाईल इत्यादीच्या स्वरूपात विकसनशील देशांत विशेषत: भारतामध्ये मोठी समस्या बनत आहे. इं-कचरा यामध्ये सिसे, केंडियम, पारा यांपारहे हानीकारक घातू आणि ब्रोमीन, क्लोरोन युक्त पदार्थ यांचा समावेश होतो. तसेच ऑसिड, रेडिओ एकिट आणि जैविक प्रक्रिया युक्त पदार्थ जागतिक समस्या बनलेली आहे. विकसित देशांकडून हा कचरा विकसनशील देशांमध्ये टाकला जात आहे. तो थांबविण्यासाठी प्रयत्न करणे आवश्यक आहे.

प्रदूषणाचे प्रकार

पर्यावरणातील नेसर्गिक स्थितील झालेली अनिष्ट घटकांची वाढ म्हणजे प्रदूषण असेही महत्त्व येईल. हे प्रदूषण कोण-कोणत्या घटकांडारे होते. तसेच त्याचा परिणाम संपूर्ण जीवसृष्टीवर कसा होतो हे पाहताना प्रदूषणाचे प्रकार पाहणे आवश्यक ठरते.

१) जर्मीन प्रदूषण

भारतातीलच नक्के तर जागतिक लोकसंख्या वाढ वेगाने होत आहे. या वाढत्या लोकसंख्येला अवधान्याची गरज लक्षात घेता अवधान्याचे उत्तरादेन वाढविणे गरजेचे झाले. त्यामुळे रासायनिक खुते, किटकनाशक, न कृजणारे पर्सिटिक, कोर (आम्लता वाढणे), पीएच कॉल्न्यू ७० सामान्य, ७७ च्या वर अल्बुनिटी आणि ७७ च्या खाली आम्लता यामुळे जर्मीनीचा खाली विघडतो आणि जर्मीनीचं प्रदूषण मोठ्या प्रमाणावर होते.

२) हवेचे प्रदूषण

औद्योगिकीकरण, वाढते नागरिकरण, अणुभट्ट्यांतील विरणोत्सर्व, विवारी वायु, अणुस्कोट, वाहनाचा धूर, अस्वाच्छता, वृक्षांची नोंदवा प्रमाणात होणारा नाश, रोगाई, लोकसंख्या वाढ या घटकांमुळे हवेच्या प्रमाणात प्रदूषण वाढत आहे. त्याचा परिणाम पर्यावरणातील समतोल विघडत असून त्याचा परिणाम विविध नव्याने आजारांची निर्मिती होताना आढळून येते.

३) अग्र प्रदुषण

जागतिक वाढत्या लोकसंख्येला आवश्यक गरजा पूर्ण करण्याच्या आणि उत्पादन वाढविण्याच्या प्रवल्लात संकरित बी-वियान, अज्ञप्रक्रिया, किटकनाशके, रासायनिक खतांचे प्रमाण अधिक वाढत मेले त्याचे अंश अधिधान्ये, पालेभाज्या, फुले-फळे यांच्या माध्यमातृन जाते. त्याचा परिणाम मानवी आरोग्यावर झालेला दिसून येते.

४) घनी प्रदुषण

औद्योगिकीकरणाच्या विकासाबरोबरच मानवाने विविध कारखाने, वाहने, काणककंश वाई, माणसांचा गोंगाट, विमानाची घटवण इत्याची घनी प्रदुषण नोंदवा प्रमाणात होते. त्यामुळे मज्जारक्नुवर आधात होऊन विकृती येते. कणांबवीरता येते. वापासून वाचाव करणे हे मानवाच्या आहे.

५) जल प्रदुषण

भारतामध्ये औद्योगिक क्षेत्र हे प्रामुख्याने घोठ-मोठ्या नदीकिनारी वसविण्यात झालेली आहेत. या कारखान्यातील टाकाऊ पदार्थ, सांडुपाणी इत्यादी कोणतीही प्रक्रिया न करता नदी पात्रात किंवा नाल्यात तसेच उघडवण्यावर सोडाण्यात येते. तसेच कालवाहा झालेली किटकनाश यांचीही याच पद्धतीने विलहेवाट लावली जाते. त्यामुळे नदी पात्रातील पाणी, जमिनीतील पाणी दुषित होते. त्याचा परिणाम जलचर प्राणी साखळीही धोक्यात येते.

६) प्रकाश प्रदुषण

मानवाने आज कोणताही भौतिक घटक सोडलेला नाही की त्या तिकाणी आपले अवगुण दाखवीले नाही. पृथ्वीवरील नेसर्गिक संपत्ती, वायु, पाणी, नदी इत्यादीवरोबरच अवकाशातही आणि प्रकाशातही प्रदुषण घडविल्याचे दिसत. वामध्ये अंतराळामध्ये सोडलेले ताप हवेतच नष्ट करताना त्याचे असंख्य तुकडे विघुरले जातात. अशा असंख्य ग्रहांचा भरमसाठ कचरा रेंडओ लहरीची दाटी, इंटरनेटचे यांच्यातील मोठ्या प्रमाणातील लहरीमुळे प्रकाश प्रदुषणाही मोठ्या प्रमाणात वाढता आहे.

जागतिक तापमानवृद्धीमुळे १९०१ ते २००० या शतकात सरासरी सागरी पाणी पात्रीत १९ सेंटीमीटर वाढ झालेली आहे. सामग्री स्तर २१ ल्या शतकाच्या शेवटी २५ ते २१ सेंटीमीटर बाहु शकते. यामुळे समुद्र काठावरील किंवा सखल भागातील रहिवाशी क्षेत्रवृद्धीत निश्चित आहे. त्याचा परिणाम मानवी जीवन आणि नेसर्गिक साधन संपत्तीवरीही होणार हे निश्चित आहे. पर्यावरण प्रदुषण हे केवळ आर्थिक पर्यावरण नसून सर्वच्यापी सामाजिक प्रश्न किंवा समस्या निर्माण करत आहे. मानवाने आपले जीवन सुकर करण्याच्या प्रवल्लात उभा असतेल्या पांढरी घाव घालण्याचा प्रकार केला आहे असे म्हटल्यास अनिश्चिती होणार नाही. तरीही त्यातून मार्ग काढण्यासाठी पुढील उपाय योजनांची अंभलवड तेल्यास पर्यावरणीय थोके कमी होण्यास मदत होईल.

उपाययोजना

पर्यावरण संतुलन टिकिविण्यासाठी आणि पृथ्वीतलावरील सजीवसृष्टी जीवंत ठेवण्यासाठी उपरोक्त संशोधनातृन काही उपाय सांगता येतील. त्यामुळे पर्यावरण संवर्धनास निश्चितच मदत होईल आणि सजीव सुष्टी आपले हक्कांने जीवन जगेल.

- १) नेसर्गावरील अवलंबीत्व / भार कमी करणे, राहणीमान साधेपणाने टेवणे, नेसर्गिक साधन संपत्तीचा गरजेनुसार व गरजेनुसार वापर करणे.
- २) रासायनिक खतांऐवजी सौदेय खतांचा वापर व स्थानिक बी-वियाणे यांचा वापर कृपी अंत्रात केलापाहिजे.
- ३) नेसर्गिक शेती करण्यावर भर द्यावा. तसेच शेतीचे यांत्रिकीकरण करताना यंत्राचा मर्यादित वापर असावा.
- ४) वृक्ष संवर्धन, लागवड, सदेव प्राणवायू उत्सर्जित करण्याच्या तुळशीची लागवड विपुल प्रमाणात करावी, वृक्षदान करण्यास संवर्धनासाठी सतत जागृत राहणे आवश्यक आहे.

- ५) सोर उर्जा वापर करण्यात याचा, निर्घरचुली, लहान धरणे, बंधारे यांचा अवलंब करण्यात याचा.
- ६) लोकसंख्या वाढ निवंगणात आणली गेली पाहिजे तसेच पद्यावरणासंबंधी विपुल प्रभाणात जनजागरण घडविले पाहिजे.
- ७) औद्योगिक कारखाण्यांतील सांडपणी थेट नवी पात्रात, जमिनीत, नात्यात न सोडता त्यावर प्रक्रिया करून त्याचा पुनर्वापर करण्यावर भर दिला गेला पाहिजे.

उपरोक्त उपायांचोर्जनांचा प्रत्येक नागरिकाने अवलंब केल्यास पद्यावरण संवर्धन निश्चितच होईल आणि नेसांगक आरिष्टांपासून मानव च इतर जीवसृष्टीही सुरक्षित राहील.

संदर्भ

- १) आहुजा राम : सामाजिक समस्यांक, रावत पब्लिकेशन्स, जयपूर, २०००.
- २) आहुजा राम : सोशियल प्रोब्लेम्स इन डॉड्या, रावत पब्लिकेशन्स, जयपूर, २०१४.
- ३) भागव नरेश : वेश्वीकरण : समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, रावत पब्लिकेशन्स, जयपूर.
- ४) शर्मा जी. एल. : सामाजिक युद्ध, रावत पब्लिकेशन्स, जयपूर, २०१५.
- ५) जलसंचाद मासिक.
- ६) निसर्गवाणी मासिक.



Vivekanand Shikshan Sanstha's
**Vivekanand Arts, Sardar Dalipsingh
Commerce and Science College**

Reaccredited by NAAC with 'A' Grade (3.36 point)
A College with Potential for Excellence
An ISO 9001-2008 Certified Institution

Proceedings of
UGC SPONSORED
National level Seminar on
*Emerging Trends in
Commerce & Management*

Dr. B. S. Solunke
Chief Editor

Dr. K. B. Laghane
Associate Editor



New Voices Publication, Aurangabad.

ISBN : 978 93 82504 64 1



NAAC Reaccredited with "A" Grade (CGPA of 3.36 on Four Point Scale)
"A" College with potential for Excellence Status Awarded by UGC.
An ISO 9001-2008 Certified Institution.



Vivekanand Shikshan Sanshakti's
Vivekanand Arts, Sardar Dalipsingh Commerce & Science College
Samarth Nagar, Aurangabad - 431 001

Dr. B. S. Solunke
M.Sc. M. Phil, Ph.D.
Principal



Message

I am extremely happy to congratulate the Department of commerce of Vivekanand College Aurangabad for successfully organizing two day UGC sponsored National level seminar on "Emerging Trends in Commerce & Management" on 19th & 20th March 2016.

Today commerce is known as a system which affects the business prospects of economics & has been also accepted as a significant aspect of current corporate era. I am glad to know that the seminar addressed major emerging issues, themes with significant insights. Indeed it is a matter of happiness that department of commerce is publishing two proceedings of the seminar.

Dr. B.S Solunke
Principal

CONTENTS

A Study of Cash Deposit Machine Launched By IDBI Bank in Aurangabad (MS) City Prof. Dr. Madhukar P. Aghav	Mr. Sachin Chandrakant Bobade	1
A Study of Change in Investors Portfolio in Nanded District Sachin Prakash Pawar		4
A Study of E-Entrepreneurs in Aurangabad Dr. M. Sanaullah Khan		8
A Study of Entrepreneurship Development Process and Role of Government Policies Towards Entrepreneurship Development In India Dr. Ganesh N. Kathar	Ms. Sanjivani N. Salvi	11
A Study of Problems & Prospects of Make in India Mr. Sangopal Prakash Ingle		15
A Study of Relationship between Knowledge Management and Entrepreneurship Development Mohnish Mahamune	Sagarsingh K. Pawar	17
A Study on Make in India-Skill Development Scheme for Transforming India Ms. Siddiqui Lubna Javed Hasan	Mr. Mustansir Ezzi	21
Agricultural Entrepreneurship An Indian Perspective Dr. P. T. Pawar		24
Agri-Entrepreneurship Development Dr. Anuya Chandorkar		27
Agro - Based Entrepreneurship : Challenges and Opportunities Dr. Karad Bhalchandra Gopinathrao		30
Agro based Industry is a pathway for Entrepreneurship Development in Maharashtra Prof. Ranmare S.S.		32
An Overview of Industrial Development & Employment Opportunities under DMIC in Maharashtra Dr. R. S. Wanare		36
A study of DMIC and its opportunities and Challenges Sachin Bassaiye Hemant Bassaiye		38
Challenges and Opportunities of DMIC Madhubala Madhukar Ingle		42
Challenges of NPA in Bank Loan Management: A Study of Selected UCBs of Beed and Osmanabad Districts. Dr. Hasvi Khairul Makeen		45
Cloud Based ERP Systems Shaikh Zareen Kauser		49
Consumer Behaviour and E-Business Dr. I.M. Farooqui		53
Delhi-Mumbai Industrial Corridor: Development Opportunities in Maharashtra Dr. S.V. Gande		56
Delhi-Mumbai Industrial Corridor'(DMIC) Project for Indian Industrial Growth Ms. Deepika S. Shinde		60
Development of Women Entrepreneurship		

DMIC-Opportunities & Challenges		68
Dr. Rajendra Ashokrao Udhani		
DMIC :Employment Opportunities and Challenges		73
Mr. Amar A. Gadade	Dr. R. D. Gaikwad	
DMIC and FDI Policy		75
Kamble Sanjaykumar.M.		
DMIC and Make in India		77
Dr. Jitendra Ahirrao	Professor, Vijay Nagori	
DMIC: A Key For Growth of Marathwada		80
Mr. Chandrakant M. Jadhav	Dr. Vilas G. Dapke	
DMIC: Challenges,Opportunities and their Impact		83
Dr.Chhanwal I.L.		
Emerging Trends in Banking and Finance- Special		
Reference to Jalna Merchants Co-Operative Bank Ltd, Jalna		
Miss Disha Namdeo More		86
Emerging Trends in Commerce & Management		
Entrepreneurship Development & Government Policies Small Scale Entrepreneurship in India		
Amrapali G. Hatkar		89
Emerging Trends in Commerce: A New Aeon of Women Entrepreneurs Issues and Challenges		
Dr. Rajendra Gaikwad	Mohan Shinde	92
Emerging Trends in Entrepreneurship Development		
Deshmukh H.N.		95
Emerging Trends in Industrial Development and its Social Involvement - Special		
Reference to Maharashtra State		
Dr. Bharat A. Pagare		98
Emerging Trends in Training and Development		
Prof. Dr. B. S. Gite	Mr. Mhaske Rameshwar Bhikan	100
Empowerment of Working Women in Banking Sector		
Chaitali Gajanan Gavali (Bhalerao)	Dr. Mrs. Surekha Dargad	103
Enhancing Entrepreneurial Productivity & Efficient By Yoga		
Smita M. Dixit		106
Entrepreneurship Development : A Key of Economic Development		
Sudhir Vaijanathrao Panchagalle	Dayanand Panchappa Birajdar	110
Entrepreneurship Development & Government Policies		
Vaishali R.Kombde		113
Enterpreneuership in Agro Industries		
Dr. Mrs. S. A. Bajpai		115
Entrepreneurial opportunities in DMIC		
Krishna G. Kaldate Dr. Ashok Shrirame		117
Entrepreneurs Opportunities in Investment		
Dr. V. P. Suryawanshi	Inamdar S. Shaha Hussain Abdul hai	119
Entrepreneurship Development & Management of Enterprise		
Dr. K.B.Laghane		122
Entrepreneurship Development & Policies, Problems and Remedies in Aurangabad		
Dr. Manohar Sakharam Wankhade		125
Entrepreneurship Development & Government Policies		
F. S. M. W. M. J.		128

Entrepreneurship Development and Government Dr. H.G. Vidhate	132		
Entrepreneurship Development and Government Schemes & Policies in India Asst. Prof. Panzade D.R.	136		
Entrepreneurship Development and Government Policies Dr. D. B. Borade	139		
Entrepreneurship Development and Government Policies Dr. M. V. Gite	143		
Entrepreneurship Development and Government Policies. Rishikesh R. Banchod	145		
Entrepreneurship Development in Agriculture Sector of Maharashtra & Role of Government Policies Neelam Eknath Patil	149		
Entrepreneurship Development in India-the Focus on Start-ups Mr. K. D. Gade	151		
Entrepreneurship for Sustainable Development of Economy Dr. S. V. Dongre	154		
Entrepreneurship in Agriculture Development with Special Reference to Indian Agricultural Sector Dr. Shrikrishna Chandansiv	159		
Entrepreneurship in Agro Industries Dr. Qazi Baseer Ahmed	Siddiqui Md. Mujeeb	164	
Entrepreneurship in Agriculture Development with Special Reference to Indian Agricultural Sector Ashwini S. Deshpande		167	
Entrepreneurship in Agro Industries Dr. Shaikh M. L.		171	
Entrepreneurship in Agro Industries Dr. Markande Madan Rambhau		175	
Entrepreneurship in Agro Industries Scope in Maharashtra Prof. Mahadeo J. Sontakke		179	
Entrepreneurship in Agro Industries special Reference to Opportunities in Dairy and Food Processing Dr. Manik S. Waghmare		181	
Entrepreneurship in AgroIndustries Shri Birajdar S.G.	Dr.Kadam D.D.	184	
Financial Analysis of Delhi Mumbai Industrial Corridor (DMIC) Dr. Rashmi D. Chitlange	Miss DishaNamdeo More	187	
Foreign Direct Investment in Indian Retail Sector: Challenges and opportunities Dr.Talekar S.D.	Prof. Dubale Y.B.	Dr. Gande S.V.	190
Foreign investment in Aurangabad city: for a Sustainable Development Dr. Shiriram S. Solanke	Dinesh B.Dhaneshwar		193
Government's Role in Implementing Entrepreneurial Development Programme in Industries Dr S. B. Shetsandi			198
Governments Policy Towards Corporate Entrepreneurship Development Laxminarayan C. Kurpatwar			

Impact of DMIC on Make in India		
Someshwar R. Panchakshari		207
Impact of Various FTA'S on Rubber Products & Major Aspects of Consideration While Finalizing FTAS/PTAS		
Rajsekhar Banerjee		210
Importance of work-Life-Balance in Etrepreneurship Development		
Dr. Shweta Patil Rajale	Sagar Digambar Bhalekar	215
Inclusiveness of Agri-preneurship in India		
Ms. Divya H. Sharma	Ms. Manjiri Hiranya	219
Influence of make in India policy: and Approaching Challenges		
Mr. Mohammed Aamer		222
A Study of Management as an Entrepreneur in context to Small Scale Industry (SSI)		
Ram Tanajirao Kachare		225
"Make in India" Ways and Means for Transforming India		
Dr. R. S. Wanare	Mohammed Abdul Majed	228
Entrepreneurship in Agro Industries		
Proff. Bondre R. N.	Proff. Waghmare A. N.	231
Make in India A Path for Skill Development		
Dr. Savita G. Joshi		235
Make in India is it a Brand or Development Campaign		
Dr. Sanjay Aswale		238
Make in India Prospects of Policy		
Ms. Manisha B. Patange	Ms. Leena Coates	242
Make in India: Its impacts on Economic growth		
Shrikant P. Thorat		245

Entrepreneurship in Agro Industries special Reference to Opportunities in Dairy and Food Processing

Dr. Manik S. Waghmare

Introduction:

Agriculture is now become the sector of difficulty were farmers are facing problem and this section is highly depend upon nature but the problem is there is no proper research is undertaken for searching the options in agricultural sector. Although this sector is also having different segments those are ignore or proper attention is not given to this sector. This paper is highlighting and focusing on agro based dairy and food industries segments. There is need today to find out new sections of opportunity for the purpose of fulfilling the requirement of increasing population and the problem of proper utilization of available recourses. Dairy and Food processing sections is one of neglected sector in our India or it is not properly developed so there is need to focus on this sector seriously because we have all the necessary recourses which are required for to make progress in this sector. Our farmers they will become independent if they opt to take this opportunity seriously. Government is now focusing on this sector and providing all kinds of supports and training facilities. Increasing demand of milk and food products is one of the key indicators and low financial requirement is another. Young India must utilized this chance and will help in development of self and our Country.

Objective:

- 1) To study the scope in the agro based industry
- 2) To study the importance of entrepreneurship in agro based milk and food industry
- 3) To know the role of Entrepreneur in Upliftment of Backward section of Society

Research Methodology:

In the present research work data is contributed by using Secondary sources. Various books, journals & Internet sources are used to prepare the paper.

Meaning of Entrepreneurship:

The capacity and willingness to develop, organize and manage a business venture along with any of its risks in order to make a profit. The most obvious example of entrepreneurship is the starting of new businesses. In economics entrepreneurship combined with land, labor, natural resources and capital can produce profit. Entrepreneurial spirit is characterized by innovation and risk-taking, and is an essential part of a nation's ability to succeed in an ever changing and increasingly competitive global marketplace. An individual who, rather than working as an employee, runs a small business and assumes all the risk and reward of a given business venture, idea, or good or service offered for sale. The entrepreneur is commonly seen as a business leader and innovator of new ideas and business processes.

Entrepreneurship facilitates the rate of development of a country by significantly contributing to the following factors.

By increasing the rate of growth in GDP of a country

- | | |
|--|------------------------------------|
| 1) Increasing productivity. | 2) Growing employment opportunity. |
| 3) Increasing economic diversification. | 4) Optimum use of local resources |
| 5) Continued innovation in techno-managerial practices | |
| 6) Improving in international competitiveness. | 7) Removes Poverty among villagers |
| 8) Removes Fear of disguised unemployment | 9) Ending exploitation of farmers |
| 10) Stopping Rural-urban migration | |

Entrepreneurship is a low-cost strategy for:

- 1) Economic development. 2) Job creation. 3) Technical innovation

The entrepreneurs bear the costs and risks of launching a new venture, developing a new product, commercializing an invention, adapting a technology and developing a new market, there by offering a highly leveraged strategy of development. Entrepreneurship alone results in generating wealth and employment, in turn, GDP and the overall development of society. Governments need to spend a lot of money if they

Need of Entrepreneurship Development in Dairy & Food Industry

Entrepreneurship plays an eminent function in creating an avenue for employability for rural communities, providing self-employment for those who have started-up a business of their own and enhancing the economic status of the rural sector as well. Entrepreneurship has transformed many entrepreneurs into successful business persons and generated income for rural communities. Entrepreneurs in rural area have transformed their vicinity into trading hubs thus enabling them to become urbanized areas. NOVONOUS estimates that Indian dairy market will grow at a CAGR of 15% by 2020. This growth is mainly due to a large pool of cattle, increasing consumption, changing consumer habits and rising income levels.

- 1) Dairy Market in India is expected to Grow at a CAGR rate of 15% till 2020. With the changing consumer consumption habits and daily lifestyle, most of the consumers are opting for the Value Added Dairy product (VADP) which are more like used for direct consumption and do not require any processing at homes.
- 2) Milk currently controls the largest market share in terms of revenue in Indian dairy market. As per NOVONOUS estimates, Indian milk market is expected to grow at a CAGR of 15% till 2020 and maintain its market share position even in 2020.
- 3) Ghee currently controls the second largest market share in terms of revenue in Indian market. As per NOVONOUS estimates, Indian ghee market is expected to grow at a CAGR of 17% till 2020 and maintain its market share position. Curd and Yoghurt along with Paneer (cottage cheese) in Indian dairy market controls the third largest market share in terms of revenue in Indian market.
- 4) Indian curd and yoghurt market is expected to grow at a CAGR of 12% while paneer market is expected to grow at a CAGR of 18% till 2020.
- 5) Ice cream which currently controls a minor market share in Indian dairy market is expected to grow at the highest industry CAGR of 26% till 2020 due to rising consumption.
- 6) Food processing industry provides plenty of direct and indirect employment opportunities, because it acts as bridge between Agriculture and Manufacturing
- 7) As per ASI survey in 2010, Food processing industry generated highest employment among all industry. Giving employment to almost 17 lakh people.
- 8) 12th Five year plan (FYP) wants to create more than 50 million jobs. Out of that, Food processing sector is to create one million jobs.

Key Indicator for Golden Opportunity for New Entrepreneurship Venture in Indian Agro based Dairy and Food Industry

- 1) India exported US\$ 2.16 million worth of whole milk and the overall exported quantity was 559.95 thousand Kgs in FY 2014-15. Nigeria, Bhutan, Bangladesh, Mauritius and Brunei were the top five nations importing Indian whole milk in 2014-15.
- 2) India imported US\$ 0.01 million worth of whole milk and the overall imported quantity was 5.28 thousand Kgs in FY 2014-15. France was the only nation exporting whole milk to India in 2014-15.
- 3) India exported US\$ 34.35 million worth of ghee and the overall exported quantity was 5707.64 thousand Kgs in FY 2014-15. UAE, Oman, Australia, Singapore and Saudi Arab were the top five nations importing Indian ghee in 2014-15.
- 4) India imported US\$ 3.66 million worth of ghee and the overall imported quantity was 1308.40 thousand Kgs in FY 2014-15. Uganda, Nepal, Bahrain, Rwanda and Singapore were the top five nations exporting ghee to India in 2014-15.
- 5) India exported US\$ 6.54 million worth of fresh cheese and the overall exported quantity was 1745.54 thousand Kgs in FY 2014-15. UAE, Saudi Arab, Qatar, Kuwait and Oman were the top five nations importing Indian fresh cheese in 2014-15.
- 6) India imported US\$ 0.27 million worth of fresh cheese and the overall imported quantity was 34.98 thousand Kgs in FY 2014-15. Italy, Switzerland, Germany, Denmark and United Kingdom were the top five nations exporting fresh cheese to India in 2014-15.
- 7) India exported US\$ 13.31 million worth of butter and the overall exported quantity was 2890.56 thousand Kgs in FY 2014-15. Morocco, UAE, Nepal, Oman and USA were the top five nations importing Indian butter in 2014-15.
- 8) India imported US\$ 0.58 million worth of butter and the overall imported quantity was 87.64 thousand Kgs in FY 2014-15. France, New Zealand, Denmark, Belgium and United Kingdom were the top five nations exporting butter to India in 2014-15.

Government Support and Help

The dairy sector in India has traditionally been highly regulated. The government projects and programmes in place for enhancing dairy development include subsidies for developing infrastructure for milk processing and testing. The Clean Milk Production Programme is a centrally sponsored scheme that is being implemented by the State Department of Animal Husbandry, Dairying and Fisheries with several objectives as well as the no. of institutes are started by government for food industry which providing all kinds of help and training.

- 1) The creation and strengthening of necessary infrastructure for the production of quality milk and milk products at the farm level up to the points of consumption;
- 2) Improvement of milking techniques; and
- 3) Training to enhance awareness on the importance of hygienic milk production.
- 4) Rural development initiatives support dairying, such as through the District Rural Development Agency and women's self-help groups.
- 5) NABARD , MCED institutions are helping.
- 6) The National Institute of Food Technology Entrepreneurship and Management

Conclusion:

Dairy and Food processing industry is a fastest growing and creating larger opportunity of business in Maharashtra as well as in India. There is need to understand the new ways of business as well as farming. Farmers find it suitable to start an business in Dairy , it gives them advantages of becoming independent and growing use of technology make their path easier and they can contribute to their and countries Economic development. India is the world's highest milk producer and all set to become the world's largest food factory. In celebration, Indian Dairy sector is now ready to invite NRIs and Foreign investors to find this country a place for the mammoth investment projects. Be it investors, researchers, entrepreneurs, or the merely curious – Indian Dairy sector has something for everyone.

References:

- 1) Entrepreneurship-Vasant Desai
- 2) Marketing Management:Philip Kotler
- 3) Entrepreneurship-shukla
- 4) www.investopedia.com
- 5) www.businessdictionary.com
- 6) www.marketresearchreports.com
- 7) www.asvitmilk.com
- 8) www.indiandairy.com



ISSN NO-2231-4687
IMPACT FACTOR-1.52

INTERNATIONAL JOURNAL OF MANAGEMENT & ECONOMICS

Department of Commerce

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University,
Aurangabad.

&

Maharashtra State Commerce Association

27th National Conference
On

Innovative Trends in Entrepreneurship and Economic Development

Vol. V , No. 16
30-31 January 2016



2016

CHIEF EDITOR

Professor. Sarwade W.k.

Head, Department Of Commerce
Ex.Dean, Faculty Of Management Science
Ex. Director, Department Of Management Science
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University
Aurangabad-431002 (Maharashtra)

EDITORIAL BOARD

Prof. Natalya (Natasha)

Dean and Director, Business Programme
Cameron School of Business,
Delcore University of ST. Thomas Houston, Texas

Prof. B. Ramesh

Former Dean, faculty of commerce University of Goa
President, all India commerce conference
(2010-11) India

Prof. S.S. Thrikawala

Dept. of commerce and Financial Mgt.
University of Kelaniya, Sri Lanka.

Prof. Chun Hua Susan Lin

Dean, Faculty of Business Management,
Taiwan Shoufu University, Taiwan

Prof. Akbar Salehi

Tarbiyat Moallem University, Thehrar Iran

Prof. Frantisek Bozek

University of Defense
Kounicova, Czech Republic

Dr. Ravichandran Moorthy

Professor of Commerce and Management
National University, Malaysia

Prof. Ferdous Farazi

Binti School of Asia-Pacific studies
Waseda University, Tokyo

Prof. M.W. Wikramarachchi

Former Dean, Faculty of Commerce and finance
Sri Jaivardhanapura University Sri Lanka

Prof. Vernekar Sachin

Director, Institute of Business Management and
Research, Bharti Vidyapeeth University, Pune

Prof. Seperantasofia Milancouici

Western University Vasilegoldisarad Romania

Dr. Syed Azharuddin

Professor, Department of Commerce
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University
Aurangabad-431002 Maharashtra-India

Conference Special Issue January – 2016 Editorial Board

Professor W.K. Sarwade

Head Dept of Commerce

Professor Syed Azharuddin

Dept of Commerce

Professor M.A. Lokhande

Dept of Commerce

Prin Dr G Y Shitole

SNDT Women's University, Pune



ISSN NO-2231-4687
IMPACT FACTOR-1.52

INTERNATIONAL JOURNAL OF MANAGEMENT & ECONOMICS

Maharashtra State Commerce Association
& Department of Commerce,
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.

Vol. V , No. 16
30-31 January 2016

**27th National Conference On
Innovative Trends in Entrepreneurship and
Economic Development**

Chief Editor

Professor. Sarwade W.K.
Head, Department Of Commerce
Ex. Dean, Faculty Of Management Science
Ex. Director, Department Of Management Science
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University
Aurangabad-431002-Maharashtra

INTERNATIONAL JOURNAL OF MANAGEMENT AND ECONOMICS

The International Journal of Management and Economics is the quarterly publication with ISSN (2231-4687) impact factor-1.52 to disseminate knowledge and information in the area of management practices, trade, commerce, business and information technology. The journal focuses on theoretical, applied and interdisciplinary research in various fields. It provides a forum for debate and deliberations of academics, industrialists and practitioners and also promotes the paradigm of flexible systems management globally, so as to bring in more openness and adaptiveness in the areas of management.

We invite original empirical articles from the academia, researchers, scholars and practitioners for forthcoming issue. We welcome papers from the different areas of management such as Marketing, Finance, Production and Operations, Logistics, Human Resource, Information Technology etc. Analyzing the interrelationships between these areas, contributing to the pool of thoughts and providing insights to the researchers shall be the prime objectives of the journal.

We request you to join us with your scholarly contributions in the form of research articles, theoretical reviews, case studies etc.

Guidelines for the Authors

1. Manuscript should not exceed 7 Pages (A4 Size Pages, Typed Single Space, Font size 12, and Font type – Times New Roman)
2. Language Used – English
3. Title of the paper should be followed by Name, e-mail and affiliation(s) of Author(s).
4. Tables and Figures
To the extent possible, tables and figures should appear in the document near/after where they are referenced in the text. In no case should tables or figures be in separate document or file.
5. An abstract of not more than 150 words is required.
6. The paper should start with an introduction and end with a conclusion summarizing the finding of the paper.
7. Reference:
It is the author's obligation to provide complete references with the necessary information. References should appear in the text as "Banerjee Bhabatosh (2005), Finance Policy and Management Accounting, 7th Edition, Prentice Hall, India."
8. Papers are accepted for publication on the understanding that they contain original unpublished work, not submitted for publication anywhere else.
9. Papers are processed through a blind referral system by experts in the subject areas. To ensure anonymity, the writer's name, designation and other details should not be repeated anywhere.

The annual subscription for the Journal is Rs. 2500/- (4 Issues) and Rs. 500/- will be extra towards postage charges for outstation subscribers.

CONTENTS

Sr. No.	Author	Title of the Research Paper	Page No.
1	Prin. Dr. G. Y shitoie Pune	Financial Inclusion of Women through Self Help Groups in Thauc District of Maharashtra State	001 - 009
2.	Dr. Mrs. Vijaya Jacqueline	Value Of Creativity And Innovation In Entrepreneurship	010 - 016
3	Deshpande Dhanashree Sham. Assistant Professor, Commerce Department, Suit. Mathubai Garware Kanya Mahavidyalaya, Sangli	Innovative Trends in Entrepreneurship and Economic Development	017 - 021
4	Jaishree Kirankumar Kavathekar, Associate Professor & Head, Dept. of Accountancy, Dr. S.D.Devsey Arts & Commerce & Science College, Wada, Dist. Palghar	Entrepreneurship and Economic Development of Scheduled Tribes	022 - 025
5	Dr. B.N. Kamble Head dept of Commerce, H.N College Sholapur	A study of growth and scenario entrepreneurship in India	026 - 029
6	Dr. Arun H. Gaikwad Asso. Professor and Vice principal Sangamner College,Sangamner Ahmednagar	Challenges before women entrepreneurs in the changing economic scenario	030 - 033
7	Dr. Mudhavi Kuikarni Vice Principal and Associate Professor of Commerce SNDT Arts and Commerce College for Women, Karve Road, Pune	A Study of Role of Selected Social Entrepreneurs from Pune in Sustainable Development	034 - 040
8	Dr. Sunil G. Naranje Janata Mahavidyalaya, Chandrapur	Entrepreneurship as an economic force in Rural Development	041 - 047
9	Dr. Alpa Upadliyay	Skill Development through Yoga and Entrepreneurship	048 - 051
10	Dr. D. M. Khandare Professor & Director School of Commerce & Management Science SRTM University, Nanded Dr. MD Aslam MD Hussain SRTM University, Nanded Ratnaparkhe Gajanan D.	Problems & Remedies of Farmers Suicide in Marathwada Region	052 - 061

	Research Assistant School of Commerce & Management Science SRTM University, Nanded		
11	Dr. Dalbir Singh Kaushik Head Dcpt. of Commerce , Haryana Neha Sharnia Punjab University, Haryana	Policies And Initiatives Of Financial Inclusion In India	062 - 077
12	Dr. Elizabeth Mathews H.O.D. , Department of Commerce, C. K. T. College, Raigad P. R Karulkar Assl. Professor, K. G. Uran College of Commerce and Arts	Challenges for Tourism Entrepreneurship in Two District of Konkan Region	078 - 082
13	Prof. Ramesh Agadi, Director Dept of Mgt Sci, Gulbarga University, Gulbarga Dr. Ganapali B Sinnnoor Gulbarga University, Gulbarga	Entrepreneurial Opportunities and Challenges in Tourism Industry: A Study of HyderabadKarnataka Region	083 - 090
14	Dr. Gopal V. Helonde S.S.N.J. Mahavidyaiaaya, Deoli, Disl. Ward ha	Tragedy Of Farmer's Suicide In Vidarbha	091 - 094
15	Dr. Ram Sable Rupali Jain Vinav Sable	Satisfaction Of Small Scale Jain Community Entrepreneur OnNew Economic Business Environment In India	095 - 104
16	Dr. Sanjay Ram Raje	Financial Inclusion Through Jan Dhan Yojana :Issues And Challenges	105 - 116
17	Meenu Tiwari Asst. Prof., ICEEM Waluj, A'bad	DMIC; Make in India turning vision into reality	117 - 126
18	Dr. A. M. Gurav Department of Commerce & Management, Shivaji University, Kolhapur Entrepreneurship Development (RED)	Cooperative Sugar Industry in Maharashtra and Uttar Pradesh: A Sustainable Tool for Rural	127 - 137
19	Prof Khandare MP Vivekanand Arts, S.D. Commerce and Science College, Aurangabad	Role of Women Entrepreneurs in Economic Development: Problem & Remedies.	138 - 147
	Dr. Neeta Deshpande, Abasaheb Garware Institute of	A Study of Women Entrepreneurship in India	148 - 153

21	Dr. Sarika B. Dayma Shrikant Govindlal Pandya. Assistant Professors, Dayanand College of Commerce, Latur	Entrepreneurship Development- A Case Study of Shri Mahila Griha Udhyog Lijjat Papad	154 - 159
22	Dr. Ramesh Kohad S.S.N.J. Mahavidyaiaya, Deoli, Wardha	Growing Role Of Women Entrepreneur In India	160 - 164
23	Dr. Kunal S. Badade Head, Dept of Commerce, Dayananad Commerce College, Latur NLshikant C. Warbhawan Asst. Professor, School of Management Sciences, S.R.T.M. U. Sub centre, Latur	A Comparative Study of Corporate Social Responsibility in Nationalized and Private Banks of Eatur District	165 - 178
24	Dr. S. D. Talekar Professor & Head, Dept.of comm. Lalbahadur Shastri College, Partur, Hist: Jalna (MS.)	Women Entrepreneurship as a Key Driver in National Development	179 - 184
25	Dr. Shriram S. Solanke Head & Associate Profesor., Majalgaon Mahavidyalaya Dinesh B. Dhaneshwar Research Student, SRTM, Nanded	Farmers' suicide in Maharashtra - How it can be prevented	185 - 190
26	Prin. Dr. H.G. Vidhate Anandrao Dhonde Alias Babaji College Kada BEED. Ujgare Manisha Bhimrao Research Scholar, Dept. of Mgt. Science, Dr. BAMU Aurangabad	Importance of Security Aspect Parameters; A Case Study of Selected G2C e-Governance Web Portals from the State of Maharashtra	191 - 199
27	Dr. Manik S. Waglmiare Head, Department of Commerce Shri. A. B. College Deogaon(R)	Social Entrepreneurship: Opportunities and Challenges	200 - 205
28	Sarwade Chetan W. S.B. Arts and Commerce College Aurangabad	Mechanism of E-business model: An Overview	206 - 213
29	Chitra K. Deshpande Asst Prof, MOM Inst. Of Mgt Dr. Zartaj Kasmi Associate Professor, MTM College	Study of Financial Inclusion in India and Future vision	214 - 221

30	Rupali Vilas Jadhav Dimple Riken Gutka	Women Entrepreneurship and Sustainable Development in Thane District	222 - 23
31	Dr Mohammed Abdul Raffey Assistant Director, Academic Staff College, Dr. BAMU Aurangabad, Dr. Ramble B. P. Head, Dept. of Commerce, Elphinstone College, Fort Mumbai	A study of Innovation and Entrepreneurship and Small Business (A Global View)	232 - 236
32	Dr.Dayma Brijmohan, Head Dept of Busi. ECO. Lalur Kakade Kiran Nanded	Making Women Entrepreneur; Developing sustainable Entrepreneurship in Marathwada Region through Renewable Energy	237 - 245
33	Dr Shivprasad V Dongare Mahatma Basweshwar College Latur	A study of Farmers Suicides: Causes and Remedies	246 - 249
34	Dr Memon Ubed Yusuf Asst Professor, dept of Commerce, Sir Sayyed, College, Aurangabad	Technological Entrepreneurship : ERP Marketplace and Marketplace Dynamics	250 - 259
35	Dr.S.S.Jadhav Assistant Professor L.B.S. College Dharmabadd Dhammapal S. Jadhav Research Student S.R.T.M.Univrsity Nanded	New Trends In Service Marketing & Economic Development In India	260 - 264
36	Dr.Brijmohan R. Dayma.Latur Dr.Shilpa V. Bidkar, Latur	Indian Travel and tourism sector: Potential & Opportunities for sustainable growth	265 - 269
37	Dr. UV Panthal Deogiri college	Enterpreneursriip Stratagies In Emerging Economics	270 - 276
38	Dr. Vinod Rariram Bansile Asst. Prof, Dept of Com, Slid Vyaiikalesh Arls & Commerce College, Ueulgoanraja, Buldhana.	Entrepreneurship in the SME Sector	277 - 281
39	Archana M.Pandagale Research Scholar, OR HAMU Dr. A.P.Borade V.P. College, Vaijapur	DMIC- Opportunities and challenges in Maharashtra	282 - 287
40	Pranita M Shroff Rajarshri shahu Inst of Management	Entrepreneurial learning from failure	288 - 293

Social entrepreneurship: Opportunities and Challenges

Author

Dr. Manik S. Waghmare

Research Guide & Head, Department of Commerce

Shri. A. B. College Deogaon(R). Tq. Kannad, Dist. Aurangabad

Abstract

Social entrepreneurs are individuals with innovative solutions to society's most pressing social problems. They are ambitious and persistent, tackling major social issues and offering new ideas for wide-scale change. Rather than leaving societal needs to the government or business sectors, social entrepreneurs find what is not working and solve the problem by changing the system, spreading the solution, and persuading entire societies to move in different directions. Social entrepreneurs often seem to be possessed by their ideas, committing their lives to changing the direction of their field. They are visionaries, but also realists, and are ultimately concerned with the practical implementation of their vision above all else. Social entrepreneurs present user-friendly, understandable, and ethical ideas that engage widespread support in order to maximize the number of citizens that will stand up, seize their idea, and implement it. Leading social entrepreneurs are mass recruiters of local change makers—role models proving that citizens who channel their ideas into action can do almost anything.

Keywords: Entrepreneur, Society, Profit, Social Problems

Introduction

Social entrepreneurship is the attempt to draw upon business techniques to find solutions to social problems. This concept may be applied to a variety of organizations with different sizes, aims, and beliefs. Conventional entrepreneurs typically measure performance in profit and return, but social entrepreneurs also take into account a positive return to society. Social entrepreneurship typically attempts to further broad social, cultural, and environmental goals often associated with the voluntary sector. At times, profit also may be a consideration for certain companies or other social enterprises.

Objective of the Study:

- i. To Understand Concept of Social Entrepreneurship
- ii. To Know Importance of Social Entrepreneurship
- iii. To Know the role of Social Entrepreneur in Upliftment of Backward section of Society
- iv. Fulfillment of Different demand of Society and creating balance among all sections of society.

Research Methodology:

In the present research work data is contributed by using Secondary sources. Various books, journals & Internet are used to collect secondary data.

1.1:Concept of Social entrepreneurship:

There are continuing arguments over precisely who counts as a social entrepreneur. Thus far, there has been no consensus on the definition of social entrepreneurship, so many different sorts of fields and disciplines are associated with social entrepreneurship. Philanthropists, social activists, environmentalists, and other socially oriented practitioners are referred to as social entrepreneurs. The fact that social entrepreneur's fall under various career types is part of the reason it is difficult to determine who is truly a social entrepreneur. David Bornstein has even used the term "social innovator" interchangeably with social entrepreneur, due to the creative, non-traditional strategies that many social entrepreneurs use. For a clearer definition of what social entrepreneurship entails, it is necessary to set the function of social entrepreneurship apart from other socially oriented activities and identify the boundaries within which social entrepreneurs operate .Some have advocated restricting the term to founders of organizations that primarily rely on earned income-meaning income earned directly from paying consumers. Others have extended this to include contracted work for public authorities, while still others include grants and donations.

- A social entrepreneur is a path breaker with a powerful new idea who combines visionary and real-world problem-solving creativity, has a strong ethical fiber, and is totally possessed by his or her vision for change.
- Social entrepreneurs are people who realize where there is an opportunity to satisfy some unmet need that the state welfare system will not or cannot meet, and who gather together the necessary resources (generally people, often volunteers, money, and premises) and use these to "make a difference".
- A social entrepreneur is someone who takes reasonable risk on behalf of the people their organization serves.
- Social entrepreneurship encompasses the activities and processes undertaken to discover, define, and exploit opportunities in order to enhance social wealth by creating new ventures or managing existing organizations in an innovative manner.

1.2:Key features of Social Entrepreneuership:

- Social entrepreneurship in modern society offers an altruistic form of entrepreneurship that focuses on the benefits that society may reap Simply put,
- Entrepreneurship becomes a social endeavor when it transforms social capital in a way that affects society positively.
- Success of social entrepreneurship depends on many factors related to social impact that

- traditional corporate businesses do not prioritize.
- Social entrepreneurs recognize immediate social problems, but also seek to understand the broader context of an issue that crosses disciplines, fields, and theories.
 - Social entrepreneurs to develop innovative solutions and mobilize available resources to affect the greater global society.
 - Unlike traditional corporate businesses, social entrepreneurship ventures focus on maximizing gains in social satisfaction, rather than maximizing profit gains.
 - Both private and public agencies worldwide have had billion-dollar initiatives to empower deprived communities and individuals Such support from organizations in society, such as government-aid agencies or private firms, may catalyze innovative ideas to reach a larger audience.
 - Social Entrepreneur is the admissible factor for Society for improving conditions of economic backward class and for creating awareness about different subject.
 - Social Entrepreneurship is beneficial for Poverty alleviation
 - Social Entrepreneurship will be helpful for developing rural economy

1.3:Qualities of Social Entrepreneurs:

- Achieves large scale, systemic and sustainable social change through a new invention, a different approach, a more rigorous application of known technologies or strategies, or a combination of these.
- Focuses first and foremost on the social and/or ecological value creation and tries to optimize the financial value creation.
- Innovates by finding a new product, a new service, or a new approach to a social problem.
- Continuously refines and adapts approach in response to feedback.
- Combines the characteristics represented by Richard Branson and Mother Teresa.
- An unwavering belief in the innate capacity of all people to contribute meaningfully to economic and social development
- A driving passion to make that happen.
- A practical but innovative stance to a social problem, often using market principles and forces, coupled with dogged determination that allows them to break away from constraints imposed by ideology or field of discipline, and pushes them to take risks that others wouldn't dare.
- A zeal to measure and monitor their impact. Entrepreneurs have high standards, particularly in relation to their own organization's efforts and in response to the communities with which they engage. Data, both quantitative and qualitative, are their key tools, guiding continuous feedback and improvement.
- A healthy impatience. Social Entrepreneurs cannot sit back and wait for change to happen – they are

the change drivers.

1.4: About organizational models

- **Leveraged non-profit ventures:**

The entrepreneur sets up a non-profit organization to drive the adoption of an innovation that addresses a market or government failure. In doing so, the entrepreneur engages a cross section of society, including private and public organizations, to drive forward the innovation through a multiplier effect. Leveraged non-profit ventures continuously depend on outside philanthropic funding, but their longer term sustainability is often enhanced given that the partners have a vested interest in the continuation of the venture.

- **Hybrid non-profit ventures:**

The entrepreneur sets up a non-profit organization but the model includes some degree of cost-recovery through the sale of goods and services to a cross section of institutions, public and private, as well as to target population groups. Often, the entrepreneur sets up several legal entities to accommodate the earning of an income and the charitable expenditures in an optimal structure. To be able to sustain the transformation activities in full and address the needs of clients, who are often poor or marginalized from society, the entrepreneur must mobilize other sources of funding from the public and/or philanthropic sectors. Such funds can be in the form of grants or loans, and even quasi-equity.

- **Social business ventures:**

The entrepreneur sets up a for-profit entity or business to provide a social or ecological product or service. While profits are ideally generated, the main aim is not to maximize financial returns for shareholders but to grow the social venture and reach more people in need. Wealth accumulation is not a priority and profits are reinvested in the enterprise to fund expansion. The entrepreneur of a social business venture seeks investors who are interested in combining financial and social returns on their investments.

1.5: Why India needs social entrepreneurship to succeed.

India is at the crossroads. After a decade of high GDP growth rates of around 7-9 per cent, the 2008 global recession poured cold water on the Indian growth story, in 2012-13, growth is expected to be a tepid 5 per cent. The growth post-liberalization, benefited the rich, (the increase in number of Indian millionaires was second only to China), and a newly created middle class. What of the rest? Most of India or 400 odd million people live on less than \$1 a day. In the latest 2012 human development index (HDI) report, India languishes at 136, out of 187 countries.

Social entrepreneurship could also help India avoid the mistake China made with its growth. The Red Dragon's phenomenal economic growth has come at the cost of air, water and soil pollution. Anger over pollution has replaced land disputes to become the chief cause for social unrest in China. Socents with their inherent vision of sustainable growth that is environmentally friendly are well equipped to balance growth with environmental concerns.

Growth in the next 100 years cannot follow the road that capitalism took us in the last century, the earth's finite resources are already depleted, and the environment already reeling from over-exploitation. There's already talk of social capitalism and creative capitalism in the US and Europe. India need not be far behind, and design its own version of capitalism, one that uses social entrepreneurship in abundance

1.6: Historical Examples of Leading Social Entrepreneurs:

- **Susan B. Anthony (U.S.):** Fought for Women's Rights in the United States, including the right to control property and helped spearhead adoption of the 19th amendment.
- **Vinoba Bhave (India):** Founder and leader of the Land Gift Movement, he caused the redistribution of more than 7,000,000 acres of land to aid India's untouchables and landless.
- **Dr. Maria Montessori (Italy):** Developed the Montessori approach to early childhood education.
- **Florence Nightingale (U.K.):** Founder of modern nursing, she established the first school for nurses and fought to improve hospital conditions.
- **John Muir (U.S.):** Naturalist and conservationist, he established the National Park System and helped found The Sierra Club.
- **Jean Monnet (France):** Responsible for the reconstruction of the French economy following World War II, including the establishment of the European Coal and Steel Community (ECSC). The ECSC and the European Common Market were direct precursors of the European Union.
- **Bangladeshi Muhammad Yunus.** Yunus was the founder of Grameen Bank, which pioneered the concept of microcredit for supporting innovators in multiple developing countries in Asia, Africa, and Latin America. He received a Nobel Peace Prize for his efforts and also inspired programs such as the Infos lady Social Entrepreneurship Programme

Conclusion

Social entrepreneurship has recently emerged as a field of academic inquiry, but the lack of a common definition of social entrepreneur impedes research in this field. Social entrepreneurship has flourished significantly at the practical level, but not at the theoretical level. Social entrepreneurs play the role of change agents in the social sector by:

- Adopting a mission to create and sustain social value
- Recognizing and relentlessly pursuing new opportunities to serve that mission;

- Engaging in a process of continuous innovation, adaptation, and learning;
- Acting boldly without being limited by resources currently in hand;
- Exhibiting a heightened sense of accountability to the constituencies served for the outcomes created. Sustainable environmental development
- Poverty reduction Education Medical and health care Social deprivation and isolation Sanitation Infrastructure and building

References:

- Mission based Management, Peter C. Brinckerhoff, John Wiley & Sons, 22-Oct-2009
- **Social Entrepreneurship, 1st Edition, Susan Davis David Dornstein, Oxford University Press**
- Social Entrepreneurship: A Reference Guide Paperback – Mar 2004 by Warren Tranquada (Author), John Pepin (Author), Pepin, Tranquada & Associates, LLC
- **How to Change the World (Paperback), David Bornstein Oxford Univ. Press Released: 2007**
- www.schwabfound.org/content/what-social-entrepreneur
- www.ashoka.org/social_entrepreneur
- en.wikipedia.org/wiki/Social_entrepreneurship
- Shaker A. Zahra, Strategic Entrepreneurship Journal Volume 2, Issue 2, pages 117 131, June 2008